Springboard ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS PRELIMS

2024 - 2025

राजस्थान कला एवं संस्कृति

प्रारम्भिक परीक्षा

राजवीर सर

पाठ्यक्रम

✓ राजस्थान की वास्तु परम्परा– मंदिर, किले, महल एवं मानव निर्मित जलीय संरचनाएँ; चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प।

✓ प्रदर्शन कला : शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य; लोक संगीत एवं वाद्य यंत्र, लोक नृत्य एवं नाट्य।

✓ भाषा एवं साहित्य : राजस्थानी भाषा की बोलियाँ। राजस्थानी भाषा का साहित्य एवं लोक साहित्य।

✓ धार्मिक जीवन : धार्मिक समुदाय, राजस्थान में संत एवं सम्प्रदाय। राजस्थान के लोक देवी–देवता।

✓ राजस्थान में सामाजिक जीवन : मेले एवं त्योहार, सामाजिक रीति–रिवाज तथा परम्पराये; वेशभूषा एवं आभूषण।

Index

1.	मेलें एवं त्योहार	1-12
2.	राजस्थान के लोक देवता	13-20
3.	संत एवं सम्प्रदाय	21-39
4.	लोक देवीयाँ	40-48
5.	लोक गीत	49-54
6.	लोक नृत्य	55-61
7.	राजस्थान की जनजातियाँ	62-67
8.	लोक नाट्य	68-73
9.	किले	74-86
10.	छतरियाँ	87
11.	महल एवं हवेलियाँ	88-90
12.	चित्रकला	91-106
13.	हस्तकला	107-112
14.	साहित्य	113-123
15.	बोलियाँ	124-126
16.	लोक वाद्य यंत्र	127-138
17.	आभूषण	139-145
18.	वेशभूषा एवं पहनावा	146-149
19.	प्रथाएं एवं रीति–रिवाज	150-154
20.	मंदिर, मस्जिद, एवं मेलें	155-165

मेलें एवं त्योहार

- हिन्दू त्योहार तथा मेलें विक्रमी कैलेंडर के अनुसार मनाये जाते है।
- यह चंद्रमा आधारित कैलेंडर है।
- सूर्य आधारित कैलेंडर से बराबर करने के लिए प्रत्येक तीसरे वर्ष विक्रमी सम्वत् में एक अतिरिक्त माह जोड़ दिया जाता है जिसे अधिक मास कहते है।
- **हिन्दू कैलेंडर के अनुसार बारह माह का विवरणः–**

चैत्र	आश्विन
वैशाख	कार्तिक
ज्येष्ठ	मार्गशीर्ष
आषाढ़	पौष
श्रावण	माघ
भाद्रपद	फाल्गुन

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
1–15	1–15
अमावस्या	पूर्णिमा
	चैत्र शुक्ल एकम् को नववर्ष मनाया जाता है।

पौष–माघ	जनवरी
माघ–फाल्गुन	फरवरी
फाल्गुन–चैत्र	मार्च
चैत्र–वैशाख	अप्रैल
वैशाख–ज्येष्ठ	मई
ज्येष्ठ–आषाढ़	जून
आषाढ़–श्रावण	जुलाई
श्रावण–भाद्रपद	अगस्त
भाद्रपद–आश्विन	सितम्बर
आश्विन–कार्तिक	अक्टूबर
कार्तिक–मार्गशीर्ष	नवम्बर
मार्गशीर्ष–पौष	दिसम्बर

- प्रथम त्योहार छोटी तीज (श्रावण) तथा अंतिम त्योहार गणगौर (चैत्र) माना जाता है।
- छप्पनियाँ अकाल 1899 ई. – 1956 विक्रमी सम्वत्।

तीज त्योहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर।

श्रावण

कृष्ण पक्ष

पंचमी – नाग पंचमी

नवमी – निडरी नवमी
(नेवले की पूजा)

अमावस्या– हरियाली अमावस्या

मेले :–

1. कल्पवृक्ष मेला – मांगलियावास (ब्यावर)
2. फतेहसागर झील मेला – उदयपुर
3. बुढ्ढ़ा जोहड़ मेला – श्रीगंगानगर

शुक्ल पक्ष

तृतीया – छोटी तीज

- जयपुर में छोटी तीज की सवारी प्रसिद्ध है
- यह पति पत्नी के प्रेम का त्योहार है।
- यह प्रकृति प्रेम का त्योहार है।
- इसमें महिलाएँ ''लहरिया'' ओढ़नी ओढ़ती है।
- सिंजारा : नवविवाहिता के लिए ससुराल पक्ष से आने वाले उपहार।

पूर्णिमा– रक्षाबन्धन (नारियल पूर्णिमा)
इस दिन ''श्रवण कुमार'' की पूजा की जाती है।

भाद्रपद (सबसे ज्यादा त्योहार)

कृष्ण पक्ष

तृतीया – बड़ी तीज
बूढ़ी तीज
सातुड़ी तीज
कजली तीज

- बूँदी में बड़ी तीज की सवारी प्रसिद्ध है।

षष्ठी (छठ):– ऊब छठ (लड़की पूरे दिन खड़ी रहती है अच्छे वर के लिए व्रत करती है।)
हल छठ (बलराम जयन्ती)

अष्टमी :– कृष्ण जन्माष्टमी

नवमी :– गोगानवमी (इस दिन किसान 'हल' को 9 गाँठ वाली राखी बाँधता है।)

मेले :– 1. ददरेवा (चुरू)
2. गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)

द्वादशी / बारस :– बछबारस (इस दिन साबूत अनाज का प्रयोग होता है, चाकू का प्रयोग नहीं होता)

अमावस्या :– सती अमावस्या (झुन्झूनू में रानीसती मेला लगता है।)
रानीसती का वास्तविक नाम नारायणी देवी था। इनके पति का नाम तनधन दास अग्रवाल था। इन्हे दादीसती भी कहा जाता है।

शुक्ल पक्ष

द्वितीया– ''बाबे री बीज'' (रामदेव जयन्ती)

- रूणीचा (रामदेवरा) में रामदेवजी का मेला लगता है जो द्वितीया से लेकर एकादशी तक चलता है।
- इस मेले को ''मारवाड़ का कुम्भ'' कहा जाता
- बाबू महाराज का मेला – धौलपुर।

चतुर्थी :– गणेश चतुर्थी , शिव चतुर्थी, कलंक चतुर्थी, चतरा चौथ।

मेले :– 1. त्रिनेत्र गणेश मेला – रणथम्भौर
2. चुंधी तीर्थ मेला – जैसलमेर

पंचमी :– ऋषि पंचमी (सप्त ऋषि की पूजा की जाती है।) 'माहेश्वरी समाज का रक्षाबन्धन'।

मेले :–

1. भोजन थाली मेला– कामां (डीग)
2. हरिरामजी का मेला–झोरड़ा (नागौर)

अष्टमी :– राधाष्टमी

- सलेमाबाद (अजमेर) में निम्बार्क सम्प्रदाय का मेला होता है। (इस सम्प्रदाय के लोग राधा को कृष्ण की पत्नी मानते है।)

दशमी :– तेजादशमी (पशु मेला–परबतसर)

एकादशी :– जलझूलनी / देवझूलनी एकादशी (इस दिन भगवान कृष्ण को नहलाया जाता है)

चतुर्दशी:– अनन्त चतुर्दशी (इस दिन गणेश विसर्जन किया जाता है।)

पूर्णिमा :– श्राद्ध प्रारम्भ

आश्विन

कृष्ण पक्ष

श्राद्ध पक्ष (16 दिन) :– (कोई मंगल काम नहीं होता है 16 दिन)

- साँझी की पूजा की जाती है।
  गोबर और मिट्टी की गोल आकृति की पूजा की जाती है।
- उदयपुर के 'मत्स्येन्द्र नाथ मन्दिर' को 'साँझी का मन्दिर' कहा जाता है।
- नाथद्वारा में केले की साँझी बनाई जाती है।
- श्राद्ध पक्ष के अन्तिम दिन ''थम्बुडा व्रत '' किया जाता है।

शुक्ल पक्ष

एकम् :– शरद नवरात्र प्रारम्भ
अष्टमी :– दुर्गाष्टमी / होमाष्टमी
दशमी :– विजयादशमी

- कोटा (राज.), महाराव उम्मेद सिंह के काल से प्रसिद्ध हुआ। इस दिन टीका दौड़ करवाई जाती है। मैसूर (कर्नाटक) के दशहरे प्रसिद्ध है।
- हथियारों की पूजा की जाती है।
- खेजड़ी वृक्ष की पूजा की जाती है।
  5 जून 1988 को खेजड़ी पर डाक टिकट जारी हुआ था।
- इस दिन ''लीलटांस पक्षी'' को देखना शुभ माना जाता है। (कन्हैयालाल सेठिया ने लीलटांस नामक कविता लिखी।)

पूर्णिमा :– (शरद् पूर्णिमा, रास पूर्णिमा)
मारवाड़ महोत्सव / मांड महोत्सव – जोधपुर
मीरा महोत्सव :– चित्तौड़गढ़

कार्तिक

कृष्ण पक्ष

चतुर्थी :– करवा चौथ

अष्टमी :– अहोई अष्टमी (महिलाएँ सन्तान की लम्बी उम्र की कामना के लिए व्रत रखती है।)

त्रयोदशी :– धनतेरस (धन्वंतरि जयन्ती)

चतुदर्शी :– रूप चतुर्दशी

अमावस्या :–दीपावली

(भगवान महावीर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस)

शुक्ल पक्ष

एकम् :– गोवर्धन पूजा।

- नाथद्वारा में इस दिन अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है, तथा भील जनजाति बड़ी संख्या में भाग लेती है।

द्वितीया :– भैया दूज/यम द्वितीया

अष्टमी :– गोपाष्टमी

नवमी :– आंवला नवमी/अक्षय नवमी

एकादशी :– देवउठनी एकादशी/प्रबोधिनी एकादशी/तुलसी एकादशी

इस दिन ''पुष्कर मेला'' प्रारम्भ होता है।

पूर्णिमा :– सत्यनारायण पूर्णिमा

इस दिन कार्तिक स्नान होता है।

मेले :– पुष्कर मेला – अजमेर

कोलायत मेला – बीकानेर

चन्द्रभागा मेला – झालरापाटन (झालावाड़)

रामेश्वरम मेला – सवाई माधोपुर

(चन्द्रभागा मेला में मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय–विक्रय किया जाता है) इसे हाड़ौती का 'सुरंगा मेला' मेला कहा जाता है।

(कोलायत में कपिल मुनि रहते थे जिन्होने 'सांख्य दर्शन' दिया था।)

रामेश्वरम में चम्बल बनास तथा सीप नदियों का त्रिवेणी संगम है।

माघ

कृष्ण पक्ष

चतुर्थी :– तिल चतुर्थी / संकटकरण चतुर्थी

मेला :– चौथ का बरवाड़ा – सवाई माधोपुर

एकादशी :– षट्तिला एकादशी (6 प्रकार के तिल का दान)

अमावस्या :– मौनी अमावस्या

- (इस दिन मौन रहा जाता है।)
- इस दिन ''कुंभ मेले का शाही स्नान'' होता है।

शुक्ल पक्ष

एकम् :– गुप्त नवरात्र प्रारम्भ

पंचमी:–बसन्त पंचमी (सरस्वती पूजा)

- इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।

पूर्णिमा :– ''नवाटापरा गाँव'' (डूँगरपुर) में बेणेश्वर मेला भरता है। इसकी स्थापना संत मावजी ने की थी।

- यहाँ पर ''सोम, माही जाखम' नदियाँ आकर मिलती है।
- यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है।
- बेणेश्वर को ''आदिवासियों का कुम्भ'' तथा ''वागड़ का पुष्कर'' कहा जाता है।
- जनक कुंवरि ने यहां विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया था।
- अजै तथा वजै –लक्ष्मीनारायण मंदिर निर्माण

फाल्गुन

कृष्ण पक्ष

त्रयोदशी :– महाशिवरात्रि

- शिवाड़ (सवाई माधोपुर) में ''घुश्मेश्वर महादेव जी का मेला'' भरता है।

शुक्ल पक्ष

द्वितीया :– फुलेरा दूज

पूर्णिमा :– होली

- भिनाय (केकड़ी) – कोड़ामार होली
- महावीर जी (करौली) – लट्ठमार होली
- बाड़मेर – पत्थर मार होली
- (भिनाय में राज. की पहली सहकारी समिति 1904 में बनाई गई थी।)
- इस दिन बाडमेर में इलोजी की बारात निकाली जाती है।
- इस दिन ब्यावर में ''बादशाह की सवारी'' निकाली जाती है।
- (इस दिन टोडरमल बादशाह होता है।)
- सांगोद (कोटा) – ''न्हाण की झाँकियाँ निकलती है।
- जयपुर में ''जन्म–मरण–परण'' का त्योहार होता है।

चैत्र

कृष्ण पक्ष

एकम :– धुलण्डी

अष्टमी :– शीतला अष्टमी (बास्योडा)

इस दिन चाकसु (जयपुर) में ''गधों का मेला'' लगता है। (शीतला माता का वाहन)

इसे 'बैलगाड़ी का मेला' भी कहते है।

एकादशी:– चितौड़ में होली के ग्यारह दिन बाद जौहर मेला भरता है।

शुक्ल पक्ष

एकम् :– विक्रमी नव वर्ष प्रारम्भ (हिन्दुओं का नव वर्ष) (अंग्रेजी कैलेण्डर से + 57 वर्ष आगे)

- बसन्त नवरात्रा प्रारम्भ

तृतीया :– गणगौर

- जयपुर व उदयपुर की गणगौर की सवारी प्रसिद्ध है।
- जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया है।
- यह सर्वाधिक लोकगीतों का त्योहार है।
- इस दिन लड़कियां अपने लिए अच्छे पति तथा अपने भाई के लिए अच्छी पत्नी के लिए व्रत करती है।
- जैसलमेर में ''चतुर्थी'' को केवल गवर की सवारी निकलती है।(बिना ईशर की गवर)

पंचमी:–नाथद्वारा में पंचमी को 'गुलाबी गणगौर या 'चुनड़ी गणगौर' मनाई जाती है।

अष्टमी :– अशोकाष्टमी

नवमी :– रामनवमी

पूर्णिमा :– हनुमान जयन्ती

मेले :– सालासार (चुरू), मेहन्दीपुर (दौसा)

वैशाख

कृष्ण पक्ष

तृतीया :– धींगा गवर (जोधपुर में धींगा गवर मेला होता है)

शुक्ल पक्ष

तृतीया :– अक्षय तृतीया (आखा तीज)

बीकानेर का स्थापना दिवस

इस दिन बीकानेर में पतंगें उड़ाई जाती।

पूर्णिमा :– बुद्ध पूर्णिमा,पीपल पूर्णिमा (भगवान बुद्ध को पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान मिला था।)

मेले :–

1. बाणगंगा मेला – कोटपुतली–बहरोड़
2. गोमतीसागर मेला – झालरापाटन (मालवी नस्ल के पशुओं का क्रय विक्रय)
3. नक्की झील मेला – माउन्ट आबू
4. मातृकुण्डिया मेला – चित्तौड़गढ़
5. गोतमेश्वर मेला – अरणोद (प्रतापगढ़)

   इस दिन 'पोकरण में' परमाणु परीक्षण किया गया था ।

ज्येष्ठ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
अमावस्या :– बड़मावस (वट वृक्ष अमावस्या,वट सावित्री व्रत)	**दशमी** :– गंगा दशमी कामां (डीग) में गंगा दशमी मेला होता है। **एकादशी** :– निर्जला एकादशी • इस दिन उदयपुर में पतंगें उड़ाई जाती है।

आषाढ़

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
	एकम् :– गुप्त नवरात्रा प्रारम्भ **नवमी** :– भड़ल्या नवमी **एकादशी** :– देवशयनी एकादशी **पूर्णिमा** :– गुरू पूर्णिमा / व्यास पूर्णिमा

मुस्लिम त्योहार

- पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म ''570 ई.'' में ''मक्का (सउदी अरब)'' में हुआ था। 622 ई. में मोहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना चले गये थे। इस घटना को ''हिजरत'' कहा जाता है तथा इस दिन से हिजरी संवत् (हिजरी कैलेण्डर) की शुरूआत होती है। यह चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर होता है (लेकिन अधिकमास नहीं जोड़ा जाता)। 632 ई. में मदीना में ही मोहम्मद साहब की मृत्यु हो गई थी।

मोहर्रम

- 10 तारीख :— मोहम्मद साहब के दोहिते ''हुसैन'' कर्बला(680 ई.) के मैदान (ईराक) में लड़ते हुए शहीद हो गये थे। इनकी याद में इस दिन ''ताजिये'' निकाले जाते है।
- 27 तारीख :— ''गलियाकोट (डूंगरपुर)'' में ''सैय्यद फखरूद्दीन का उर्स'' आयोजित होता है। यह ''दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय'' का प्रमुख स्थान है।

सफर

- 20 तारीख :— चेहल्लम—हुसैन की मृत्यु के चालीस दिन पूरे हुये थे।

रबी—उल—अव्वल

- **12 तारीख :—**
  ईद मिलादुल नबी —पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म।
  बारावफात —पैगम्बर मोहम्मद साहब की मृत्यु।

रबी उस सानी

- इस महीने में कोई त्योहार नहीं होता है।

जमात उल अव्वल

- इस महीने में कोई त्योहार नहीं होता है।

जमात उस सानी

- 8 तारीख :— फारस (ईरान) के 'संजरी गाँव' में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का जन्म हुआ था। पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में भारत आये थे, तथा अजमेर को अपना मुख्य केन्द्र बनाया था।

रज्जब

- 1—6 तारीख —: ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का अजमेर में उर्स आयोजित किया जाता है। भीलवाड़ा का गौरी परिवार झण्डा चढ़ाकर उर्स की शुरुआत करता है। 6 तारीख को कुल की रस्म तथा 9 तारीख को बड़े कुल की रस्म मनाई जाती है।
- 27 तारीख —: शब—ए—मेराज — इस रात को पैगम्बर मोहम्मद साहब की अल्लाह से मुलाकात हुई थी।

शाबान

- 14 तारीख :— शब—ए—बरात।

- इस रात मुसलमान अपने बुरे कर्मों के लिए माफी माँगते है।

रमजान

- मुसलमानों का सबसे पवित्र महिना।
- इस महिने में रोजे रखे जाते है।
- 27 तारीख – शब–ए–कद्र– इस रात्रि को कुरान धरती पर भेजी गई थी।

शव्वाल

- 1 तारीख – ईद उल फितर (मीठी ईद, सेवइयों की ईद)
- भाईचारे का त्योहार
- 13 तारीख – इस दिन जालौर में 'मलिकशाह दातार' का उर्स भरता है।

जिल्काद

- इस महिने में कोई त्योहार नहीं है।

जिल्हिज

- इस महिने में मुसलमान हज यात्रा के लिए जाते है।
- 10 तारीख – ईद–उल–जुहा (बकर ईद)
- कुर्बानी का त्योहार।

जैनों के त्योहार

- **आदिनाथ/ऋषभ जयन्ती :–** चैत्र कृष्ण नवमी (धुलेव,उदयपुर में मेले का आयोजन) भील जनजाति इन्हें 'काला जी' या 'केसरिया जी' मानती है।
- **महावीर जयन्ती :–** चैत्र शुक्ल त्रयोदशी। चैत्र (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)

,

- **दसलक्षण पर्व** →
  - चैत्र (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)
  - भाद्रपद (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)
  - माघ (शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक)

- भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को ''पर्युषण पर्व (महापर्व) '' कहा जाता है।

पर्युषण

दिगम्बर

- पर्युषणः– भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी
- आश्विन कृष्ण एकम् :– पड़वा ढ़ोक(क्षमा याचना पर्व)

श्वेताम्बर

पर्युषण –भाद्रपद कृष्ण द्वादशी–शुक्ल चतुर्थी

भाद्रपद शुक्ल पंचमी –संवत्सरी पर्व या क्षमा याचना।

- **रोट तीज**–भाद्रपद शुक्ल तृतीया

- **सुगन्ध दशमी/धूप दशमी** :– भाद्रपद शुक्ल दशमी

सिक्खों के त्योहार

- गुरू नानक जयन्ती :– कार्तिक पूर्णिमा

  मेले :– कोलायत (बीकानेर), साहवा (चुरू)

- गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती :– पौष शुक्ल सप्तमी।
  - लोहड़ी– 13 जनवरी।
  - वैशाखी –13 अप्रैल।

    13 अप्रैल 1699 को गुरू गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में ''खालसा पंथ'' की स्थापना की थी। (वैशाखी पर्व के दिन)

    13 अप्रैल 1919 – जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड।

सिंधियों के त्योहार

- **चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती**:– चैत्र शुक्ल एकम् (झूलेलाल जी को वरूण का अवतार तथा समुद्र का देवता माना जाता है।)
- **असूचण्ड** :– आश्विन शुक्ल एकम (झूलेलाल जी का निर्वाण दिवस)
- **थदड़ी सातम** :– भाद्रपद कृष्ण सप्तमी
- **चालीहा महोत्सव** :– 16 जुलाई से 24 अगस्त तक।

ईसाईयों के त्योहार

- ईसाई त्योहार गिग्रेरियन कैलेण्डर के अनुसार मनाये जाते है।
- यह सूर्य आधारित कैलेण्डर है।
- **क्रिसमस** :– 25 दिसम्बर इस दिन ईसामसीह का जन्म हुआ था।
- **नववर्ष** :– 1 जनवरी
- 4 वर्ष की आयु में ईसामसीह को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस घटना को प्रबोधन कहा जाता है। इस दिन से ईस्वी कैलेण्डर की शुरूआत मानी जाती है। 1583 ई. में पोप गिग्रेरी 13वें ने इस कैलेण्डर को व्यवस्थित किया था।
- **गुड फ्राइडे** :– इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढ़ाया गया था। यह ईस्टर से ठीक पहले फ्राइडे होता है।
- **ईस्टर** :– इस दिन ईसा मसीह पुनर्जीवित हुये थे। यह रविवार का दिन था। 22 मार्च के ठीक बाद जो पूर्णिमा आती है। उसके बाद वाला रविवार, ईस्टर कहलाता है।
- **असेन्शन डे** :– ईस्टर के 40 दिन बाद आता है। इस दिन ईसामसीह वापस स्वर्ग लोक चले गये थे

राजस्थान के लोक देवता

"पाबू हड़बू रामदे, मांगलिया मेहा।
पाँचू पीर पधारज्यो, गोगाजी जेहा ।।

- पाबू जी, हड़बू जी, रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी :– ये 5 पीर है जिन्हे हिन्दू व मुस्लिम दोनों मानते है।

पाबूजी राठौड़

- **पिता :–** धाँधल जी (मारवाड़ के राव धूहड़ के छोटे भाई)
- **माता :–** कमला दे
- **जन्म स्थान**:– कोलुमण्ड – फलौदी
- **पत्नी :–** फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट के सूरजमल सोढा की राजकुमारी)
- **घोड़ी :–**केसर कालमी (देवल नामक चारण महिला की घोड़ी)
- **सहयोगी** :–चाँदा तथा डामा (दोनो भील भाई थे)
- **मेला :–** कोलुमण्ड में चैत्र अमावस्या को आयोजित किया जाता है।

- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए अपने विवाह के दौरान तीन फेरों के बाद उठकर आ गये थे तथा "देचू (फलौदी)" में "जींदराव खींची" (जायल) के खिलाफ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये थे।
- पाबूजी को "लक्ष्मण का अवतार" माना जाता है।
- पाबूजी को "ऊँट रक्षक देवता" कहा जाता है।
- राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते है।
- पाबूजी को "प्लेग रक्षक देवता" भी कहा जाता है।
- पाबूजी ने गुजरात के 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी।
- पाबूजी की फड़ "सबसे लोकप्रिय फड़ है।" भील जाति के भोपे (पुजारी) फड़ को गाते समय "रावणहत्था" वाद्य यंत्र बजाते है।
- पाबूजी के वीरगाथा गीत पवाड़े (भजन) माट वाद्य यंत्र द्वारा गाये जाते है।

पाबूजी से संबंधित पुस्तकें:–

1. **पाबू प्रकाश :–** आशिया मोडजी (इनके अनुसार पाबूजी का जन्म बाड़मेर जिले के जूना ग्राम में हुआ था।)
2. **पाबूजी रा दूहा :–** लघराज
3. **पाबूजी रा छन्द :–** बीठू मेहा जी

4. **पाबूजी रा रूपक :–** मोतीसर बगतावर
5. **पाबूजी के सोरठे :–** रामनाथ
6. **पाबूजी रा गीत : –** बांकीदास

रामदेवजी तँवर

- **जन्म स्थान** – उण्डू काश्मीर (बाड़मेर)
- **पिता** – अजमाल जी (पोकरण के सामन्त)
- **माता** – मैणादे
- **पत्नी** – नेतल दे (अमरकोट के दलेलसिंह सोढा की राजकुमारी)
- **मन्दिर** – रूणीचा/रामदेवरा (जैसलमेर)
- **गुरू** – बालीनाथ जी (इनका मन्दिर जोधपुर की मसूरिया पहाड़ी पर स्थित।)
- **घोड़ा** – लीलो
- **झण्डा** – नेजा
- **जागरण** – जमो
- **मेघवाल भक्त** – रिखिया
- **परचा** – चमत्कार को कहा जाता है।
- रामदेवरा में ''परचा बावड़ी'' है।
- रामदेव जी पुस्तक – ''चौबीस बाणियाँ''(एकमात्र लोकदेवता जो कवि भी थे।)
- रामदेव जी ने ''कामड़िया पंथ'' की शुरूआत की थी।
- कामड़िया पथं की महिलाओं द्वारा ''तेरहताली नृत्य'' किया जाता है।
- ''भाद्रपद शुक्ल एकादशी'' को रामदेव जी ने रुणीचा में जीवित समाधि ली थी।
- ''भाद्रपद शुक्ल दशमी'' को ''डालीबाई'' मेघवाल (रामदेव जी की धर्म बहिन)ने रुणीचा में समाधि ली थी।
- रामदेवजी के मन्दिर में ''पगल्ये'' पूजे जाते है।
- रामदेवजी ने पोकरण क्षेत्र में भैरव नामक साहुकार/राक्षस का दमन किया था।
- रामदेवजी को विष्णु (कृष्ण) का अवतार तथा 'पीरों का पीर' कहा जाता है।
- रामदेव जी ने सामाजिक भेदभाव कम करने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया।

प्रमुख मन्दिर :–

- रूणीचा/रामदेवरा – जैसलमेर
- हल्दिना – अलवर
- पोकरण – जैसलमेर

- छोटा रामदेवरा – गुजरात
- मसूरिया पहाड़ी – जोधपुर
- बिरांटिया खुर्द – ब्यावर

गोगाजी (गोगाजी चौहान)

- **जन्म स्थान** – ददरेवा (चुरू)
- **पिता** – जेवर सिंह
- **माता** – बाछल दे
- **पत्नी** – केलम दे
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हे "जाहिर पीर" (साक्षात देवता) कहा था।
- अपने मौसेरे भाईयों अरजन व सरजन के खिलाफ गायों की रक्षार्थ युद्ध करते वीरगति को प्राप्त हुए।
- ददरेवा (चुरू) के मन्दिर को "शीर्ष मेड़ी" (सिर कट कर गिरा था) कहते हैं।
- गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)के मंदिर को "धुर मेड़ी" कहते हैं।
- गोगामेड़ी का मन्दिर "मकबरा शैली" में बना हुआ है। मन्दिर में "बिस्मिल्लाह" लिखा हुआ है।
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी बनी हुई है।
- गोगाजी "सर्प रक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते है।
- गोगाजी के मन्दिर खेजड़ी के पेड़ के नीचे बनाये जाते है।
- कवि बिठू मेहा जी ने इन पर **"गोगाजी रा रसावला"** नामक पुस्तक लिखी।

हड़बू जी सांखला

- **जन्म स्थान** – भूंडेल (नागौर)
- **पिता** – मेहराज जी।
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- अपने पिता की मृत्यु के बाद 'हरभमजाल' (जोधपुर) नामक स्थान में रहने लगे।
- इनके गुरू बालीनाथ जी थे।
- हडबूजी "शकुनशास्त्र" (भविष्य वक्ता) के ज्ञाता थे।
- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया तथा उसे एक कटार भेंट की थी।
- मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढ़ी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया।

- मन्दिर में "हड़बूजी की बैलगाड़ी की पूजा" की जाती है।
- हड़बूजी की सवारी/वाहन 'सियार' था।

मेहाजी मांगलिया

- मुख्य मंदिर – बापिणी (फलौदी)
- इनका मेला "कृष्ण जन्माष्टमी" को लगता है।
- यह मारवाड़ के राव चूंडा के समकालीन थे।
- यह मण्डोर के राणा रूपड़ा प्रतिहार के समकालिक थे।
- जैसलमेर के "राणगदेव भाटी" के खिलाफ युद्ध में लड़ते हुए मारे गये थे।
- यह हेकु नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए ।
- इनके घोड़े का नाम –'किरड़ काबरा'
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है। ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढ़ाते है।

तेजाजी –(पाँचों पीरों में तेजाजी का नाम नहीं आता)

- **जन्म स्थान** – खरनाल (नागौर)में एक जाट परिवार में हुआ था।
- **पिता** – ताहड़ जी
- **माता** – रामकुंवरी (पनेर, अजमेर)
- **पत्नी** – पेमलदे
- **घोड़ी** – लीलण
- **पुजारी/भोपा** – घोड़ला
- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थे।
- सुरसुरा (अजमेर) नामक गाँव में 'लाछा गुर्जर' महिला की गायों को बचाते हुए घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी।
- तेजाजी "सर्परक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते है।
- इन्हें "कालाबाला का देवता" भी कहा जाता है। (कालाबाला–बीमारी)
- "हल जोतते समय" किसान "तेजाजी के गीत" गाते है।
- 2010 ई. में तेजाजी पर राजस्थान सरकार द्वारा "डाक टिकट" जारी किया गया।
- इनकी घोड़ी 'लीलण' के नाम पर राजस्थान में एक रेलगाड़ी चलती है।(लीलण एक्सप्रेस)
- **पुस्तकें**–
  1. जुंझार तेजा – लज्जाराम मेहता
  2. तेजाजी रा ब्यावला – बंशीधर शर्मा
- **मुख्य मंदिर**– परबतसर – डीडवाना–कुचामन (जोधपुर महाराजा अभयसिंह ने बनवाया।)

- **अन्य मंदिर–**
  1. सैंदरिया – अजमेर
  2. सुरसुरा – अजमेर
  3. भांवता – अजमेर
  4. पनेर – अजमेर
  5. बासी–दुगारी – बूँदी
- तेजाजी की बहिन बुंगरी, राजलबाई माता का मन्दिर – खरनाल (नागौर) में बना हुआ है।

देवनारायण जी (औषधि का देवता)

- **जन्म स्थान** – आसीन्द (भीलवाड़ा)
- इनका जन्म 'बगड़ावत गुर्जर' परिवार में हुआ था।
- **पिता** – सवाई भोज – भिनाय (केकड़ी) के राजा के खिलाफ लड़ते हुए मारे गए।
- **माता** – सेढू
- **पत्नी** – पीपलदे (धार के राजा जयसिंह परमार की पुत्री)
- गाय की रक्षा के लिए देवनारायण जी ने भिनाय के राजा को मारकर अपने पिता की हत्या का बदला लिया।
- **मेला–** भाद्रपद शुक्ल षष्ठी।
  माघ शुक्ल सप्तमी।
- इन्हें 'विष्णु का अवतार' माना जाता है।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढ़ाये जाते है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है।
- देवनारायण जी की फड़ सबसे लम्बी फड़ है। गुर्जर भोपों द्वारा "जन्तर वाद्य यंत्र" के साथ इसे गाया जाता है।
- इस फड़ पर डाक टिकट जारी हो चुका है।
- देवनारायण जी पर भी डाक टिकट जारी हो चुका है।
- लक्ष्मी कुमारी चूंडावत की पुस्तक–'बगड़ावत'

मुख्य मन्दिर–

1. मालासेरी – आसीन्द (भीलवाड़ा)
2. देवधाम – जोधपुरिया (टोंक)
3. देवमाली – ब्यावर
4. देव डूंगरी – चित्तौड़गढ़ (राणा सांगा द्वारा निर्मित)

देव बाबा

- **मुख्य मन्दिर–** नंगला जहाज (भरतपुर)
- **मेलें** – भाद्रपद शुक्ल पंचमी
  – चैत्र शुक्ल पंचमी

- देव बाबा पशु चिकित्सक थे।
- इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पड़ता है।

मल्लीनाथ जी

- ये "मारवाड़ के राठौड़ राजा" थे। इन्होंने मालवा के गर्वनर निजामुद्दीन की तेरह टुकड़ियों को पराजित किया था उस समय दिल्ली का सुल्तान फिरोज तुगलक था।
- इनकी रानी "रूपादे" (मन्दिर – मालाजल,बाड़मेर) लोक देवी है।
- रूपादे के प्रभाव में मल्लीनाथ जी संत बन गए थे।
- राजधानी – मेवा नगर
- **गुरु**– उगम सिंह भाटी
- **मुख्य मन्दिर**– तिलवाड़ा (बालोतरा)
- इन्होंने 'कुण्डा पंथ' चलाया था। इनके कारण इस क्षेत्र को 'मालाणी' कहा जाता है।
- यहाँ पर होली के अगले दिन से शुरू होकर 15 दिन तक (चैत्र कृष्णा एकादशी से शुक्ल एकादशी) "मल्लीनाथ पशु मेला" चलता है। (मालाणी नस्ल के पशु का क्रय–विक्रय)
- मल्लीनाथ जी "भविष्य वक्ता" थे।
- इन्होनें समाज में छुआछूत एवं भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया।
- इन्होंने कुण्डा पंथ चलाया था।
- इन्होनें 1399 ई. में मारवाड़ में विशाल हरि कीर्तन का आयोजन करवाया था।

तल्लीनाथ जी

- यह मारवाड़ के राव चूण्डा के छोटे भाई थे।
- इनका वास्तविक नाम 'गोगादेव राठौड़' था।
- ये "शेरगढ़ (जोधपुर)" के सामंत थे।
- इन्होंने अपने पिता वीरमदेव की हत्या का बदला लिया था।
- गुरू – जलंधर नाथ
- मुख्य मन्दिर – पांचोटा (जालौर)
- इन्हें "ओरण का देवता" कहा जाता है।
- ओरण – मन्दिर के आस–पास छोड़ी गई जमीन जहाँ से पेड़–पौधे नही काट सकते।

बिग्गा जी

- मुख्य मन्दिर – रीडी (बीकानेर)
- पिता – महनजी
- माता– सुल्तानी
- गायों की रक्षा करते हुए शहीद हो गये थे।

- ये जाखड़ समाज के कुल देवता है।

हरिराम जी

- मुख्य मन्दिर –झोरड़ा (नागौर)
- मेला – भाद्रपद शुक्ल पंचमी
- सर्प रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते है।
- मंदिर में "साँप की बांबी" की पूजा की जाती है। (साँप का बिल)

केसरिया कुंवरजी

- यह गोगाजी के बेटे थे।
- इन्हें भी 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता है।

झरड़ा जी

- पाबूजी के भतीजे थे।
- जींदराव खींची (जायल का राजा) को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया।
- इन्हें रूपनाथ भी कहा जाता है।
- हिमाचल प्रदेश में इन्हें ''बालकनाथ'' कहा जाता है।
- **मन्दिर**–(1) कोलुमण्ड (फलौदी)
  (2) सिंभूदड़ा (बीकानेर)

जुन्झार जी

- जन्म स्थान :– इमलोहा (नीम का थाना)
- "स्यालोदड़ा (सीकर)" गाँव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये थे।
- "स्यालोदड़ा मंदिर में 'दुल्हा–दुल्हन' तथा ''इनके 3 भाईयों की मूर्तियाँ बनी हुई है।
- रामनवमी के दिन यहाँ पर मेला लगता है।

मामादेव

- ये "बरसात के देवता" है।
- इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि गाँव के बाहर इनके "तोरण की पूजा" की जाती है।
- इन्हें खुश करने के लिए "भैसे की बलि" देनी पड़ती है।

वीरफत्ता जी

- मुख्य मन्दिर – सांथू (जालौर)
- "भाद्रपद शुक्ल नवमी" को इनका मेला लगता है।
- गायों की रक्षार्थ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

आलम जी

- मुख्य मन्दिर – धोरीमन्ना (बाड़मेर)
- आलम जी को "अश्व रक्षक देवता" कहा जाता है।
- आलम जी राठौड़ वंश की जैतमालोत शाखा से संबंधित थे।

डूंगजी–जवाहर जी

- "बाठोठ–पाटोदा (सीकर)" गाँव के सामन्त थे।
- कालान्तर में ये अमीरों को लूट कर उनका धन गरीबों में बाँट दिया करते थे।
- प्रमुख सहयोगी –लोहट जी जाट, करणाजी मीणा, बालूजी नाई, सांखूजी लोहार
- इन्होंने अंग्रेजों की आगरा की जेल तथा नसीराबाद छावनी लूट ली थी।
- जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने डूंगजी को गिरफ्तार कर लिया तथा इन्हें मेहरानगढ़ किले में रखा।
- बीकानेर महाराजा रतन सिंह ने जवाहर जी को गिरफ्तार कर लिया तथा इन्हें जूनागढ़ किले में रखा।

खेतला जी

- मुख्य मन्दिर – सोनाणा (पाली)
- मेला – "चैत्र शुक्ल एकम्" को मेला लगता है।
- यहाँ पर "हकलाने वाले बच्चों का इलाज" होता है।

राजस्थान के सन्त एवं सम्प्रदाय

"दादू दयाल"

- **जन्म** –अहमदाबाद
- लोदीराम नामक ब्राह्मण ने पालन–पोषण किया था।
- **गुरु** –ब्रह्मानन्द जी/वृदानंद/बुद्‌ढन बाबा।
- राजस्थान में शुरूआती दिनों में ये सांभर में रहे थे, कालान्तर में आमेर में रहे।
- **मुख्य पीठ (केन्द्र)** – नरैना (जयपुर)
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का सन्देश दिया था।
- दादूदयाल जी को "राजस्थान का कबीर" कहा जाता है।
- दादूदयालजी ने अपने उपदेश **"ढूंढाड़ी"** में दिये थे।
- **सत्संग स्थल** – अलख दरीबा।
- इन्होंने निपख आंदोलन चलाया था।
- आमेर के राजा भगवन्त दास ने 1585 ई. में दादूदयाल जी की मुलाकात फतेहपुर सीकरी में अकबर से करवाई थी।
- दादूपंथ के मंदिरों को **"दादू द्वारा"** कहा जाता है।
- यहाँ पर दादूदयालजी के ग्रन्थ **"वाणी"** की पूजा की जाती है।
- दादूपंथी मृत व्यक्ति के शरीर को ना जलाते है, ना दफनाते है, बल्कि पशु–पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देते है।
- दादूजी का शरीर "भैराणा की पहाड़ी (जयपुर)" में रखा गया था। जिसे **"दादूखोल/दादूपालका"** कहा जाता है।
- दादूदयालजी के प्रमुख **52 शिष्य** थे जिन्हे **"52 स्तम्भ"** कहा जाता है।
- **मेला**– नरैना में – फाल्गुन शुक्ल पंचमी से एकादशी तक।

➢ **दादूपंथ की शाखाएँ –**

1. खालसा
2. विरक्त
3. उतरादे
4. खाकी
5. नागा

- **दादूजी के प्रमुख शिष्य –**

1. सुन्दरदास जी (बड़े)–

- इनका वास्तविक नाम भीमराज था। ये बीकानेर के शासक जैतसी के पुत्र थे। तथा कल्याणमल के भाई थे।
- इन्होंने नागा शाखा की स्थापना की।
- मुख्य केन्द्र– घाटड़ा (अलवर)
- नागा साधु अपने साथ हथियार रखते थे।
- इनके रहने के स्थान को छावनी कहा जाता था।
- सवाई जयसिंह ने नागा साधुओं को जयपुर की सेना में शामिल किया था।
- नागा साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के राजा प्रतापसिंह की मदद की थी।

2. रज्जब जी

- ये सांगानेर के पठान थे।(मुख्य केंद्र– सांगानेर, जयपुर)
- इन्होंने दादूजी के उपदेश सुनकर शादी नहीं की तथा "आजीवन दूल्हे के वेश" में रहे।
- पुस्तकें – (1) रज्जब वाणी
  (2) सर्वंगी

3. सुन्दरदास जी ('छोटे')

- जन्म– दौसा के खण्डेलवाल परिवार में
- इन्होंने 42 ग्रंथ लिखे थे।
- **प्रमुख ग्रन्थ –** (1) ज्ञान समुद्र,
  (2) सुन्दर सागर
  (3) सुन्दर विलास
- इन्होंने अपना लम्बा समय फतेहपुर (सीकर) में बिताया था।
- "गेटोलाव (दौसा)" में सुन्दरदास जी की समाधि बनी हुई है।

4. बालिन्द जी –

- ग्रंथ –'आरिलो'

5. गरीबदास जी– दादूदयाल जी के उत्तराधिकारी थे।

6. मिस्किनदास जी

7. बखना जी

8. माधोदास जी

"जाम्भोजी"

- जन्म – पींपासर (नागौर) में एक पंवार राजपूत परिवार में जन्म हुआ था।
- पिता – लोहट जी
- माता – हंसाबाई
- बचपन का नाम – धनराज
- गुरू – गोरखनाथ जी।
- इन्हें ''विष्णु का अवतार'' माना जाता है।
- 1485 ई. में समराथल (बीकानेर) नामक स्थान पर इन्होंने अपने अनुयायियों को "29 उपदेश" दिये थे। इसलिए इनके अनुयायी "बिश्नोई" (बिस+नौ) कहलाते है।
- मृत्यु – लालासर (बीकानेर)
- समाधि/मुख्य केन्द्र – "मुकाम (बीकानेर)"
- यहाँ पर "आश्विन तथा फाल्गुन अमावस्या" को मेला लगता है।
- ये सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। इसने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या बंद कर दी थी।
- बीकानेर क्षेत्र में अकाल के समय जाम्भोजी के कहने पर सिकन्दर लोदी ने चारे की व्यवस्था करवाई थी।
- जोधा (जोधपुर) व बीका (बीकानेर) जाम्भोजी का बहुत सम्मान किया करते थे।
- इन्हें वैज्ञानिक संत कहा जाता है।
- **अन्य मंदिर** –

  (1)जांगलू – बीकानेर

  (2) रामड़ावास –जोधपुर

  (3) जाम्भा –फलौदी

मेहोजी गोदारा :– यह विश्नोई समाज के संत थे। इन्होंने राजस्थानी भाषा में रामायण लिखी थी।

- **जाम्भोजी के ग्रंथ :–**
  1. जम्भ सागर
  2. जम्भ संहिता
  3. विश्नोई धर्म प्रकास

➢ **जाम्भोजी की शिक्षाएँ –**

1. हरे पेड़–पौधे नहीं काटने चाहिये। (खेजड़ी)

   सिर साटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।।
2. जीव हिंसा नहीं करनी चाहिये। (हिरण)
3. नीले कपड़े नही पहनने चाहिये।
4. विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।

"जसनाथ जी"

- जन्म स्थान – कतरियासर (बीकानेर) के जाट (ज्याणी) परिवार में हुआ था।
- पिता – हम्मीर जी
- माता – रूपादे
- गुरु – गोरखनाथ जी
- मुख्य केन्द्र – कतरियासर
- 1500 ई. में गोरखमालिया (बीकानेर) में जसनाथ जी व जाम्भोजी मिले थे।
- सिकन्दर लोदी ने इन्हें 'मालासर' नामक गांव दिया था।
- इन्होंने अपने अनुयायियों को 36 उपदेश दिये थे।
- इनके अनुयायी गले में काली ऊन के धागे पहनते है।
- इनके अनुयायी ''मोर पंख'' तथा ''जाल वृक्ष'' को पवित्र मानते है।
- इनके अनुयायियों द्वारा अग्नि नृत्य किया जाता है।
- इनकी पत्नी कालदे की पूजा की जाती है।
- **मेलें**– वर्ष में तीन बार – (1) चैत्र शुक्ल सप्तमी
  (2) आश्विन शुक्ल सप्तमी
  (3) माघ शुक्ल सप्तमी
- **प्रमुख ग्रन्थ** –
  (1) सिंभुदड़ा,
  (2) कोड़ा
- **अन्य केन्द्र**–
  (1) बमलू,
  (2) लिखमादेसर
  (3) पूनरासर
  (4) मालासर
  } बीकानेर
  (5) पाँचला सिद्धा –(नागौर) (जसनाथी संप्रदाय की 'मथुरा' कहा जाता है।)
- संतो के समाधि स्थल को बाड़ी (84 बाड़ियाँ प्रसिद्ध) कहते है।
- **मुख्य संत**–
  (1) लालनाथ जी – जीव समझौतरी (किताब)
  (2) रामनाथ जी – यशोनाथ पुराण (किताब) (जसनाथी सम्प्रदाय की बाईबिल)
  (3) रूस्तम जी – इन्हें औरंगजेब ने नगाड़ा व निशान(झण्डा)देकर सम्मानित किया।

"चरणदास जी"

- जन्म स्थान – डेहरा (अलवर)
- पिता जी – मुरलीधर
- माता जी – कुंजोबाई
- बचपन का नाम – रणजीत
- गुरू –शुखदेव
- मुख्य केन्द्र – दिल्ली
- मेला – बसंत पंचमी को
- अपने अनुयायियों को "42 उपदेश" दिये।
- इनके अनुयायी "पीले रंग के कपड़े" पहनते है।
- इन्होंने निर्गुण तथा सगुण दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया।
- इस संप्रदाय में भगवान कृष्ण की पूजा सखीभाव से की जाती है।
- इन्होंने नादिरशाह (1739 ई. में ईरान का राजा – भारत पर आक्रमण) के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।
- **चरणदास जी के ग्रंथः–**
  1. धर्मजहाज
  2. भक्ति पदारथ
  3. नासकेत लीला

प्रमुख शिष्या –

(1) दया बाई –

पुस्तकें– 1. दया बोध, 2. विनय मलिका

(2) सहजोबाई –

पुस्तक – सहज प्रकाश

- उपदेश "मेवाती भाषा" में दिये थे।
- सवाई प्रताप सिंह ने इन्हें कोलीवाड़ा गाँव दान में दिया।

"संत हरिदास जी"

- जन्म – कापड़ोद (नागौर)
- वास्तविक नाम – हरिसिंह सांखला
- पहले डाकू थे परन्तु बाद में सन्यासी बन गये।
- मुख्य केन्द्र :– गाढ़ा (डीडवाना)
- इन्होंने हरिदासी या "निरंजनी सम्प्रदाय" चलाया था।
- इन्होंने "निर्गुण व सगुण" दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया था।

- पुस्तकें :— 1. मन्त्र राज प्रकाश,
  2. हरि पुरूष जी की वाणी

"संत मावजी"

- जन्म स्थान :— साबला (डूंगरपुर)
- इन्होनें भगवान श्री कृष्ण की पूजा ''निष्कंलक अवतार'' के रूप में की थी।
- इन्होनें निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया था।
- इनके अनुयायी इन्हें विष्णु का कल्कि (दसवां) अवतार मानते है।
- इन्होनें कृष्ण लीला की रचना ''वागड़ी भाषा'' में की थी।
- संत मावजी ने बेणेश्वर धाम (डूँगरपुर) की स्थापना की थी।
- **प्रमुख ग्रंथ :—**

1. **चोपड़ा—**यह ग्रन्थ वाद—विवाद शैली में है। दीपावली को इसका वाचन करते है। इनमें भविष्यवाणियां है। इसमें तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी है।

कुल 5 चोपड़े है, जो इस प्रकार है—

(1) प्रेम सागर
(2) मेघ सागर
(3) साम सागर
(4) रत्न सागर
(5) अनन्त सागर

- **अन्य केन्द्र—** (1) शेषपुर — उदयपुर
  (2) पुंजपुर — डूंगरपुर
  (3) दालावाला — डूंगरपुर
  (4) पालोदा — बांसवाड़ा

बालन्दाचार्य

- मुख्य पीठ — लोहार्गल (नीम का थाना)
- यह अपने पास सेना रखते थे इसलिए इन्हें ''लश्कर संत'' कहा जाता है।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।
- इन्होनें 52 मूर्तियों को औरंगजेब से बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया था।
- इन्होनें औरंगजेब के खिलाफ मेवाड़ के राजसिंह तथा मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़ की सहायता की थी।

नवलदास जी

- जन्म स्थान :– हरसोलाव (नागौर)
- मुख्य केन्द्र – जोधपुर
- सम्प्रदाय – नवल सम्प्रदाय
- ग्रन्थ – नवलेश्वर अनुभववाणी
- मेला :– भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

स्वामी लालगिरी

- जन्म स्थान :– सुलखनिया (चुरू)
- मुख्य केन्द्र – बीकानेर
- सम्प्रदाय – अलखिया संप्रदाय
- ग्रन्थ – अलख स्तुति प्रकास

संत धन्ना

- जन्म स्थान :–धुआं कलां (टोंक)
- इनका जन्म जाट परिवार में हुआ था।
- गुरू – रामानन्द जी
- राजस्थान में भक्ति आन्दोलन की शुरूआत की थी।
- ''बोरानाडा (जोधपुर)'' में इनका मंदिर बना हुआ है।
- ये पंजाब में भी लोकप्रिय है।
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का संदेश दिया।

"संत पीपा"

- वास्तविक नाम :– प्रताप सिंह खींची
- ''गागरौण (झालावाड़) के राजा थे।
- इन्होंने अपने छोटे भाई अचलदास खींची को राजा बना दिया था।
- यह रामानन्द जी के शिष्य थे। (कुल 12 शिष्य थे)
- अपनी द्वारिका यात्रा के दौरान रामानंद जी गागरोन रूके थे। इस समय प्रतापसिंह ने अपनी रानी सीता के साथ सन्यास धारण कर लिया था।
- संत पीपा ''दर्जी समाज के प्रमुख देवता'' है।
- इन्होनें निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।
- मुख्य मंदिर – समदड़ी (बाड़मेर)
- छतरी– गागरौण (झालावाड़)

- गुफा– टोडा (केकड़ी)
- मेला – चैत्र पूर्णिमा
- टोडा के राजा शूरसेन ने इनसे प्रभावित होकर अपना पूरा धन साधू–सन्तों, गरीबों में बांट दिया गया था।

सन्तदास जी

- मुख्य केन्द्र–दाँतडा (भीलवाड़ ा)
- सम्प्रदाय – गूदड़ सम्प्रदाय

राजाराम जी

- मुख्य केन्द्र – शिकारपुरा (जोधपुर)
- पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया था।
- पटेल समाज के लोग इन्हें अपना मुख्य देवता मानते है।

मीरा बाई

- जन्म स्थान :– ''कुड़की (ब्यावर)''
- पिता :– रतन सिंह (बाजोली के सामंत, खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।)
- माता – वीर कंवर
- दादा – दूदा जी (मेड़ता के राजा)
- मीरा बाई का पालन पोषण अपने दादा ''दूदा'' के पास मेड़ता में हुआ।
- मीरा बाई के पति – ''भोजराज''(राणा सांगा के पुत्र)
- मीरा बाई श्री कृष्ण को अपना पति मानकर ''सगुण रूप'' से पूजा करती थी।
- मीराबाई के गुरू :– ''रैदास''
- मीराबाई द्वारका के 'रणछोड़ मंदिर' के भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गयी थी।
- महात्मा गाँधी, मीराबाई को अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने वाली ''सत्याग्रही महिला'' मानते थे।
- मीराबाई को ''राजस्थान की राधा'' कहा जाता है।
- मीराबाई की पुस्तकें :–

    1.रूकमणी मंगल
    2.सत्यभामा नू रूसणो
    3.गीत गोविन्द
    4.नरसी जी रो मायरो। (यह पुस्तक रतना खाती के सहयोग से लिखी गई)
    5.पदावली

राना बाई

- मुख्य मन्दिर – हरनावा (डीडवाना–कुचामन)
- माता – गंगा बाई, पिता – रामगोपाल
- मेला – हरनावा स्थित मन्दिर परिसर में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी को एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है।
- यह पालडी के संत चतुरदास जी की शिष्या थी तथा कृष्ण की भक्त थी।
- इन्होंने विवाह नहीं किया था तथा इन्होंने समाधि ली थी।
- ऐसी मान्यता है कि इन्होने अहमदाबाद अभियान के दौरान जोधपुर महाराजा अभयसिंह की रक्षा की थी।
- इन्हें राजस्थान की दूसरी मीरा कहा जाता है।

गवरी बाई

- ''वागड़ की मीरा'' कहा जाता है।
- डूँगरपुर के ''महारावल शिवसिंह'' ने ''बाल–मुकुन्द'' मंदिर'' बनवाया था, जिसे ''गवरी बाई का मंदिर'' भी कहा जाता है।

भक्त कवि दुर्लभ

- इन्हें ''वागड़ का नृसिंह'' कहा जाता है।

मलूकदास जी

- यह अलवर के प्रसिद्ध संत थे।
- यह गरीबदास जी संप्रदाय से जुड़े हुए थे।

भूरी बाई अलख

- यह मेवाड़ की प्रसिद्ध महिला संत थी।

सम्प्रदाय

वल्लभ सम्प्रदाय/रूद्र/पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय

- श्री ''कृष्ण के बाल स्वरूप'' की पूजा करते है।
- इनके मंदिर को 'हवेली' कहा जाता है।
- यहाँ गाया जाने वाला संगीत 'हवेली संगीत' कहलाता है।
- मन्दिर में श्री कृष्ण मूर्ति के पीछे दीवार पर/पर्दे पर जो चित्र बनाये जाते है उन्हे ''पिछवाई'' कहा जाता है।
- नाथद्वारा की पिछवाई प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में वल्लभ संप्रदाय के 41 मंदिर है।
- **मुख्य मन्दिर :–**
  1. मथुरेश जी –कोटा
  2. श्री नाथ जी – सिहाड़ (नाथद्वारा)
  3. द्वारिकाधीश – कांकरोली (राजसमंद)
  4. गोकुलचन्द्र –कामां (डीग)
  5. मदन मोहन – कामां (डीग)
- इस सम्प्रदाय के प्रभाव में किशनगढ़ महाराजा सावंतसिंह ने अपना नाम बदलकर 'नागरीदास' रख लिया था।
- इन्होंने अपना अंतिम समय वृंदावन में बिताया था।
- कोटा महाराव भीमसिंह ने अपना नाम बदलकर 'कृष्णदास' रख लिया था।
- कोटा का नाम बदलकर 'नंदग्राम' तथा शेरगढ़ का नाम बदलकर 'बरसाना' कर दिया था।
- बांरा में सांवरियाँ जी का मंदिर बनवाया था।

गौड़ीय सम्प्रदाय

- भगवान श्री कृष्ण की पूजा की जाती है।
- प्रवर्तकः– चैतन्य महाप्रभु
- मुख्य मंदिरः– गोविन्द देव मंदिर, जयपुर
- जयपुर के महाराजा स्वयं को गोविन्द देव जी का दीवान मानते है।
- अन्य मंदिरः– मदन मोहन जी – करौली (निर्माण– गोपालपाल)

रामानन्दी सम्प्रदाय

- सम्प्रदाय के लोग ''भगवान राम'' की पूजा ''रसिक नायक'' के रूप में करते है।इसलिए इसे ''रसिक सम्प्रदाय'' भी कहा जाता है।
- ''कृष्ण भट्ट'' की पुस्तक ''राम रासौ'' में राम व सीता की प्रेम कहानी है। यह पुस्तक सवाई जयसिंह के समय लिखी गई थी।
- प्रमुख केन्द्र :–
  1. **गलता जी** (जयपुर) – कृष्ण दास ''पयहारी'' इसके संस्थापक थे।
     आमेर के राजा पृथ्वीराज एवं रानी बाला बाई कृष्ण दास पयहारी के अनुयायी थे।

- गलता जी प्राचीन काल में गालव ऋषि की तपोभूमि था। यह प्राचीन सूर्य मन्दिर के लिए भी प्रसिद्ध है। यह रामानुज सम्प्रदाय की पीठ भी है। गलता जी को 'मंकी वैली' भी कहते है। उत्तर भारत का तोताद्रि कहा जाता है।

  2. **रैवासा (सीकर)** :– अग्रदास जी

निम्बार्क सम्प्रदाय

- मुख्य केन्द्र :– सलेमाबाद (अजमेर)
- प्रवर्तक – निम्बार्काचार्य
- संस्थापक – परशुरामजी (इनका जन्म खण्डेला के ब्राह्मण परिवार में हुआ था।)
- इस सम्प्रदाय के लोग राधा जी को श्रीकृष्ण की पत्नी मानते है।
- मेला – भाद्रपद शुक्ल 8 (राधाष्टमी)
- शेखावाटी इलाके में भी इस संप्रदाय का प्रभाव अधिक है।

परनामी सम्प्रदाय

- मुख्य पीठ – पन्ना (मध्यप्रदेश)
- संस्थापक – प्राणनाथ
- आदर्श नगर (जयपुर) में भी ''परनामी सम्प्रदाय'' का मन्दिर है।
- सम्प्रदाय का मुख्य ग्रंथ ''कुजलम स्वरूप'' है।
- इस संप्रदाय में भगवान कृष्ण की पूजा की जाती है। (कुजलम स्वरूप)

रामस्नेही सम्प्रदाय

- यह सम्प्रदाय ''निर्गुण भक्ति'' में विश्वास रखता है।
- इस सम्प्रदाय में दशरथ पुत्र राम की पूजा नहीं की जाती बल्कि निर्गुण राम की पूजा की जाती है। इनके साधु–संत ''गुलाबी रंग के कपड़े'' पहनते है।
- शाहपुरा (शाहपुरा) में होली के अगले दिन ''फुलडोल का मेला'' होता है।
- **मुख्य केन्द्र :–**
  1. **शाहपुरा** (शाहपुरा) – रामचरण जी ने इस केन्द्र की स्थापना की थी। होली के अगले दिन शाहपुरा में फूलडोल मेले का आयोजन किया जाता है।
  2. **रैण (नागौर)**– स्थापना –दरियाव जी
  3. **सिंहथल (बीकानेर)**– स्थापना – हरिरामदास जी
  4. **खेड़ापा (जोधपुर)**– स्थापना – रामदास जी

1. रामचरण जी

- जन्म स्थान – सोड़ा (टोंक)
- पिता – बख्तराम
- माता – देउ
- बचपन का नाम – रामकिशन
- गुरू – कृपाराम जी(दांतड़ा)
- ग्रन्थ – अणभैवाणी
- इनका जन्म एक विजयवर्गीय वैश्य परिवार में हुआ था।
- शाहपुरा के राजा रणसिंह ने इन्हें मठ व छतरी बनवाकर दिए थे।

2. दरियाव जी

- जन्म स्थान– जैतारण (ब्यावर)
- पिता – मानसा
- माता – गीगा
- गुरू – पेमदास जी
- इनका जन्म धुनिया पठान परिवार में हुआ था।
- यह सबसे पुराने रामस्नेही संत है।

3. हरिरामदास जी

- जन्म स्थान – सिंहथल (बीकानेर)
- पिता – भागचन्द जोशी
- माता – रामी

- गुरू– जैमलदास जी
- ग्रंथ – निशानी (योग ग्रंथ)
- इनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

4. रामदास जी

- जन्म स्थान – भीकमकोर (जोधपुर)
- पिता – सार्दूल
- माता – अणली
- गुरू – हरिरामदास जी
- इनका जन्म मेघवाल परिवार में हुआ था।
- जैमलदास जी को सिंहथल तथा खेड़ापा शाखाओं का आदिआचार्य माना जाता है।

नाथ सम्प्रदाय

शाखाएँ–

- ❖ माननाथी–मुख्य केन्द्र– महामंदिर (जोधपुर)
- ❖ वैरागनाथी–राताडूंगा (नागौर)
- ❖ जालौर का सिरे मंदिर नाथ संप्रदाय से संबंधित है।
- ❖ योगी रतननाथ ने देवराज को जैसलमेर का राजा बनने का आशीर्वाद दिया था।
- ❖ जोधपुर के राजा मानसिंह (मारवाड़ का सन्यासी राजा) ने महामंदिर व उदय मंदिर का निर्माण करवाया। इन्होंने 'नाथ चरित्र' नामक पुस्तक लिखी।

ऊंदरिया संप्रदाय

- जयसमंद झील के आसपास के क्षेत्र में भील जनजाति में यह संप्रदाय लोकप्रिय है।

जैन संत

आचार्य भिक्षु स्वामी

- जन्म स्थान – कंटालिया (पाली)
- इन्होंने 'तेरापंथ' शाखा की स्थापना की थी।
- मृत्यु – सिरियारी (पाली)

आचार्य तुलसी

- जन्म स्थान – लाडनूं (डीडवाना–कुचामन)
- यह तेरापंथ शाखा के 9वें आचार्य थे।
- समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए 1949 ई. में सरदारशहर (चूरू) से अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की थी।
- 1991 ई. में लाडनूं में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
- 1994 ई. में सुजानगढ़ में मर्यादा महोत्सव का आयोजन करवाया था।
- इन्होंने विसर्जन पर बल दिया था।
- इन्होंने कहा था कि ''इन्सान पहले इन्सान, बाद में हिन्दू या मुसलमान।''

आचार्य महाप्रज्ञ

- जन्म स्थान – टमकोर (झुंझुनूं)
- यह तेरापंथ शाखा के 10वें आचार्य थे।
- इन्होंने अणुव्रत आंदोलन में भी मुख्य भूमिका निभाई थी।
- 1979 ई. में चरित्र निर्माण तथा सर्वांगीण विकास के लिए इन्होंने शिक्षा में 'साइंस ऑफ लिविंग' की शुरूआत की थी।
- 2001 ई. में इन्होंने सुजानगढ़ में अहिंसा यात्रा की शुरूआत की थी।
- 2003 ई. में राष्ट्रपति APJ अब्दुल कलाम ने सूरत में धर्मसम्मेलन का आयोजन किया था। जिसकी अध्यक्षता आचार्य महाप्रज्ञ ने की थी।
- पुस्तकें– *1. Family and Nation*
2. Economics of Mahaveer

संत मिश्रीमल

- जैतारण (ब्यावर) में 'पवन धाम' की स्थापना की।

मुस्लिम संत

लालदास जी

- जन्म स्थान – धोलीदूब (अलवर)
- पिता – चांदमल
- माता – समदा
- गुरू – गद्दन चिश्ती
- समाधि – शेरपुर (अलवर)
- मुख्य केन्द्र – नंगला जहाज (भरतपुर)
- मेलें– आश्विन शुक्ल एकादशी, माघ पूर्णिमा
- इनका जन्म 'मेव' परिवार में हुआ था।
- यह लकड़हारे थे।
- इन्होंने मेवाती भाषा में अपने उपदेश दिए थे।
- मेवात क्षेत्र में इनका प्रभाव अधिक है।
- पुत्र – कुतुब खाँ (इनका मुख्य केन्द्र– बांधोली, अलवर)
- ग्रंथ – लालदासजी की चितवाणियाँ

नरहड़ पीर

- मुख्य केन्द्र – नरहड़ (झुंझुनूं)
- मेला – कृष्ण जन्माष्टमी
- अन्य नाम – हजरत शक्कर बाबा
- इन्हें 'बागड़ का धणी' कहा जाता है।
- सलीम चिश्ती इनके शिष्य थे।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

- जन्म स्थान – संजर (ईरान)
- गुरू – उस्मान हारून ख्वाजा
- पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में यह भारत आ गए थे।
- मुख्य केन्द्र – अजमेर
- मोहम्मद गौरी ने इन्हें 'सुल्तान–उल–हिन्द' की उपाधि दी थी।
- दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश ने अजमेर में इनकी दरगाह का निर्माण शुरू करवाया था। मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने इसका निर्माण पूरा करवाया था।
- मोहम्मद बिन तुगलक इस दरगाह पर आने वाला पहला सुल्तान था।
- अकबर इस दरगाह पर 14 बार आया था।
- अकबर ने इस दरगाह को 18 गांव दान में दिए थे।

- मेवाड़ महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने इस दरगाह को 4 गाँव दिए थे।
- जोधपुर महाराजा अजीत सिंह ने इस दरगाह को भूमि अनुदान दिया था।
- छत्रपति शाहू पहले मराठा राजा थे जिन्होंने दरगाह के लिए उपहार भेजे थे।
- औरंगजेब की बहन जहाँआरां ने इस दरगाह की यात्रा की थी। इसने ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी (मुनीस–अल–अखाह) लिखी थी।
- उर्स – रज्जब की 1 तारीख से 6 तारीख तक।
- भीलवाड़ा का गौरी परिवार झंडा चढ़ाकर उर्स की शुरूआत करता है।
- 6 तारीख को कुल की रस्म निभाई जाती है।
- 9 तारीख – बड़े कुल की रस्म
- इनके वंशजों ने चिश्ती सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार किया था।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन का पुत्र फखरूद्दीन – सरवाड़ (केकड़ी)
- हिसामुद्दीन सोख्ता – सांभर (जयपुर ग्रामीण)
- बीबी हाफिज जमाल– यह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की पुत्री थी।

शेख हमीदुद्दीन नागौरी

- यह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने इन्हें सुल्तान–उत–तारकिन की उपाधि दी थी।
- यह 'सुवाल' (नागौर) नामक गाँव में खेती करते थे।
- यह पूर्णतया शाकाहारी संत थे।
- इल्तुतमिश के उपहारों को लेने से मना कर दिया था।
- इल्तुतमिश ने इनके सम्मान में नागौर में बुलन्द दरवाजा बनवाया था जिसे अतारकिन का दरवाजा कहा जाता है।
- इनका निवास स्थान फूल महल कहलाता है।
- इनकी पत्नी बीबी खदीना भी एक आध्यात्मिक महिला थी।

शेख फरीदुद्दीन

- यह शेख हमीदुद्दीन नागौर के पोते थे।
- यह मुहम्मद बिन तुगलक के समकालीन थे।
- इन्होंने शेख हमीदुद्दीन नागौरी का मलफूजात (उपदेशों की पुस्तक) तैयार करवाया था जिसे सुरूर–उस–सुदूर कहा जाता है।

ख्वाजा मखदूम हुसैन नागौरी

- यह भी चिश्ती सम्प्रदाय से संबंधित थे।
- इन्होंने कुरान के 30 ग्रंथ तैयार करवाए थे, जिसे नुर–ए–नब्बी कहा जाता है।
- इन्होंने नागौर में तालाब (मुस्तफा सागर) तथा बगीचे (रसूल बाड़ी) का निर्माण करवाया था।
- 'मांडू' के सुल्तान ने इन्हें धन प्रदान किया था तथा इन्होंने अजमेर में गुम्बद (दरगाह शरीफ पर) तथा नागौर में चारदीवारी (शेख हमीदुद्दीन नागौर की मजार का) का निर्माण करवाया था।

शेख बुरहान चिश्ती

- मुख्य केन्द्र – तालाघोला (जयपुर)
- जयपुर के राजा इनसे कर ग्रहण नहीं करते थे।
- 'रोह' के अफगानों में इनका अधिक प्रभाव था।

रसूलशाह

- मुख्य केन्द्र – बहादुरपुर (अलवर)
- गुरू – नियामत उल्ला खाँ
- इन्होंने रसूलशाही संप्रदाय चलाया था।
- यह शराब पीया करते थे।

काजी हमीदुद्दीन नागौरी

- अबुल फजल के अनुसार यह नागौर के 3 वर्ष तक काजी (Judge) रहे थे।
- कालांतर में बगदाद चले गए थे तथा इन्होंने शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी को अपना गुरू बना लिया था।
- इन्होंने नागौर को सुहरावर्दी संप्रदाय का मुख्य केन्द्र बनाया था।
- कालांतर में दिल्ली चले गए थे।
- मजार – दिल्ली

शेख कबीर चिश्ती

- प्रारंभ में नागौर रहते थे कालांतर में अहमदाबाद चले गए थे।
- मुख्य केन्द्र – नागौर

शेख इस्हाक मगरिबी– मगरिबी संप्रदाय

- मुख्य केन्द्र – खाटू (नागौर)

शेख अहमद

- यह शेख इस्हाक मगरिबी के शिष्य थे।
- इन्होंने हज यात्रा की थी।
- 1398 ई. में इन्होंने दिल्ली में तैमूर से मुलाकात की थी।
- सुल्तान मुजफ्फरशाह के बुलाने पर यह गुजरात चले गए थे।
- **मुख्य केन्द्र–** सरखेज (गुजरात)

1. मदरसा
2. खानकाह (सूफी संतों के रहने की जगह)
3. मजार

- उपाधियाँ– कुतुब–उल–अकताब (तारों का तारा), गंज बख्श (दानवीर)

शाह गुलाम इमाम (शेख मानू)

- मुख्य केन्द्र – सिंघाना (दरगाह) (झुंझुनूं)

शेख गुलाम मोइनुद्दीन (चांदशाह)

- मुख्य केन्द्र –पाली।

सैय्यद फखरूद्दीन

- मुख्य केन्द्र – गलियाकोट (डूंगरपुर)
- यह दाउदी बोहरा संप्रदाय का मुख्य केन्द्र है।
- उर्स– मोहर्रम की 27 तारीख
- दरगाह – मजार–ए–फखरी

राजस्थान की लोक देवियाँ

करणी माता

- जन्म :– सुआप (जोधपुर)
- चारण परिवार में जन्म हुआ।
- बचपन का नाम रिद्धि बाई था।
- मुख्य मन्दिर :– ''देशनोक'' (बीकानेर)
- बीकानेर के महाराजा सुरतसिंह ने देशनोक में मंदिर का निर्माण करवाया।
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।
- अलवर महाराजा बख्तावर सिंह ने मंदिर में छत्र चढ़ाया।
- मंदिर में दो बर्तन रखे हुए है जिन्हें 'सावन–भादो' कहा जाता है।

इसे चूहों का मन्दिर कहा जाता है। चूहों को 'काबा' कहा जाता है। सफदे काबे के दर्शन शुभ माने जाते है।

- करणी माता को ''दाढी वाली डोकरी'' कहा जाता है।
- करणी माता का प्रतीक :–संवली (चील)
- करणी माता ने मेहरानगढ़ किले की नींव लगाई थी।
- बीकानेर की स्थापना मां करणी के आशीर्वाद से हुई ।
- करणी माता को बीकानेर के राठौड़ों की ईष्ट देवी कहा जाता है।
- **नेहड़ीजी का मन्दिर :– (देशनोक)**

✓ यहाँ करणी माता स्वयं रहती थी,तथा ''तेमड़ेराय माताजी'' की पूजा करती थी।

✓ इनका मन्दिर भी देशनोक में है। (नेहड़ी – बिलौने की लकड़ी)

जीण माता

- मुख्य मन्दिर :– रैवासा (सीकर)
- इनके भाई हर्ष के मन्दिर का निर्माण चौहान राजा गूवक प्रथम ने करवाया था।
- हर्षमंदिर, हर्ष पहाड़ी पर बना है।
- जीणमाता के मन्दिर का निर्माण चौहान राजा पृथ्वीराज प्रथम के ''सामन्त हट्टड मोहिल'' ने करवाया था।
- जीणमाता 'चौहानों की ईष्ट' देवी है।
- जीणमाता का लोकगीत सबसे लम्बा है। कनफटे जोगी डमरू और सारंगी के साथ गीत गाते है।
- जीणमाता को ''मधुमक्खियों की देवी'' कहा जाता है।

- औरंगजेब इस मन्दिर के दीपक का घी भेजा करता था तथा उसने माताजी का छत्र बनवा कर इस मन्दिर में भेंट किया था।
- केंद्र सरकार 'मंदिर के दीपक का' घी भेजती है।

कैला माता

- करौली की त्रिकुट पर्वत पर मन्दिर बना हुआ है।
- करौली के ''जादौन राजवंश'' की कुलदेवी है।
- इन्हें हनुमानजी की माता अजंनी तथा कृष्ण की बहिन माना जाता है।
- इनके भक्तों को लांगुरिया कहा जाता है एवं इनके द्वारा लांगुरिया गीत गाए जाते है।
- ''चैत्र शुक्ल अष्टमी'' को इनका ''लक्खी मेला'' लगता है। (वर्ष में केवल एक बार)
- इनको माताजी का सौम्य रूप माना जाता है। यह शक्ति का रूप नहीं है इसलिए केवल चैत्र माह (नवरात्रा) में ही मेला लगता है।
- इनके मन्दिर के सामने ''बोहरा भक्त की छतरी'' है जहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

सकराय माता

- मुख्य मन्दिर :– उदयपुरवाटी (नीम का थाना)
- अन्य नाम :– शाकम्भरी माता
- ये ''चौहानों की ईष्ट देवी'' है।
- ये ''खण्डेलवालों की कुलदेवी'' है।
- अन्य मन्दिर :–
    1. सांभर (जयपुर)
    2. सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

आशापुरा माता

- **मुख्य मन्दिर :–**
    1. नाडौल –(पाली) (नाडौल के लक्ष्मणराज चौहान ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था।)
    2. मोदरा (जालौर)
- ये चौहानों की कुल देवी है तथा बिस्सा ब्राह्मणों की भी कुल देवी है।
- इनकी पूजा करने वाली महिलाएँ पूजा करते समय हाथों में मेहन्दी नहीं लगाती तथा पूजा करते समय घूँघट निकालती है।

तनोट माता

- मुख्य मन्दिर :– तनोट (जैसलमेर)
- BSF के जवान इनकी पूजा करते है।
- इन्हें ''थार की वैष्णो देवी'' तथा ''रूमाल की देवी'' भी कहा जाता है।

स्वांगिया माता

- मुख्य मन्दिर :– भादरिया (जैसलमेर)
- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी है।
- प्रतीक :– सुगन चिड़ी(राजचिह्न–सुगन चिड़ी के हाथ में मुड़ा हुआ भाला।)
- स्वांग का शाब्दिक अर्थ – भाला (Javelin)
- भादरिया में विश्व का सबसे बड़ा भूमिगत पुस्तकालय है।

आवड़ माता

- मुख्य मंदिर – जैसलमेर
- भाटी राजवंश की ईष्ट देवी।
- आवड़ माता को स्वांगिया माता का रूप माना जाता है।

आई माता

- मुख्य मंदिर :– बिलाड़ा (जोधपुर)
- ''सिरवी समाज की कुल देवी'' है।
- इनके मुख्य मन्दिर को वडेर तथा अन्य मन्दिर को दरगाह कहा जाता है।
- इनके मुख्य मंदिर के दीपक की ज्योति से केसर टपकती है।
- आई माता 'रामदेवजी की शिष्या' थी। अतः इन्होने भी छूआछूत दूर करने तथा हिन्दु–मुस्लिम एकता स्थापित करने के प्रयास किये थे।

सच्चियाय माता

- मुख्य मन्दिर :– ओसियां (जोधपुर ग्रामीण)
- ओसवाल समाज (बनिया) की कुल देवी
- इस मन्दिर का निर्माण गुर्जर प्रतिहार शासक ने ''महामारू शैली'' में करवाया था।
- ओसियां के अन्य मंदिर–
    - पीपल माता मंदिर
    - सूर्य मंदिर
    - हरिहर मंदिर
    - महावीर मंदिर।

राणी सती

- वास्तविक नाम :– ''नारायणी देवी''
- मुख्य मन्दिर :–झुन्झुंनू
- अपने पति ''तनधनदास अग्रवाल'' के साथ सती हुई थी।
- इन्हें दादी सती भी कहा जाता है।
- मेलें–

  1. सती अमावस्या – भाद्रपद अमावस्या

नारायणी देवी

- मुख्य मंदिर –बरवा पहाड़ी (अलवर)
- ''नाई जाति की कुल देवी''
- मीणा जाति के लोग भी इनकी पूजा करते है।

सुंधा माता

- जालौर में भीनमाल के पास जसवन्तपुरा की पहाड़ियों में चामुण्डा माता का मन्दिर बना हुआ है जिन्हें हम सुंधा माता के नाम से जानते है (सुंधा पहाड़ी पर बसे होने के कारण)
- यहाँ पर राजस्थान का प्रथम रोप वे (रज्जुमार्ग) स्थापित किया गया। (2006)
- जालौर के चौहान राजा चाचिग देव ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।
- यहां पर भालू अभयारण्य स्थापित किया गया।

चामुण्डा माता

- जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में मुख्य मन्दिर है।
- यह मंडोर के प्रतिहारों की प्रमुख देवी थी।
- कालांतर में राव जोधा इस मूर्ति को मेहरानगढ़ लाए थे।
- यहाँ पर 30 सितम्बर 2008 के दिन दुर्घटना हो गई थी जिसे मेहरानगढ़ दुखान्तिका के नाम से जाना जाता है जिसकी जाँच के लिए 'जसराज चोपड़ा आयोग' बनाया गया था

शीतला माता

- मुख्य मंदिर – चाकसू (जयपुर ग्रामीण)
- निर्माण –जयपुर महाराजा माधोसिंह प्रथम द्वारा।
- कुम्हार जाति के लोग पुजारी होते है।
- इन्हें ''चेचक रक्षक देवी'' के रूप में पूजा जाता है।
- बाँझ महिलाएँ सन्तान प्राप्ति के लिए इनकी पूजा करती है।
- एकमात्र देवी जिनकी खण्डित मूर्ति की पूजा की जाती है।
- इनका वाहन :– गधा।

आवरी माता

- मुख्य मंदिर – निकुम्भ (चित्तौड़गढ)
- यहाँ पर ''लकवाग्रस्त व्यक्ति का इलाज'' किया जाता है।

बड़ली माता

- मुख्य मन्दिर – आकोला (चित्तौड़गढ)
- यहाँ 2 तिबारियां बनी हुई है।
- जहाँ पर छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

महामाया

- मावली (उदयपुर) में मंदिर है।
- यहाँ पर भी छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।
- इन्हें शिशु रक्षक देवी कहा जाता है।

अम्बिका माता

- मुख्य मन्दिर – जगत (उदयपुर)
- इस मन्दिर को ''मेवाड़ का खजुराहों'' कहा जाता है।(खजुराहों के मन्दिर मध्यप्रदेश में है जिन्हें चन्देल वंश के राजाओं ने बनवाया था।)

भदाणा माता

- मुख्य मन्दिर – कोटा (तंत्र–मंत्र से बचाने वाली माता)
- मूठ पीड़ित व्यक्तियों का इलाज किया जाता है। (जादू टोना)

ब्राह्मणी माता

- मुख्य मन्दिर – सोरसन (बारां)
- एकमात्र देवी जिनकी ''पीठ की पूजा'' की जाती है।
- यहाँ पर भी ''गधों का मेला'' (माघ शुक्ल सप्तमी) लगता है।

त्रिपुर सुन्दरी

- मुख्य मन्दिर –उमराई,''तलवाड़ा (बाँसवाडा)''
- इन्हें ''तुरताई माता'' भी कहा जाता है।
- लौहार जाति के लोग इनकी पूजा करते है।

ज्वाला माता

- मुख्य मन्दिर – जोबनेर (जयपुर)
- खंगारोतों (कच्छवाहों) की ईष्ट देवी''

छींक माता

- मुख्य मन्दिर – जयपुर
- माघ शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है।

नकटी माता

- मुख्य मन्दिर – जय भवानीपुरा (जयपुर)
- इनकी नाक टूटी हुई है।

कैवाय माता

- मंदिर–किणसरिया (डीडवाना–कुचामान)
- यह 'दहिया' राजपूतों की कुल देवी है।
- चौहान राजा दुर्लभ राज के शासन काल में 'चच्च दहिया' ने मंदिर का निर्माण करवाया था।

दधिमती माता

- मुख्य मन्दिर – गोठ मांगलोद (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी।

भंवाल माता

- मुख्य मंदिर – भंवाल, मेड़ता (नागौर)
- इन्हें 2½प्याला शराब चढ़ाई जाती है।

मरकण्डी माता

- मुख्य मंदिर – निमाज (पाली)

क्षेमकरी माता

- मुख्य मंदिर– भीनमाल (जालौर)
- इन्हें खीमेल माता भी कहा जाता है।

हर्षद माता

- मुख्य मंदिर–**आभानेरी** (दौसा)
- मूलतः यह एक विष्णु मंदिर है।
- प्रतिहार शासनकाल में चौहान सामंतों ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था।
- मंदिर के सामने चांदबावड़ी बनी हुई है।

जिलाणी माता

- मुख्य मंदिर – अलवर

घेवर माता

- मुख्य मंदिर– राजसमन्द (राजसमन्द झील की नींव लगाई थी)

राजेश्वरी माता

- मुख्य मंदिर– भरतपुर (भरतपुर के राजवंश (जाट) की कुल देवी)

लटियाल माता

- मुख्य मन्दिर :– फलौदी
- कल्ला ब्राह्मणों की कुल देवी
- अन्य नाम– खेजड़ी बेरी राय भवानी।

कंठेसरी माता

- आदिवासियों की कुल देवी।

आमज माता

- मंदिर – रींछेड (राजसमंद)
- भील जनजाति के लोग इनकी पूजा करते है।

नागणेची माता

- मुख्य मंदिर – नागाणा (बालोतरा)
- अन्य नाम – चक्रेश्वरी माता।
- राव धूहड़ जी इस मूर्ति को कर्नाटक से लेकर आए थे।
- राठौड़ वंश की कुलदेवी ,
- राव जोधा ने मेहरानगढ़ में नागणेची माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- राव बीका ने बीकानेर में नागणेची माता मंदिर का निर्माण करवाया।
- अठारह भुजाओं वाली देवी।

माता राणी भटियाणी

- जन्म – जोगीदास (जैसलमेर)
- मुख्य मंदिर – जसोल (बालोतरा)
- अन्य नाम – भुआसा।
- यहां लाल सिंह (पुत्र) का मंदिर भी बना हुआ है।
- मेला – भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
- ढोली जाति के लोग इनकी पूजा करते है।

जमवाय माता

- मुख्य मंदिर :–जमवारामगढ़
- यह कच्छवाह राजवंश की कुलदेवी है।

- कच्छवाह राजा दुल्हेराय ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।

शीला माता

- आमेर की कच्छवाह वंश की ईष्ट देवी हैं
- आमेर के राजा मानसिंह ने पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर वहां से यह मूर्ति लाकर आमेर में स्थापित की।

ब्रहमाणी माता

- मुख्य मंदिर –पल्लू , (हनुमानगढ़)
- इस मंदिर में कालिका माता की भी मूर्ति है।

बाण माता

- मेवाड़ के गुहिल वंश की कुलदेवी है।

बरवड़ी माता

- मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह सिसोदिया ने इस मंदिर का निर्माण करवायां
- यह मेवाड़ के सिसोदिया वंश की ईष्ट देवी हैं
- अन्य नाम– अन्नपूर्णा माता।

धोलागढ़ देवी

- मुख्य मंदिर – बहतुकलां (अलवर)
- मेला – वैशाख कृष्ण पंचमी से एकादशी तक।

जल देवी

- मुख्य मंदिर – सांसेरा (राजसमंद)

पिप्लाद माता

- मुख्य मंदिर – ऊनवास (राजसमंद)

अर्बुदा माता

- मुख्य मंदिर – माउण्ट आबू, सिरोही।
- अन्य नाम – अधर देवी

हिंगलाज माता

- मुख्य मंदिर – लासवेला (पेशावर, पाकिस्तान)

राजस्थान के लोकगीत

✓ कवि रवींद्र नाथ टैगोर ने लोक गीतों को संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है।

✓ गाँधीजी के शब्दों में लोकगीत ही जनता की भाषा है, लोकगीत हमारी 'संस्कृति के पहरेदार' है।

❖ **राजस्थान लोक गीतों को तीन भागों में बांटा जा सकता है –**

1. जन सामान्य के लोक गीत
2. व्यावसायिक लोक गीत
3. क्षेत्रीय लोक गीत

1. जन साधारण के लोक गीतः–

● ये गीत जन सामान्य द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये जाते है। इन्हे पांच भागों में बांटा जा सकता है–

1. संस्कार सम्बंधित लोक गीत

मायरा, हल्दी, घोड़ी, बन्ना–बन्नी, घुडचढ़ी, जुआ–जुई, जच्चा, सगाई,बधावा, चाकभात, रातिजोगा, तोरण, हथलेवा, कंवर कलेवा, जीमणवार, कांकणडोरा, जला, बिंदौला, इत्यादि।

2. त्योहार सम्बंधित लोक गीत

हीड़ (दीपावली पर), धमाल/रसिया (होली पर), तीज, गणगौर, होरी, हीड़ इत्यादि।

3. ऋतु सम्बंधित लोक गीत

उनालो, सियालो, कजली, चौमासा, फाग, बारहमासा, चेती, पपियो, बदली, मोर इत्यादि।

4. धार्मिक लोक गीत

लांगुरिया, तेजा, हवेली, लावणी,

हरजस (निर्गुण भक्ति के गीत), चिंरजा (लोक देवियों के भंजन)

5. विविध लोक गीत

कांगसियो, इंडोणी, पणिहारी, लूर, ओळूं, सुपणा, हिचकी, मूमल, कुरजां, काजलिया, कागा, गोरबंद (यह ऊंट के गले का आभूषण होता है) इत्यादि।

बच्चों के क्रीड़ा गीत, जादू–टोने से संबंधित कामण गीत।

2. व्यावसायिक लोक गीत

- राजस्थान की कई जातियों तथा जनजातियों ने संगीत को व्यवसाय के रूप में अपना लिया था।
- राजतंत्रों के प्रभाव के कारण इन लोकगीतों में राजाओं की प्रशंसा की जाती है।
- इन गायकों द्वारा कई संगीत रागों का विकास किया गया था।
- व्यावसायिक संगीत जातियाँ– लंगा, मांगणियार, ढोली, ढ़ाढी, मिरासी, कालबेलिया,कलावात, भाट, राव, जोगी, कामड़, वैरागी, गंधर्व, भोपे, भवाई, राणा, कथिक आदि।
- इन गीतों में मांड, देस, सोरठ, मारू, परज, कालिंगड़ा, जोगिया, आसावरी, बिलावल, पीलू, खमाज आदि कई रागों पर छाया प्रतिबिम्बित होती है।
- व्यावसायिक जातियों द्वारा युद्ध के समय गाये जाने वाले वीर रसात्मक गीत सिंधु और मारू रागों पर आधारित है।
- संगीत राग– मांड (जैसलमेर में विकसित)
  सोरठ (गुजरात के सौराष्ट्र से)
  सिन्धु व मारू (युद्ध कालीन)

3. क्षेत्रीय लोक गीत

इन्हे मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है –

1. **मरुस्थलीय लोक गीत –**
   - क्षेत्र – बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर,फलौदी।
   - गीत–पीपली, चिरमी, केवड़ों, पणिहारी, मूमल, घूघरी, केवड़ा, कुरजां, रतनराणों।
2. **पर्वतीय लोक गीत –**
   - क्षेत्र – उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौडगढ़, सिरोही।
   - गीत –पटेल्या, बिछियो, लालर, माछर, नोखीला, थारी, ऊंटारी री असवारी, नाव री असवारी, शिकार, हमसीढों इत्यादि।
   - इनमे सामूहिक लोक गीतों का प्रचलन अधिक है। (महिला व पुरुष)
   - इनमे जनजातीय लोक गीत अधिक है।
   - वाद्य यंत्र मुख्यतः मांदल प्रयोग में लिया जाता है।
3. **मैदानी लोक गीत –**
   - क्षेत्र – जयपुर, जयपुर ग्रामीण, कोटा, बूंदी, अलवर,तिजारा–खैरथल, भरतपुर,डीग
   - गीत – भक्ति, श्रृंगार, वियोग तथा शांत रस के गीत।

प्रमुख लोकगीत

1. **केसरिया बालम–**
   - ❖ राजस्थान का राज्य गीत जो ''मांड गायन शैली'' में गाया जाता है।
   - ❖ इसमें पत्नी परदेस गए अपने पति को वापस बुलाती है।
2. **मोरियो–**
   - ❖ ऐसी लड़की द्वारा गाया जाने वाला गीत जिसकी सगाई तो हो चुकी है लेकिन विवाह होना बाकी है।
3. **कुरजां–**
   - ❖ इसमें पत्नी कुरजां पक्षी के माध्यम से परदेस गए अपने पति के पास सन्देश भेजती है।
   - ❖ कुरजां – साइबेरियन सारस
4. **सुवटियो–**
   - ❖ भील महिलाओं द्वारा तोते के माध्यम से अपने पति के पास सन्देश भेजा जाता है।
5. **कागा–**
   - ❖ कौए को उड़ाकर महिला अपने परदेस गए पति के वापस आने का शगुन मनाती है।
6. **हिचकी–**
   - ❖ मेवात क्षेत्र का एक लोकगीत है जो किसी की याद आने पर गाया जाता है।
7. **बिच्छूड़ो–** हाड़ौती क्षेत्र का लोकगीत
8. **कामण –**
   - ❖ दूल्हे को जादू–टोने से बचाने के लिए गाये जाने वाला गीत।
9. **बधावा –**
   - ❖ किसी शुभ काम के पूरा हो जाने पर गाये जाने वाला लोकगीत।
10. **सीठणे –**
    - ❖ शादी के समय महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गालियों वाले गीत।
11. **पावणा –**
    - ❖ दामाद के ससुराल आने पर गाये जाने वाला गीत।
12. **झोरावा –**
    - ❖ जैसलमेर क्षेत्र का लोक गीत जो किसी की याद में गाया जाता है।
13. **ढोला–मारु :**
    - ❖ सिरोही क्षेत्र का एक लोक गीत जो ढोला मारु की प्रेम कहानी पर आधारित है।
    - ❖ ढाढ़ी जाति के गायकों द्वारा गाया जाता है।

14. ओल्यू/कोयल –

- लड़की की विदाई के समय गाया जाने वाला गीत

15. पीपली :–

- पत्नी अपने परदेस गए पति को याद करती है।तथा उसको वापस आने को कहती है। शेखावाटी व मारवाड़ में तीज के समय ये गीत गाया जाता है।

16. चिरमी :–

- ससुराल में रह रही लड़की चिरमी पौधे के माध्यम से अपने पीहर वालों को याद करती है।

17. हमसीढ़ों:– भील जनजाति द्वारा महिला तथा पुरुष द्वारा मिलकर गाया जाता है।

18. गोरबंद :– ऊँट के गले का आभूषण बनाते समय महिला यह गीत गाती है।

19. पणिहारी :– पानी ले जाने वाली महिला, पतिव्रता महिला का लोकगीत।

राजस्थान की लोक गायन शैलियाँ

1. मांड –

- प्राचीन समय में ''जैसलमेर क्षेत्र'' को मांड कहा जाता था। अतः यहां विकसित लोकगायन शैली मांड गायकी कहलाती है जो कालांतर में सम्पूर्ण राजस्थान में लोकप्रिय हुई।
- **प्रमुख गीत– केसरिया बालम**
- **प्रमुख मांड गायिकाएं–**
  - अल्लाह जिलाई बाई } बीकानेर
  - गवरी बाई } बीकानेर
  - गवरी बाई – पाली
  - जमीला बानो – जोधपुर
  - बन्नो बेगम – जयपुर
  - मांगीबाई – उदयपुर

बतूल बेगम–जयपुर की मांडगायन शैली की कलाकार (नारी शक्ति पुरस्कार 2022)

2. मांगणियार –

- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में मांगणियार जाति द्वारा विकसित लोकगायन शैली है।
- **प्रमुख वाद्य यंत्र–**

- कमायचा – साकर खान मांगणियार

- खड़ताल – सद्दीक खान मांगणियार
- सद्दीक खाँ मांगणियार लोक कला अनुसंधान परिषद् (2003)– जयपुर
- अनवर खाँ मांगणियार – पद्मश्री (2022)

3. **लंगा**–

❖ जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में लंगा जाति द्वारा विकसित लोक गायन शैली।

❖ **मुख्य वाद्य यंत्र**–कमायचा, सारंगी।

❖ **मुख्य गीत**–निम्बुड़ा (गर्भवती महिला द्वारा गाया जाने वाला गीत)

4. **तालबंदी**–

❖ जब औरंगजेब ने संगीत पर रोक लगा दी थी तब मथुरा क्षेत्र के साधु सन्यासी पूर्वी राजस्थान आ गए थे।

❖ **मुख्य वाद्य यंत्र**– नगाड़ा

राजस्थान के संगीत घराने

घराना	**संस्थापक**	**अन्य कलाकार**
जयपुर (ख्याल गायन शैली)	भूपत खाँ (मनरंग)	मोहम्मद अली खान कोठी वाले (हररंग)
पटियाला (जयपुर घराने की शाखा)	अली बक्श (आलिया) फतेह अली (फत्तू) टोंक के नवाब ने इन्हें उपाधि दी थी– (जनरल–कर्नल)	गुलाम अली खान (बाद में पाकिस्तान चले गये)
अतरौली (जयपुर घराने की शाखा)	साहब खां	मानतौल खान (रुलाने वाले फकीर)
मेवाती	घग्घे नजीर खां	पंडित जसराज
किराना	बन्दे अली खां	1. भीमसेन जोशी 2. रोशन आरा बेगम 3. गंगू बाई हंगल 4. उस्ताद रज्जब अली
डागर(ध्रुपद घराना)	बहराम खान डागर (जयपुर महाराजा रामसिंह द्वितीय के दरबारी संगीतकार)	
बीनकार(वीणा घराना)	रज्जब अली खान बीनकार	

	(जयपुर महाराजा रामसिंह द्वितीय के दरबारी संगीतकार)	
अल्लादियां खां	अल्लादियां खां	किशोरी अमोनकर
सेनिया घराना (सितार घराना)	सूरत सेन	अमृत सेन
रंगीला घराना	रमजान खान	
कत्थक घराना	भानू जी	

नोट :– शेष सभी घराने सितार घराने से संबंधित है।

डॉ. मधुभट्ट तेलंग पहली महिला ध्रुपद गायिका है।

संगीत ग्रंथ

- ❖ **श्रृंगार हार** :–हम्मीर चौहान (रणथम्भौर)
- ❖ **संगीतराज** :– राणा कुंभा।

  संगीतराज के पांच भागः–

  1. पाठ्य रत्न कोष
  2. गीत रत्न कोष
  3. वाद्य रत्न कोष
  4. नृत्य रत्न कोष
  5. रस रत्न कोष
- ❖ **रागमाला, रागमंजरी, रागचंद्रोदय, नर्तन निर्णयः–**पुंडरीक विट्ठल (मानसिंह के दरबारी विद्वान)
- ❖ **संगीतराज, अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत सारः–** भाव भट्ट (अनूपसिंह,बीकानेर के दरवारी विद्वान)
- ❖ **रागकल्पद्रुम** :– कृष्णानंद व्यास
- ❖ **रागचंद्रिका** :– द्वारिका नाथ भट्ट (सवाई प्रताप सिंह,जयपुर के दरबारी विद्वान)
- ❖ **स्वरसागर** :– चांद खां (सवाई प्रताप सिंह,जयपुर के संगीत गुरू,इन्हें बुद्धप्रकाश की उपाधि दी।)
- ❖ **रागरत्नाकर** :– राधाकृष्ण (उनियारा सामंत भीमसिंह के दरबारी विद्वान),उनियारा –जयपुर का प्रथम श्रेणी ठिकाना था।

नोटः–

1. सवाई प्रताप सिंह ने जयपुर में संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाया। जिसकी अध्यक्षता देवर्षि बृजपाल भट्ट ने की। संकलित पुस्तक 'राधा गोविन्द संगीत सार' लिखी।
2. प्रताप सिंह 'बृजनिधि' के नाम से कविताएं लिखते थे।

लोक नृत्य

- राजस्थान के लोक नृत्य दो प्रकार के होते है
  1) क्षेत्रीय लोक नृत्य
  2) जनजातिय लोक नृत्य

❖ क्षेत्रीय लोक नृत्य–

1. **घूमर–**
- यह राजस्थान का राज्य नृत्य है।
- इसे राजस्थान के नृत्यों की आत्मा तथा नृत्यों का सिरमौर कहा जाता है।
- इसमे महिलाएँ अपनी धुरी पर घूमती है तथा केवल हाथो का लचकदार प्रदर्शन किया जाता है। लहंगे के घूम के कारण इसका नाम घूमर पड़ा।
- यह रजवाड़ी नृत्य है।
- केवल महिलाओं द्वारा तीज त्योहार व अन्य अवसर पर किया जाता है ।
- इसमें 8 चरणो को सवाई कहा जाता है
- मुख्य वाद्य यंत्र – ढ़ोल, नगाड़ा, शहनाई

2. **कच्छी घोड़ी–**
- शेखावटी क्षेत्र मे पुरुषों द्वारा किया जाने वाला व्यावसायिक लोक नृत्य है।
- इसे चार–चार पुरुष 2 पंक्तियों मे नृत्य करते है
- नृत्य करते समय फूल के खिलने तथा मुरझाने का दृश्य प्रतीत होता है।
- पुरुषों को लकड़ी की घोड़ी बाँधी जाती है।
- इस नृत्य के दौरान नकली लड़ाई का दृश्य प्रकट होता है।
- मुख्य वाद्य यंत्र– बांकिया, ढोल, थाली, झांझ

3. **अग्नि नृत्य–**
- यह जसनाथी संप्रदाय के लोगो द्वारा किया जाता है
- प्रमुख केंद्र– कतरियासर (बीकानेर)
- विशेषताएँ–
  – जलते हुए अंगारो (मतीरा) पर नृत्य करते है
  – 'फतै – फतै' की ध्वनि का प्रयोग
- कृषि क्रियाएँ की जाती है।
- बीकानेर महाराजा गंगा सिंह द्वारा प्रोत्साहन दिया गया।
- वर्तमान में यह व्यावसायिक नृत्य हैं।

4. **ढ़ोल नृत्य–**

- प्रचलन– जालौर क्षेत्र
- शैली– थाकना शैली
- ढोली, माली, सरगड़ा, भील जाति के पुरुषो द्वारा किया जाता है
- जय नारायण व्यास ने ढोल नृत्य को प्रोत्साहन दिया था।

5. **घुड़ला नृत्य–**

- जोधपुर मे महिलाओं द्वारा शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर के मध्य यह नृत्य किया जाता है
- इसे राजा सातल की याद में किया जाता था, जिसने घुड़ले खान को मारा था।
- महिलाएँ सिर पर छिद्रित मटका (घुड़ले खां प्रतीक) रखकर नाचती है
- मटके मे जलता हुआ दीपक रखा जाता है
- मणिशंकर गांगुली , कोमल कोठारी, तथा देवी लाल सामर ने इस नृत्य को प्रोत्साहित किया।
- कोमल कोठारी को 2 बार पद्म पुरस्कार दिया जा चुका है
- कोमल कोठरी ने विजय दान देथा के साथ मिलकर 1960 मे बोरुंदा जोधपुर मे रूपायन संस्थान की स्थापना की।
- देवीलाल सामर ने 1952 मे उदयपुर मे भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना की जो कठपुतली खेल के लिए जाना जाता है।

6. **तेरह ताली–**

- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय यह नृत्य किया जाता है
- अब यह व्यवसायिक हो गया है
- इसमें कुल 13 मंजीरे होते है 9 मंजीरे दायें पैर मे तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बांधकर एवं 2 मंजीरे हाथ मे लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है
- नृत्य करते समय महिलाएं करतब दिखाती है
- वाद्य यंत्र– तानपुरा, चौतारा
- मुख्य केंद्र– पादरला (पाली)
- मुख्य कलाकार– मांगी बाई

7. **चरी नृत्य–**

- किशनगढ़ क्षेत्र मे गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं
- महिलाएँ सिर पर चरी रखकर नाचती है

✍ चरी में जलते हुए कपास के बीज रखे जाते है

✍ मुख्य कलाकार– फलकु बाई

8. **भवाई नृत्य–**

✍ उदयपुर संभाग मे भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं।

✍ इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते है ।

✍ वर्तमान में यह व्यावसायिक नृत्य है।

✍ प्रर्वतक – बाघजी, रूपसिंह, दयाराम, तारा शर्मा।

✍ विशेषताएँ–

–तलवार पर नाचना

–अंगारों पर नाचना

–सिर पर 7–8 मटके रखकर नाचना

9. **गीदड़ नृत्य–**

✍ यह नृत्य शेखावटी क्षेत्र मे होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाता है।

✍ गोल घेरों मे पुरुष डंडे टकराते हुए यह नृत्य करते है ।

✍ जो पुरुष महिलाओं के कपड़े पहन कर नाचता है उसे 'गणगौर/मेहरी' कहा जाता है।

✍ मुख्य वाद्य यंत्र– नगाड़ा

10. **बम नृत्य–**

✍ भरतपुर क्षेत्र मे पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।

✍ मुख्य वाद्य यंत्र– नगाड़ा (इसे ही बम कहा जाता है)।

✍ इसमें गाये जाने वाले गीत को रसिया कहा जाता है, अतः इस नृत्य को बम रसिया भी कहा जाता है।

✍ वाद्य यंत्र –ढोल, थाली, चिमटा।

✍ इसके तीन समूह होते है

1. नृतक/गायक
2. ध्वजवाहक
3. वाद्य यंत्र वादक।

11. **चंग नृत्य–**

✍ होली के अवसर पर शेखावटी क्षेत्र में किया जाता है।

12. **बिंदोरी नृत्य–**

✍ यह होली के अवसर पर झालावाड़ क्षेत्र में किया जाता है।

13. **डांग नृत्य–**

- होली के अवसर पर नाथद्वारा क्षेत्र में किया जाता है।

जनजातीय लोक नृत्य

भील	गरासिया	कालबेलिया	कंजर	कथौड़ी	मेव	सहरिया
गैर	वालर	चकरी	चकरी	मावलिया	रणबाजा	शिकारी
गवरी	मांदल	शंकरिया	धाकड़	होली	रतवई	
युद्ध	लूर	बगड़िया				
द्‌विचक्री	कूद	पणिहारी				
नेजा	जवारा	इंडोणी				
घूमरा	मोरिया					
हाथीमना	गौर					

भील जनजाति के नृत्य–

1) **गैर–**

- मेवाड़ क्षेत्र मे भील जनजाति का लोक नृत्य
- यह लोक नृत्य मारवाड़ मे भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाति, धर्म के लोग शामिल होते है
- गोल घेरे मे डंडे टकराते हुए पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- मुख्य केंद्र– कनाना (बालोतरा)
- नृत्य मे पहने जाने वाले कपड़े – ओंगी वस्त्र
- वाद्य यंत्र –ढोल, बांकिया, थाली।

2) **गवरी–**

मेवाड़ मे भील पुरूषों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य रक्षा बंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है इसे 'राई नृत्य' भी कहा जाता है।

3) **युद्ध–**

इसे तलवार व भाले के साथ किया जाता है।

4) **द्विचक्री–**

इसे दो चक्र बनाकर किया जाता है। (महिला व पुरुष)

5) **नेजा–**

- यह भील तथा मीणा दोनों जनजातियों से संबन्धित नृत्य है।
- इसमें महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते है।

A-1 Keshav Vihar, Riddhi-Siddhi Chouraha, Gopalpura Bypass,
Jaipur- 302018Mob.: 9636977490, 8955577492
Springboard ACADEMY

- इसमें लकड़ी के एक डंडे पर नारियल बांध दिया जाता है, महिलाएँ इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरुष इसे उतारने का प्रयास करते है।

6) **घुमरा–**

बांसवाड़ा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है।

7) **हाथीमना–**

विवाह के अवसर पर पुरुषों द्वारा घुटनों के बल बैठ कर नृत्य किया जाता है।

गरासिया जनजाति के नृत्य–

1) **वालर–**

- इसे बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है।
- विवाह के दौरान महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते है
- नृत्य करते समय 2 वृत बनाए जाते है।

2) **मांदल–**

इसे मांदल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है।

3) **लूर–**

- लूर गोत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते है।
- इसमें वर पक्ष की महिलाएँ वधू पक्ष से कन्या की मांग करती है।

4) **कूद–**

यह बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर किया जाने वाला नृत्य है। (महिला व पुरुष)

5) **जवारा–**

गरासिया महिलाओं द्वारा होलिका दहन के समय हाथों मे ज्वार लेकर यह नृत्य किया किया जाता है।

6) **मोरिया–**

यह विवाह के समय गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

7) **गौर–**

यह गणगौर के समय किया जाने वाला नृत्य है।

आबू क्षेत्र में किया जाता है (महिला पुरुष)

कालबेलिया जनजाति के नृत्य–

1) **चकरी–**

महिलाएं गोलाकार मुद्रा मे तेज–तेज नृत्य करती है।

मुख्य कलाकार– गुलाबों

2) **शंकरिया–**

प्रेम कहानी पर आधारित कालबेलिया युगल नृत्य।

3) **बगड़िया–**

✍ भीख माँगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा किए जाने वाला नृत्य है।

✍ मुख्य वाद्य यंत्र– पुंगी ,खंजरी

4) **इंडोणी –**

✍ महिलाओं द्वारा आकर्षक पोशाक पहनी जाती है।

✍ वाद्य यंत्र – पुंगी , बींन, खंजरी, घुरालिया, डफ, अलगोजा।

5) **पणिहारी –**

✍ यह युगल नृत्य है।

✍ कालबेलिया नृत्य युनेस्को की हेरिटेज लिस्ट(2010) में शामिल है।

✍ कालबेलिया नृत्य प्रशिक्षण के लिए हाथी गाँव (आमेर) मे प्रशिक्षण स्कूल खोला गया है।

कंजर जनजाति के नृत्य–

1) **चकरी–**

इसे महिलाओं द्वारा किया जाता हैं।

इस नृत्य को करते समय महिलाएं खुसनी नामक वस्त्र पहनती है।

2) **धाकड़–**

इसे कंजर पुरुषों द्वारा किया जाता है।

यह नृत्य वीरा और झालापाव युद्ध की याद में किया जाता है।

कथौड़ी जनजाति के नृत्य–

1) **मावलिया–**

पुरुषों द्वारा नवरात्र के समय किया जाता है।

वाद्य यंत्र – ढोलक, बाँसुरी, टापरा।

2) **होली–**

✍ इसे महिलाओं द्वारा होली के समय किया जाता है।

✍ नृत्य के दौरान महिलाओं द्वारा पिरामिड का निर्माण किया जाता है।

✍ महिलाएँ फड़का साड़ी पहन कर नृत्य करती है।

✍ वाद्य यंत्र – ढोलक, पावटी, धारियां, बाँसुरी।

मेव जनजाति के नृत्य :–

1. रणबाजा–:

- यह पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- वाद्य यंत्र – झांझ, तुरई।

2. रतवई –:

- यह नृत्य महिलाओं द्वारा हाथों में हरी रंग की चूड़ियां पहनकर किया जाता है।
- इसमें वाद्य यंत्र पुरुषों द्वारा बजाया जाता है।
- वाद्य यंत्र – दमामा।

राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में छठां स्थान है।

Ist – मध्यप्रदेश		IInd –	उड़ीसा
IIIrd – महाराष्ट्र		IVth –	गुजरात
Vth – छत्तीसगढ़		VIth –	राजस्थान

☞ राजस्थान में जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या 'उदयपुर' में है।
☞ जनजाति का सर्वाधिक प्रतिशत 'बांसवाड़ा' में है।
☞ जनजाति की न्यूनतम जनसंख्या – बीकानेर
☞ न्यूनतम प्रतिशत – 'नागौर'
☞ जनसंख्या अनुसार जनजातियों की स्थिति–

1. मीणा
2. भील
3. गरासिया

1. कंजर जनजाति–

☞ कंजर शब्द की उत्पति काननचार से हुई हैं, जिसका अर्थ है– जंगल में विचरण करने वाला।
☞ कंजर जनजाति मुख्यतः हाड़ौती क्षेत्र में निवास करती है।
☞ कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय 'अपराध करना' है।
☞ अपराध करने से पहले भगवान से आशीर्वाद मांगते है, जिसे 'पाती मांगना' कहते है।

इनके देवताः–

(i) जोगणिया माता :– कंजरों की कुलदेवी जिनका चितौड़गढ़ में मंदिर है।
(ii) चौथ माता – सवाई माधोपुर
(iii) रक्त दंजी माता– संतूर (बूँदी)
(iv) हनुमान जी

☞ इनके घरों में पीछे की ओर खिड़की अनिवार्य होती है।
☞ हाकम राजा का प्याला पीने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
☞ मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है।
☞ ये शव को दफनाते है।
☞ मोर का मांस इन्हें बेहद प्रिय होता है।
☞ इनके मुखिया को 'पटेल' कहते है।
☞ इनके नृत्य – चकरी, धाकड़

2. कथौड़ी जनजाति

☞ मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है।
☞ खैर के वृक्ष से कत्था बनाते थे, इसलिए कथौड़ी कहलाये।
☞ राजस्थान के उदयपुर जिले में सबसे ज्यादा निवास करते है।
☞ कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
☞ इन्हें शराब बेहद प्रिय है। महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर शराब पीती है।
☞ महिलाएं गहने नहीं पहनती हैं।
☞ महिलाएं गोदना गुदवाती (टेटू) है।
☞ कथौड़ी जनजाति का मुखिया 'नायक' कहलाता है।
☞ इनके झोंपडे को 'खोलरा' कहते है।
☞ कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है। तथा इनके केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।
☞ राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में विशेष लाभ देते हुए 250 दिन का रोजगार देती हैं।
☞ इनके देवताः डूँगरदेव, वाद्य यंत्र देव, गाम देव, भारी माता, कंसारी माता
☞ इन्हें बन्दर का मांस बेहद प्रिय होता हैं।
☞ नृत्य :– मावलिया, होली

3. डामोर जनजाति–

☞ मुख्यतः डूंगरपुर जिले में निवास करते हैं।
☞ डामोर अपनी उत्पत्ति राजपूतों से मानते है। इनके गौत्र चौहान, सिसोदिया, परमार आदि राजपूतों से समानता रखते है।
☞ डूंगरपुर की सीमलवाड़ा पंचायत समिति 'डामरिया क्षेत्र' कहलाती है।
☞ एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है, बल्कि ये खेती व पशु पालन करते हैं।
☞ इनमें बहुविवाह प्रथा प्रचलित है।
☞ वधु मूल्य चुकाकर दुल्हन प्राप्त की जाती है। इस वधू मूल्य को 'दापा' कहते है।
☞ इनके मुखिया को 'मुखी' कहा जाता है।
☞ होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाडिया' कहलाता है।
☞ **इनके मेलें :–**
छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
ग्यारस की रेवड़ी का मेला – डूंगरपुर
☞ इनकी भाषा पर गुजराती प्रभाव दिखाई देता है।
☞ पुरुष भी महिलाओं की भाँति गहने पहनते है।

4. साँसी–

☞ मुख्यतः भरतपुर क्षेत्र में निवास करते हैं।
☞ एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती है।
☞ इनकी दो उपजातियां होती हैः– बीजा, माला

☞ 'भाखर बावजी' की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते हैं। भाखर बावजी की कसम खाते समय एक हाथ में पीपल का पता व दूसरे हाथ में कुल्हाडी रखते हैं।

☞ 'सिकोदरी माता' इनकी मुख्य आराध्य देवी है।

☞ कुकड़ी रस्मः– लड़की को विवाह से पहले अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है।

5. गरासिया जनजातिः–(ग्रास–टुकड़ा)

☞ मुख्यतः सिरोही जिले के आबू और पिण्डवाड़ा, पाली की बाली तहसील व उदयपुर की गोगुंदा तहसील में निवास करते हैं।

☞ नक्की झील को पवित्र स्थान मानते है, व अस्थियों का विसर्जन करते हैं।

☞ मोर व सफेद पशु को पवित्र मानते हैं।

☞ इनका मुखिया 'सहलोत या पालवी' कहलाता है।

☞ इसमें संयुक्त परिवार की व्यवस्था नहीं होती है।

☞ प्रेम विवाह को अधिक वरीयता दी जाती है।

☞ सियावा गांव (सिरोही) के गणगौर मेले में अधिक प्रेम विवाह होते है।

☞ गरासिया महिलाएं श्रृंगार प्रिय व सुन्दरता के लिए जानी जाती है। (राजस्थान में सबसे सुन्दर)

☞ यह राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है। (मीणा–भील–गरासिया)

गरासिया जनजाति के विवाह के प्रकारः–

(i) मोरबंधिया

(ii) ताणना – पैसे देकर विवाह करना।

(iii) पहरावणा

(iv) मेलबो

(v) खेवणो (माता विवाह)– प्रेमी से विवाह करना

(vi) सेवा

पंचायत व्यवस्थाः

1. मोटी न्यात :– गरासियों को बाबोर हाइया कहते है।
2. नेनकी न्यात – मोडेरिया
3. निचली न्यात

☞ यदि कोई गरासिया पुरुष किसी भील महिला से शादी कर लेता है, तो उसे भील गरासिया कहते है।

☞ यदि कोई गरासिया महिला किसी भील पुरुष से शादी कर लेती है, तो उसे 'गमेती गरासिया' कहा जाता है।

☞ मेलें–

* कोटेश्वर मेला – अम्बाजी (गुजरात)
* चेतर–विचितर मेला – देलवाड़ा (सिरोही)

☞ किसी मृतक की याद में बनाये गये स्मारक को 'हूरे' कहा जाता है।

☞ ये भंडारण के लिए कोठियों का निर्माण करते है जिन्हें सोहरी कहा जाता है एवं घर के बाहर का बरामदा ओसरा कहलाता है।

☞ इनकी सहकारी संस्था – हेलरू

6. सहरिया जनजाति–

☞ सहरिया शब्द की उत्पत्ति फारसी भाषा के 'सहर' शब्द से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता हैं।

☞ बारां जिले के शाहबाद व किशनगंज तहसीलों में अधिक निवास करते हैं।

☞ एकमात्र जनजाति, जिसको भारत सरकार ने 'आदिम जनजाति' का दर्जा दे रखा है, अर्थात् आदिम जनजाति समूह में शामिल कर रखा है।

☞ त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्थाः

(i) पंचताई –5 गांव (ii) एकदसिया –11 गांव (iii) चौरासी –84 गांव

☞ चौरासी गांव की पंचायत सीताबाड़ी के 'वाल्मीकि मंदिर' में होती है।

☞ वाल्मीकि को ये अपना आदिपुरूष मानते है।

☞ 'कोडिया माता' इनकी कुलदेवी है।

☞ ये तेजाजी व भैरूजी की भी पूजा करते हैं।

☞ ये दहेज नहीं लेते है।

☞ मृतक व्यक्ति का श्राद्ध नहीं किया जाता है।

☞ ये युगल नृत्य नहीं करते है।

☞ महिलाएँ घर में पर्दा रखती है। घर से बाहर पर्दा प्रथा प्रचलन में नहीं है।

☞ महिलाएँ गोदना गुदवा सकती है, परन्तु पुरूषों को मनाही है।

☞ इनका मुखिया 'कोतवाल' कहलाता है।

☞ इनके बड़े गांव को 'सहरोल' तथा बस्ती को 'सहराना कहा जाता है।

☞ गांव के बीच में एक सामुदायिक केन्द्र होता है,उसे 'ढालिया/हथाई/बंगला' कहते हैं।

☞ पेड़ों के ऊपर घर बनाकर रहते हैं, उन्हें 'कोरूआ/टोपा/ गोपना' कहा जाता है।

☞ दीपावली पर हीड़ गाने की परम्परा है।

☞ होली पर लट्ठमार होली खेली जाती है।

☞ मकर सक्रांति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से 'लेगी' खेला जाता है।

☞ वर्षा ऋतु में आल्हा व लँहगी गीत गाते है।

☞ सहरिया जनजाति में 'धारी संस्कार' किया जाता है।

☞ मनरेगा में 100 दिनों का अतिरिक्त रोजगार दिया जाता है।

7. भील जनजाति–

☞ राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है

☞ भीलों की सर्वाधिक जनसंख्या उदयपुर में है।

☞ विलियम रोने के अनुसार मारवाड़ भीलों का उत्पति स्थल है। पुस्तक– वाइल्ड ट्राइब्स ऑफ इंडिया।

☞ राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। Ist – मीणा, IIIrd – गरासिया

☞ जेम्स टॉड भील शब्द की उत्पति बील से मानते है, जिसका अर्थ होता है– तीर कमान।

☞ भीलों के घरों को 'टापरा' या 'कू' कहते है।

☞ मोहल्ले को 'फला' कहा जाता है।

☞ गाँव का मुखिया पालवी या तदवी कहलाता है।

☞ पूरी भील जनजाति का मुखिया 'गमेती कहलाता है।

☞ इनका कुलदेवता – टोटम

☞ पेड़ पौधें को 'टोटम' का प्रतीक माना जाता है।

☞ पेड़ पौधें को साक्षी मानकर भील जनजाति में शादी कर ली जाती है। इसे 'हाथीवेण्डो–विवाह' कहते हैं।

☞ भील जनजाति बाल विवाह नहीं करती है।

☞ शादी के अवसर पर दामाद को ससुराल में भराड़ी माता का चित्र बनाना पड़ता है।

☞ भराड़ी माता को विवाह की देवी कहा जाता है।

☞ केसरिया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते है।

☞ भील जनजाति के लोग महुआ से बनी शराब पीते हैं।

☞ भील लोग अपने मृत पूर्वजों की आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करते है। इस कारण मृत व्यक्ति की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी प्रतिष्ठा की जाती है, जिसे चीरा बावसी कहते है।

☞ 'फाइरे–फाइरे' इनका रणघोष है।

☞ किसी घुड़सवार सैनिक को मारने वाला भील 'पाखरिया' कहलाता है।

☞ भीलों को तलाक देने को 'छेडा फाड़ना' कहते है।

☞ यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूष के साथ रहने लग जाती है, तो वह दूसरा पुरूष पहले पति को 'झगड़ा राशि' देता है।

☞ भील जनजाति द्वारा किया जाने वाला सामूहिक कार्य 'हेलमो' कहलाता है।

☞ भील स्थानान्तरित खेती करते हैं, जिन्हें 'वालरा (झूमिंग)' कहते है।

☞ वालरा दो प्रकार की होती है

1.चिमाताः– पहाड़ी भाग में की जाती है।

2.दजियाः– समतल भाग में की जाती है।

☞ भील जनजाति के दो मेले लगते हैः–

(i)बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर)

(ii)घोटिया अम्बा (बांसवाड़ा)–चैत्र अमावस्या

☞ घोटिया अम्बा में कुंती व पाँचों पाण्डवों के मंदिर बने हुए है।

- **ढेपाडाः–** भील पुरूषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती
- **खोयतुः–** भील पुरूषों द्वारा कमर में पहने जाने वाला एक वस्त्र है।
- **पिरियाः–** भील दुल्हन द्वारा शादी के अवसर पर पहने जाने वाली पीले रंग की साड़ी
- **सिंदूरीः–** भील महिलाओं की लाल रंग की साड़ी
- **परिजनीः–** भील महिलाओं द्वारा पैरों में पहनी जाने वाली पीतल की मोटी चूड़ियां।
- **कछाबुः–** भील महिलाओं द्वारा कमर में पहने जाने वाला एक वस्त्र।

8. मीणा जनजातिः–

☞ राजस्थान की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति

☞ सर्वाधिक जनसंख्या जयपुर जिले में निवास करती है।

☞ राजस्थान की सबसे शिक्षित जनजाति है।

☞ मुख्यतः दो वर्ग होते है।

1. जमींदार मीणा
2. चौकीदार मीणा

☞ भूरिया बाबा इनके कुल देवता है।

☞ ये बुझ देवता की भी पूजा करते हैं।

☞ 'मोरनी मांडना' मीणा जनजाति की एक प्रथा है। (शादी के समय)

राजस्थान के लोक नाट्य

- लोक नाट्य संगीत, नृत्य, नाटक तीनों का समावेश है।
- भरत ने 'नाट्य शास्त्र' नामक पुस्तक लिखी।
- कुंभा के 'नृत्य रत्न कोष' में नाट्य की जानकारी मिलती है।

1. ख्याल :–

- ख्याल राजस्थान के लोक नाट्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही यह राजस्थान के लोक नाट्यों में सम्मिलित हैं।
- ख्यालों की विषय–वस्तु पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं व आख्यानों से जुड़ी होती है एवं इसमें नाटक के साथ–साथ नृत्य, संगीत एवं गीतों की प्रधानता भी होती है।
- भौगोलिक अंतर के कारण इन ख्यालों ने अलग–अलग रूप धारण कर लिए है, जिनमें संगीत, नृत्य व शैली के आधार पर भिन्नता परिलक्षित होती है।
- इसमें सूत्रधार **'हलकारा'** कहलाता है।
- **ख्याल के प्रकार –:**

1. कुचामनी ख्याल :–

- प्रवर्तक –लच्छीराम जी।
- मुख्य कलाकार – उगमराज।
- विषय–वस्तु – राव रिड़मल, चाँद–नीलगिरी, मीरा–मंगल, गोगा चौहान आदि की कहानियाँ
- **विशेषताएँ :–**
  - इसका रूप ओपेरा जैसा है एवं इसे खुले मंच पर सम्पन्न किया जाता है।
  - इस ख्याल में महिला पात्रों की भूमिका भी पुरुष ही निभाते है।
  - इसमें लोकगीतों की प्रधानता रहती है अतः इस ख्याल का रुप गीत नाट्य जैसा होता है
  - इस ख्याल में मंच संचालन के दौरान शहनाई,ढोल आदि वाद्य यंत्र यंत्रों का प्रयोग होता है एवं इसमें नर्तक ही गाना गाते है।
  - इन ख्यालों की भाषा सरल होती है तथा सामाजिक व्यंग्य पर आधारित विषय चुने जाते है।

2. शेखावाटी ख्याल/चिड़ावा ख्याल –

- प्रवर्तक – नानूराम जी
- मुख्य कलाकार– दूलिया राणा
- मुख्य केंद्र – चिड़ावा
- मुख्य विषय–वस्तु (कहानियाँ) : हीर–रांझा, हरिशचन्द्र, जयदेव कलाली, आल्हादेव, ढोला–मारू, भर्तृहरि।

3. जयपुरी ख्याल :–

- मुख्य कहानियाँ : जोगी–जोगण, कान–गुजरी, मियाँ–बीबू, पठान, रसीली तंबोलन।
- सभी ख्यालों की प्रकृति मिलती–जुलती है, परंतु जयपुरी ख्याल की अपनी अलग विशेषताएँ है जो इस प्रकार है–

- ○ इसमें स्त्री पात्रों की भूमिका स्त्रियाँ ही निभाती है एवं इसमें नए प्रयोगों की महती संभावनाएँ बनी रहती है।
- ○ यह नाट्य शैली रूढ़ व कठोर नहीं है, बल्कि अधिक मुक्त व लचीली है।
- ○ इसमें गुणीजनखाने के कलाकार भाग लेते थे।

4. हेला ख्याल :–
- ➢ प्रचलन क्षेत्र : लालसोट (दौसा), सवाई माधोपुर।
- ➢ मुख्य वाद्य यंत्र, नौबत, बम (नगाड़ा) इत्यादि
- ➢ ऊँचे स्वरों की प्रधानता रहती है।
- ➢ लम्बी टेर (हेला देना) में आवाज देना इस ख्याल की विशेषता है।

5. कन्हैया ख्याल:–
- ➢ मुख्य क्षेत्र – करौली, सवाई माधोपुर, धौलपुर, दौसा, गंगापुर सिटी।
- ➢ इस लोकनाट्य शैली में विषय–वस्तु को **'कहन'** कहा जाता है एवं कथावाचक को **'मेडिया'** कहा जाता है
- ➢ मूलतः यह ख्याल शैली मीणा समुदाय में लोकप्रिय थी किन्तु कालांतर में अन्य समुदाय के लोगों द्वारा भी की जाने लगी।

6. ढप्पाली ख्याल :–
- ➢ मुख्य क्षेत्र :–लक्ष्मणगढ़ (अलवर)
- ➢ वाद्य यंत्र – डफ, शहनाई, नगाड़ा।

7. अली–बख्शी ख्याल:–
- ➢ मुख्य क्षेत्र – मुंडावर (अलवर)
- ➢ प्रवर्तक – अली बख्श (मुंडावर के नवाब)
- ➢ बोली– अहीरवाटी/राठी (यह बोली कोटपुतली व मुंडावर क्षेत्र में बोली जाती है।)
- ➢ अली बख्श भगवान कृष्ण के भक्त थे अतः इन्हें 'अलवर का रसखान' कहा जाता है।

8. भेंट के दंगल :– मुख्य क्षेत्र– बाड़ी एवं बसेड़ी (धौलपुर)

9. तुर्रा–कलंगी ख्याल :–
- ➢ प्रवर्तक:– तुकनगीर (हिंदू संत) व शाह अली (मुस्लिम संत)
- ➢ मुख्य केंद्र–घोसुंडा, निम्बाहेड़ा,(चितौड़) नीमच (मध्यप्रदेश)
- ➢ मुख्य कलाकार– जयदयाल सोनी, चेतराम, ओंकारसिंह, ताराचंद, नानालाल गंधर्व।
- ➢ तुर्रा व कलंगी, मुकुट के आभूषण होते है। यह ख्याल शैली भगवान शिव व माता पार्वती की कहानी पर आधारित है, जिसमें तुर्रा को भगवान शिव व कलंगी को माता पार्वती का प्रतीक माना जाता है।
- ➢ तुकनगीर तुर्रा के पक्षकार थे एवं शाह अली कलंगी के, एवं दोनों ने तुर्रा–कलंगी के माध्यम से शिव–भक्ति के विचारों को लोक जीवन तक पहुँचाया।
- ➢ चंदेरी के शासक ने इनके अभिनय से खुश होकर इन्हें तुर्रा व कलंगी भेंट दिये थे।

- सहेडूसिंह(तुर्रा) व हमीद बेग(कलंगी) ने इस शैली को चित्तौड़ में लोकप्रिय बनाया।

विशेषताएँ–

- इसमें दो पक्षों (शिव व पार्वती पक्ष) के मध्य काव्यात्मक संवाद (बोल) होता है, जिसे गम्मत या दंगल कहा जाता हैं
- शिव–पक्ष के झंडे का रंग भगवा एवं पार्वती–पक्ष के झंडे का रंग हरा होता है।
- यह एकमात्र ऐसा लोक नाट्य है जिसमें फूल–पत्तियों, चित्रकारी, छज्जों आदि से मंच का सुन्दर ढंग से अलंकरण किया जाता है एवं साथ ही इसमें दर्शकों के भाग लेने की सर्वाधिक संभावनाएं मौजूद होती है।
- इसमें मंचन के दौरान चंग वाद्य यंत्र बजाया जाता है।

2. नौटंकी :–

- प्रवर्तक :– भूरीलाल जी
- मुख्य कलाकार : गिरिराज प्रसाद, नत्थीलाल।
- प्रचलन क्षेत्र :– भरतपुर, धौलपुर, करौली, अलवर,डीग।
- इस नाट्य को भरतपुर में '**हाथरस शैली**' में प्रस्तुत किया जाता है।
- मुख्य कहानियाँ–अमरसिंह राठौड़, आल्हा–ऊदल, सत्यवादी–हरिशचंद्र, लैला–मंजनू, रूप–बसंत, नकाब पोश, राजा–भर्तृहरि, हरिशचंद्र तारामती।
- नौटंकी के दौरान सारंगी, शहनाई, ढपली आदि सहित नौ प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है इसी कारण से इसे नौटंकी कहा जाता है।

3. तमाशा :–

- प्रवर्तक :– बंशीधर भट्ट।
- मुख्य कलाकार :–गोपीजी/गोपीकृष्ण भट्ट, वासुदेव भट्ट, व फुलजी भट्ट।
- विषय–वस्तु:– जोगी–जोगण (होली), जुठुन मियाँ का तमाशा (शीतलाष्टमी पर), गोपीचन्द–भर्तृहरि का तमाशा (चैत्र अमावस्या),हीर–रांझा (होली के अगले दिन)
- यह लोक नाट्य मूलतः – महाराष्ट्र का लोकनाट्य है जो सवाई प्रतापसिंह के समय जयपुर में लोकप्रिय हुआ। सवाई प्रताप सिंह ने बंधीधर भट्ट को महाराष्ट्र से बुलाया था।
- उस काल में जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना गौहर जान तमाशा में भाग लेती थी।
- **विशेषताएँ:–**
  - तमाशा एक अनूठी लोकनाट्य शैली है जिसमें जयपुरी ख्याल व ध्रुपद गायिकी का समावेश किया गया है।
  - तमाशा का मंचन एक खुले मैदान में किया जाता है जिसे अखाड़ा कहते है।
  - इस क्षेत्र में उस्ताद परंपरा के संस्थापक फूलजी भट्ट, बंशीधर भट्ट के परिवार से है एवं ध्रुपद गायकी के प्रसिद्ध कलाकार है।

4. गवरी :–

- यह राजस्थान का प्राचीनतम तथा भील जनजाति का धार्मिक लोकनाट्य है, जो केवल पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

- यह नाट्यकला को **'मेरु लोकनाट्य'** भी कहते है एवं इस लोकनाट्य का प्रदर्शन रक्षाबंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिनों तक चलता है।
- रक्षाबंधन के दूसरे दिन भादवा कृष्ण एकम् को खेड़ा देवी से भोपा गवरी मंचन की आज्ञा लेता है।इसके बाद पात्रों के वस्त्र बनते है। पात्र मंदिरों में धोक लगाकर नव–लाख देवी–देवता, चौसठ योगिनी और बावन भैंरू को स्मरण करते है।
- ये लोकनाट्य शिव–भस्मासुर की कहानी पर आधारित है जिसके विभिन्न पात्रों को निम्नलिखित नामों से संबोधित किया जाता है–
    - पार्वती : गवरी/राई
    - भगवान शिव : राइबुड़िया
    - सूत्राधार : कुटकुड़िया
    - हास्यकार : झटपटिया
    - अन्य पात्र : खेल्ये
- मुख्य कहानियाँ –कान–गूजरी, बंजारा–बंजारी, जोगी–जोगण, अकबर–बीरबल, देवी अंबड़ भिन्यावड़, खाडलियों भूत, शेर सुवर की लड़ाई, कालुकीर।
- गवरी के मंचन के दौरान गोमा–मीणा, कालू–कीर, कान–गूजरी, नाहर जैसे कई लघु नाटक भी प्रस्तुत किए जाते है।
- गवरी की कथा में कथानक या सहकथानक क्रमबद्ध नहीं होते है अतः विभिन्न प्रसंगों व कहानियों को मूल कथानक से जोड़ने हेतु बीच–बीच में एक सामूहिक नृत्य किया जाता है जिसे **गवरी की घाई** कहते है।
- गलावन–बलावन की रस्म के साथ गवरी समारोह की समाप्ति हो जाती है गलावन का संबंध उस दिन से होता है जब देवी पार्वती की प्रतिमा का निर्माण किया जाता है एवं बलावन का संबंध उस दिन से होता है जब उस प्रतिमा को जलाशय में विसर्जित कर दिया जाता है।
- प्रख्यात नाट्यकार भानु भारती ने **'पशु–गायत्री'** नाम से एक लोकनाट्य की रचना की, जो प्राचीन गवरी नाट्य का आधुनिक रूपान्तरण है।

5. रम्मत :–

- रम्मत का उद्भव 100 वर्ष पूर्व बीकानेर व जैसलमेर क्षेत्रों में होने वाली लोक–काव्य–प्रतियोगिताओं से माना जाता है तथा इसका आयोजन होली और सावन के अवसर पर किया जाता है।
- रम्मत शुरू होने से पूर्व बाबा रामदेवजी का भजन गाया जाता है।
- इसमें चौमासा (वर्षा ऋतु का वर्णन), लावणी (देवी–देवताओं की पूजा से संबंधित गीत), गणपति वंदना आदि मुख्य गीत गाये जाते है।
- वाद्य यंत्र –ढोल तथा नगाड़ा।
- रम्मत जैसलमेंर व बीकानेर क्षेत्र में अधिक लोकप्रिय हैं

जैसलमेर क्षेत्र की रम्मत :–

- जैसलमेर में रम्मत शैली को तेज कवि ने लोकप्रिय किया। इन्होंने जैसलमेर में रम्मत का अखाड़ा, श्रीकृष्ण कंपनी के नाम से शुरू किया।
- तेज कवि ने अपनी रम्मतों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया एवं साथ ही ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध किया।

- इन्होंने 1943 ई. में 'स्वतंत्र बावनी' नामक रम्मत की रचना कर, इसे गाँधी जी को भेंट किया।
- तेज कवि द्वारा रचित अन्य रम्मतें– मूमल, गोपीचंद–भर्तृहरि, छबीली तंबोलन।

बीकानेर क्षेत्र की रम्मत :–

- बीकानेर में पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा रम्मत का अयोजन लकड़ी के पाटों पर होली के अवसर पर किया जाता है।(फाल्गुन शुक्ल अष्ठमी से चतुर्दशी तक)

बीकानेर की मुख्य रम्मतें व रम्मत स्थल :–

1. अमरसिंह राठौड़ की रम्मत :– आचार्यों का चौक।
2. हेडाउ मेरी की रम्मत :– बारह गुवाड़ (इस क्षेत्र की लोकप्रिय रम्मत है जिसकी रचना जवाहरलाल पुरोहित ने की थी।)
3. चौबेल नौटंकी की रम्मत : बिस्सों का चौक।
4. जमनादास जी की रम्मत : कींकाणी व्यासों का चौक।

मुख्य कलाकारः– फागु महाराज, मनीराम व्यास, तुलसीराम, सुआ महाराज, रामगोपाल जी मेहता, गींडोजी (नगाड़ा वादक),जीतमल,गंगादास सेवग।

6. भवाई :–

- प्रर्वतक :– बाघ जी।
- मुख्य कहानियाँ : बीकाजी, बाघजी, जसमल ओडण।
- यह लोकनाट्य,गुजरात की सीमा से सटे हुए राजस्थान के क्षेत्रों विशेषकर उदयपुर संभाग में भवाई जाति के लोगों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
- इस लोकनाट्य, में कलाकार मंच पर आकर अपना परिचय नहीं देते है एवं नाट्य के माध्यम से व्यंगयात्मक शैली में तात्कालिक सामाजिक समस्याओं पर चोट की जाती है।
- इसमें मुख्य महिला व पुरुष पात्र को क्रमश : सगीजी व सगाजी कहा जाता है।
- यह यह एक व्यावसायिक लोकनाट्य है।
- शांता गाँधी द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक जसमल ओडण, जो कि भवाई लोकनाट्य शैली पर आधारित है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत लोकप्रिय है।
- इसकी कथा आम आदमी के संघर्ष से संबंधित है, यह उच्च और निम्न वर्ग के संघर्ष को बताता है।(ओड जनजाति के मुख्य कार्य – तालाब खोदना।)

7. स्वांग :–

- स्वांग का शाब्दिक अर्थ है किसी विशेष ऐतिहासिक, पौराणिक, लोक प्रसिद्ध या समाज में मान्य चरित्र तथा देवी–देवताओं की हूबहू वेश–भूषा धारण करते हुए उनके चरित्र की नकल करना।
- स्वांग के कलाकारों को बहरूपिया कहा जाता है। बहरूपियें अपना रूप, अभिनय आदि चरित्र के अनुसार बदलने में माहिर होते है। यह लोकनाट्य गांवों में अधिक लोकप्रिय है।
- यह राजस्थान के भीलवाड़ा क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनाट्य है मांडल (भीलवाड़ा) में नाहरों का स्वांग बड़ा लोकप्रिय है जो वहाँ चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन आयोजित किया जाता है इसका प्रचलन मुगल सम्राट शाहजहाँ के काल से माना जाता है।

- सांगोद, किशनगंज (बारां) सहरिया जनजाति द्वारा शिव पार्वती का स्वांग किया जाता है
- गवरी लोकनाट्य के दौरान स्वांग का प्रदर्शन किया जाता है।
- मुख्य कलाकार : परशुराम जी, जानकी लाल भाण्ड (इन्हें मंकी मैन भी कहा जाता है एवं इन्होंने भारत उत्सवों में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया है।)

8. चारबैत :–

- यह मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है जिसे पश्तों भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।
- यह लोकनाट्य टोंक के नवाब फैजुल्ला खाँ के काल में टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय हुआ।
- नवाब फैजुल्ला खाँ के काल में करीम खाँ निहंग ने इस लोकनाट्य को प्रारम्भ कर स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था।
- गायक **डफ** वाद्य यंत्र बजाता हुआ घुटनों के बल खड़ें होकर अपनी बात गायन शैली में प्रस्तुत करता है।

9. रामलीला :–

- प्रवर्तक :– तुलसीदास जी।
- राजस्थान में कई क्षेत्रों की रामलीलाएँ अपनी विविधता के लिए प्रसिद्ध रही है जो इस प्रकार है–
  1. बिसाऊ (झुन्झुनूं) – यहां पर मूक रामलीला का आयोजन किया जाता है।
  2. अटरू (बारां) – यहां पर रामलीला में धनुष भगवान राम द्वारा नहीं बल्कि जनता द्वारा तोड़ा जाता है।
  3. भरतपुर – वेंकटेश रामलीला।
  4. पाटूंदा रामलीला।

10. रासलीला :–

- प्रारंभकर्ता :– वल्लभाचार्य
- मुख्य केंद्र :– गुंडा, हरदोणा, असलपुर, फुलेरा (जयपुर ग्रामीण) , कांमा (डीग)।
- रासलीला भगवान कृष्ण के जीवन–चरित्र पर आधारित होती है जिसमें श्रीकृष्ण के जीवन की विभिन्न लीलाएँ अभिनीत की जाती है।

11. सनकादिक लीला :–

- इस प्रकार की लीलाओं में भगवान गणेश, कालिका, ब्रह्मा, हिरण्यकश्यप, गोरा–काला भैंरूजी, नृसिंहावतार आदि की धार्मिक कहानियों का मंचन किया जाता हैं। एवं उनसे संबंधित झाँकिया निकाली जाती है।
- आश्विन मास में घोसुंडा (चित्तौड़) में एवं कार्तिक मास में बस्सी(चित्तौड़) में सनकादिक लीलाओं का आयोजन होता है।

12. गौर लीला:–

- आबू क्षेत्र की गरासिया जनजाति द्वारा वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को **भख्योर की गणगौर** का आयोजन किया जाता है।
- इसमें लकड़ी की **गौर** एवं **हंसर** को गरसिया स्त्रियाँ अपने सिर पर रखकर नृत्य करती है। इनके बीच में पुरुष मुखौटा लगाकर तलवारबाजी का प्रदर्शन करता है।

राजस्थान के किले

1. गागरौण का किलाः– (जलदुर्ग)

- वर्तमान झालावाड़ जिले में 'काली सिन्ध व आहू नदियों के किनारे स्थित है।
- डोड (परमार) शासकों ने इसका निर्माण करवाया। इसलिए इसे डोडगढ़ या धूलरगढ़ भी कहा जाता है।
- देवेनसिंह खींची ने बीजलदेव डोड को हराकर किले पर अधिकार कर लिया था।
- अचलदास खींची के समय 1423 ईं. में मालवा का शासक होशंगशाह आक्रमण करता है। इस समय गागरोण का पहला शाका हुआ।
- शिवदास गाडण ने 'अचलदास खींची री वचनिका' नामक पुस्तक लिखी।
- 1444 ई. में पाल्हणसिंह गागरोण का राजा बनता है, जिसके समय मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी आक्रमण करता है। इस समय गागरोण का दूसरा शाका हुआ।
- महमूद खिलजी गागरोण का नाम बदलकर 'मुस्तफाबाद' कर देता है।
- अकबर ने बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ को यह किला जागीर में दिया था।
- कालान्तर में इस पर कोटा राज्य का अधिकार हो जाता है।
- इसमें कोटा राज्य की 'टकसाल' थी।

प्रमुख इमारतें –

1. कोटा के दुर्जनसाल ने यहां मधुसूदन मंदिर बनवाया।
2. औरंगजेब ने यहां 'बुलन्द दरवाजा' का निर्माण करवाया।
3. सूफीसन्त हमीदुद्दीन की दरगाह है, जिन्हें 'मीठे साहब' के नाम से जाना जाता है।
4. यह किला बिना नींव के चट्टानों पर खड़ा किया गया है।
5. किले में 'गीध कराई' स्थानः– वह स्थान जहां पर राजनैतिक कैदियों को मृत्युदण्ड दिया जाता था।
6. जौहर कुण्ड व अन्धेरी बावडी बने हुए हैं।

2. चितौडगढ़ः–

- चित्रांगद मौर्य ने निर्माण करवाया। गम्भीरी व बेड़च नदियों के किनारे मछली की आकृति में मेसा पठार पर यह किला बना हुआ है।
- इसे 'किलों का सिरमौर', 'राजस्थान का गौरव' भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- इसमें धान्वन दुर्ग को छोड़कर बाकी सभी विशेषताएँ पाई जाती है।
- यहां तीन साके हुए।
- इसमें रतनसिंह व पद्मिनी के महल बने हुए हैं।

☞ प्रमुख इमारतें :–

- लाखोटा बारी
- नवलखा भण्डार – बनवीर ने बनवाया
- तुलजा भवानी का मंदिर
- कालिका मंदिर
- एकलिंग मंदिर
- मीरा मंदिर
- समिद्धेश्वर मंदिर – मोकल ने त्रिभुवन मंदिर (भोजपरमार) का पुनर्निर्माण करवाकर समिद्धेश्वर मंदिर नाम रखा।
- श्रृंगार चंवरी
- कुंभ स्वामी मंदिर
- सतबीस देवरी।
- चत्रांग तालाब।
- भीमलत तालाब।
- कुकड़ेश्वर महादेव मंदिर।

3. कुम्भलगढ़ः–

➢ वर्तमान राजसमन्द जिले में स्थित है।

➢ महाराणा कुम्भा ने इसका निर्माण करवाया था।

➢ मेवाड़ का संकटमोचक किला व **मेवाड़–मारवाड़ का सीमा प्रहरी** भी कहा जाता है।

➢ अबुल फजल के अनुसार 'यह किला इतनी ऊँचाई पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर व्यक्ति की पगड़ी गिर जाती है।'

➢ इसकी दीवार 36 किलोमीटर लम्बी है एवं चौड़ाई इतनी है, कि चार घोड़े समानान्तर एक साथ दौड़ सकते हैं।

➢ जेम्स टॉड इसकी तुलना 'एट्रुस्कन(Astruskan) दुर्ग' से करता है।

➢ किले में सबसे ऊपरी स्थान पर 'कटारगढ़' है, जो कुंभा का निजी आवास था। इसे 'मेवाड़ की आँख' कहा जाता है।

प्रमुख इमारतें –

1.'मामा देव कुण्ड'
2.'झाली रानी का मालिया'

4. रणथम्भौरः–

➢ वर्तमान सवाई माधोपुर जिले में स्थित है।

➢ आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।

- अण्डाकार आकृति की पहाड़ी पर बना हुआ है इसलिए दूर से देखने पर दिखाई नहीं देता है।
- अबुल फजल कहता है बाकी सब किले नंगे है, तथा यह किला बख्तरबंद (कवच) है।
- अन्य इमारतें :
    - जोगी महल
    - सुपारी महल
    - जौरा–भौरां – अनाज भंडार गृह
    - त्रिनेत्र गणेश मंदिर
    - पीर सदरूद्दीन की दरगाह
    - अकबरकालीन टकसाल
    - हम्मीर कचहरी
    - बतीस खम्भों की छतरी
    - नवलखा दरवाजा।

5. मेहरानगढ़ किलाः–(जोधपुर)

- 13 मई 1459 ई. में राव जोधा द्वारा इसका निर्माण करवाया गया
- 'चिड़ियाटूंक पहाड़ी' पर बना हुआ है।
- जोधपुर किले में राजाराम नामक व्यक्ति की बलि दी गई थी।
- 'मयूराकृति' का होने के कारण किले को 'मोरध्वज गढ़' कहा जाता है।
- इसे गढ़ चिन्तामणि' भी कहा जाता है।
- रूडयार्ड किपलिंग के अनुसार इसका निर्माण 'परियों व देवताओं' द्वारा किया गया है।
- इस किले में तोपें रखी हुई हैं– किलकिला, भवानी, शम्भूबाण, गजनी खाँ,गजक, गुब्बारा, नुसरत आदि।
- प्रमुख इमारतें :–
    - फूल महल
    - चोखेलाव महल } महाराजा अभयसिंह द्वारा निर्मित।
    - आनंद धन मंदिर।
    - नागणेची माता मंदिर।
    - धना–भींवा (मामा भांजे की छतरी)
    - भूरेखाँ की मजार
    - कीरत सिंह सोढ़ा की छतरी
    - धन्ना भींवा की छतरी
    - 'मानसिंह पुस्तकालय' बना हुआ है।

- महलः–
  - मोती महल (सूर सिंह द्वारा निर्मित)
  - तलहटी महल
  - शृंगार चौकीः– यहां जोधपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता है।
- राणीसर तालाब में से किले को जल आपूर्ति की जाती थी।
  (राणीसर तालाब – जोधा की हाड़ी रानी जसमादे ने बनवाया था।)
- चामुण्डा माता का मंदिर बना हुआ है।
- मोती महल।

6. जैसलमेर किलाः–(त्रिकुट किला)

- अन्य नाम – सोनारगढ़/सोनगढ़
- 1155 ई. में राव जैसल ने इसका निर्माण करवाया था।
- यह किला त्रिभुजाकार आकृति में बना हुआ।
- राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है।
- इसके निर्माण में लगे पीले पत्थर सूर्य की रोशनी में चमकते है इसलिए इसे सोनारगढ़/सोनार दुर्ग कहते है।
- किले को दूर से देखने पर ऐसा लगता है 'मानों रेत के समुद्र में जहाज ने अपने लंगर खोल रखे हैं।
- दूर से देखने पर 'अंगडाई लेते शेर के समान' दिखाई देता है।
- अबुल फजल कहता है, कि केवल पत्थर की टांगे ही जैसलमेर किले में पहुँचा सकती है।
- 2009 ई. में इस किले पर डाक टिकट जारी किया गया था।
- इस किले के निर्माण में चूने का उपयोग नहीं किया गया है।
- इसकी छतें लकड़ी की बनी हुई है।
- इसमें 99 बुर्जे बनी हुई हैं। राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला किला।
- इसमें जिनभद्र सूरि भण्डार है, जिसमें हस्त लिखित पुस्तकें व प्राचीन चित्र रखे गये हैं। जैसे–

  –ओघ नियुक्ति वृति

  –दस वैकालिका सूत्र चूर्णि

प्रमुख इमारतें :–

- बादल महल
- पार्श्वनाथ मंदिर
- जैसलु किला
- सर्वोत्तम विलास (शीश महल)– अखैराज द्वारा निर्माण।

- जवाहर विलास
- रंग महल } मूलराज–द्वितीय द्वारा निर्मित।
- मोती महल
- बादल महल
- ऋषभदेव मंदिर
- जिनभद्र सूरी भण्डार

➢ 'सत्यजीत रे ने 'सोनारकिला' नाम से डोक्यूमेन्ट्री (छोटी फिल्म) बनाई।

➢ इस किले के चारों तरफ घाघरानूमा परकोटा बना हुआ है, जिसे कमरकोट कहते हैं।

7. जूनागढ़ किलाः– (बीकानेर)

➢ रायसिंह द्वारा 1589 से 1594 ई. के मध्य निर्माण करवाया गया।

➢ यह किला समतल भूमि पर बना हुआ है, इसलिए इसे 'जमीन का जेवर' कहते हैं।

➢ इसे 'रातीघाटी का किला' भी कहते हैं।

➢ चतुर्भुजाकार आकृति में बना हुआ है।

➢ इसमें 37 बुर्जे बनी हुई हैं।

➢ अन्य महलः–

  - अनुप महल (अनूप सिंह द्वारा निर्मित।)–राजाओं का राजतिलक।
  - हर मंदिर
  - गंगा विलासः– इसकी दिवारों पर कृष्ण रासलीला के चित्र देखने योग्य हैं।

➢ किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है। ये पारिख दुर्ग का उदाहरण है।

➢ स्वतंत्रता के पूर्व भी इस किले में लिफ्ट लगी हुई थी (गंगासिंह के समय की)

8. भटनेर किलाः– (हुनमानगढ़)

➢ भूपत भाटी ने इसका निर्माण करवाया।

➢ राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी आक्रमण झेलने वाला किला।

➢ इसे 'उतरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता है। इसी कारण भाटी शासकों को 'उत्तर भड़ किवाड़ (उत्तर के दरवाजे की रक्षा करने वाला योद्धा) कहा गया।

➢ तैमूर अपनी आत्मकथा में इसे 'भारत का सबसे सुरक्षित किला' बताता है।

➢ एकमात्र किला, जिसमें हिन्दू महिलाओं के साथ मुस्लिम महिलाओं के जौहर का वर्णन मिलता है।

➢ इस किले में 52 बुर्जे बनी हुई हैं।

➢ किले का परकोटा कच्ची मिट्टी की ईंटों से बना हुआ है।

➢ रायसिंह (बीकानेर) के विद्रोही बेटे दलपतसिंह व उनकी 6 रानियों के स्मारक बने हुए हैं।

- बलबन के भाई शेरखाँ की कब्र बनी हुई है।
- इसमें 365 कंगुरे है।
- हनुमानगढ़ में भद्र काली माता का मंदिर बना हुआ है।
- बीकानेर सुरतसिंह द्वारा 1805 ई. में मंगलवार के दिन इस किले पर अधिकार किये जाने के कारण भटनेर का नाम हनुमानगढ़ रखा गया।

9. तारागढ़ किला (अजमेर):–

- चौहान राजा अजयराज द्वारा निर्माण करवाया गया। तब इसका नाम था 'अजयमेरूगढ़'।
- इसके बाद उडणा राजकुमार पृथ्वीराज (मेवाड़) ने अपनी रानी तारा के नाम पर नाम बदलकर तारागढ़ कर दिया।
- इसे 'गढ़ बीठली किला' व 'राजस्थान का जिब्राल्टर' भी कहा जाता है। – (बिशप हैबर ने कहा)
- हरविलास शारदा– प्राचीनतम सर्वाधिक आक्रमण का सामना करने वाला दुर्ग।
- इसमें 14 बुर्जे बनी हुई है।
- मीरान साहब (गवर्नर) की दरगाह बनी हुई है।
- एक घोड़े की मजार व हिंजड़े की मजार बनी हुई है।
- पृथ्वीराज चौहान का स्मारक बना हुआ।
- शीशा खान गुफा बनी हुई है।
- नाना साहब व इब्राहीम खां झालरा बना हुआ है।
- विलियम बैटिंक ने इस किले को 'आरोग्य सदन'(विश्राम गृह)/(सेनिटोरियम) में बदल दिया।
- दारा शिकोह (औरंगजेब का भाई) ने इस किले में शरण ली थी।
- उमादे (रूठी रानी)(मालदेव की पत्नी) ने भी कुछ समय इस किले में व्यतीत किया था।

10. अकबर का किला (अजमेर):–

- 1570 ई. में अकबर ने इसका निर्माण करवाया था।
- इसे अकबर का दौलतखाना भी कहा जाता है।
- हल्दीघाटी युद्ध की योजना इसी किले में बनाई गई थी।
- इसी किले में अंग्रेज राजदूत 'टॉमस रो' ने(10 जनवरी,1616 ई.) जहाँगीर से मुलाकात की थी।
- अंग्रेज इस किले में अपने हथियार रखते थे इसलिए इसे 'मैग्जीन का किला' भी कहा जाता है।
- वर्तमान में इसमें 'राजपुताना म्यूजियम' चल रहा है।

11. आमेर का किलाः– (जयपुर)

- इसे 'काकिलगढ़' भी कहा जाता है।
- राजा मानसिंह ने इस किले का निर्माण शुरू करवाया था।
- यह किला महल की आकृति में बनाया गया है।
- इसमें लखनऊ जैसी भूलभूलैया है।
- मुगल प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
- इमारतेंः– सुख मन्दिर, यश मन्दिर, सुहाग मन्दिर, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, शीश महल, दौलाराम बाग, मावठा जलाशय, केसर–क्यारी बगीचा, अम्बिकेश्वर मंदिर,
- शिलामाता मंदिर
- जगत शिरोमणि मंदिर (निर्माण– रानी कनकावती ने पुत्र जगतसिंह की याद में।)

12. जयगढ़ किलाः–(जयपुर)

- मानसिंह ने इसका निर्माण शुरू करवाया।
- 'मिर्जा राजा जयसिंह' ने इसका निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम 'जयगढ़' रखा।
- इस किले पर कोई बाहरी आक्रमण नहीं हुआ।
- पहले इस स्थान को 'चिल्ह का टोला' कहा जाता था।
- 'सवाई जयसिंह' ने इस किले को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया व इसमें 'जयबाण' तोप रखवायी।(एशिया की सबसे बड़ी तोप)
- यह आमेर के कच्छवाह शासकों का संकट मोचक किला था।
- प्रमुख इमारतें–
- यह किला पानी के विशाल टांकों के लिए जाना जाता है।
- इस किले में कच्छवाह शासकों का खजाना था। आपातकाल के दौरान इन्दिरा गाँधी ने यहाँ पर खुदाई करवाई थी।
- इस किले में कई गुप्त सुरंगे बनी हुई हैं। इसलिए इसे 'रहस्यमयी किला' भी कहा जाता।
- इस किले में हथियार बनाने का कारखाना (शस्त्रागार) था।
- विजयगढ़ीः– वह स्थान जहां सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह (चीमाजी) को गिरफ्तार करके रखा था।

13. नाहरगढ़ः–(जयपुर)

- सवाई जयसिंह ने मराठा आक्रमणों से बचने के लिए इस किले का निर्माण करवाया।
- पहले इसका नाम 'सुदर्शनगढ़' था, परन्तु बाद में नाहरसिंह भौमियाजी के नाम पर इसका नाम 'नाहर गढ' किया गया।
- इसे 'जयपुर का पहरेदार' किला कहते है।
- जगतसिंह की प्रेमिका 'रसकपूर' को इस किले में गिरफ्तार करके रखा गया था।
- माधोसिंह–द्वितीय ने अपनी 9 दासियों के लिए यहाँ 9 एक जैसे महल बनवाये।

14. तारागढ़ किला (बूँदी):–

- 1354 ई. में बरसिंह द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
- दूर से देखने पर झील में चमकते तारे के समान दिखाई देता है।
- रूडयार्ड किपलिंग के अनुसार, 'इस किले का निर्माण भूत–प्रेतों द्वारा किया गया है।'
- जेम्स टॉड के अनुसार, 'बूँदी किले के महल राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ महल है।'
- बूँदी किले के महल अपने भित्ति चित्रों के लिए जाने जाते हैं।
- अन्य महल :– सुख महल, छत्र महल, अनिरूद्ध महल, रानी जी की बावड़ी, रंग महल,(शत्रुशाल द्वारा), चित्रशाला (उम्मेद सिंह), जैतसागर, नवलसागर,(ताड़कंवर नाथावत द्वारा।)
- इस किले में 'गर्भ गुंजन तोप' रखी गई है।

15. जालौर किला:– सूकड़ी नदी के किनारे।

- प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने निर्माण करवाया।
- कान्हड़देव सोनगरा ने पूनर्निर्माण करवाया।
- इसे 'सुवर्णगिरि का किला' कहते है। (सोनगिरि पहाड़ी पर)
- अलाई मस्जिद व खिलजी मीनार का निर्माण करवाया गया।
- तोपखाना मस्जिद (पहले परमार राजाओं द्वारा बनाई गई संस्कृत पाठशाला थी।)
- इसमें 'जैन कीर्ति स्तम्भ' बना हुआ है।
- वीरमदेव की चौकी
- जोधपुर महाराजा मानसिंह ने राजा बनने से पहले इस किले में शरण ली थी।
- मारवाड़ प्रजामण्डल के नेता जैसे मथुरादास माथुर, गणेश लाल व्यास आदि को जालौर किले में नजरबंद किया गया था।
- इसमें मलिक शाह की दरगाह बनी है।
- चामुण्डा माता का मंदिर।
- जोगमाया मंदिर।
- हसन निजामी के अनुसार कोई भी आक्रमणकारी इस किले के दरवाजें नहीं खोल सके।

16. सिवाणा का किला:– बाड़मेर

- 'वीर नारायण पंवार' ने इसका निर्माण करवाया था।(954 ई.)
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे 'कूमट दूर्ग' भी कहा जाता है।
- यह 'मारवाड़ के राठौड़ों की शरण स्थली' तथा 'जालौर की कूँजी' कहलाता था।
- इसमें भांडेलाव तालाब बना हुआ है। (भायल सैनिक ने 1308 ई. में दूषित किया था)
- हल्देश्वर मंदिर।

17. अचलगढ़ का किलाः–

- परमार शासकों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
- महाराणा कुंभा इसका पुनर्निर्माण करवाता है।
- इसमें अचलेश्वर महादेव का मंदिर है, जहां शिवजी के अंगुठे की पूजा की जाती है। इस मंदिर के सामने 'दुरसा आढ़ा' की मूर्ति लगी हुई है।
- यहां कुम्भा व उसके पुत्र उदा की मूर्ति लगी हुई है, जिन्हें 'सावन भादो की मूर्तियाँ' कहा जाता है।
- ओखा रानी का महल
- मन्दाकिनी कुण्ड
- दुरसा आढ़ा की मूर्ति
- कपूर सागर तालाब
- चेतावनी बुर्ज
- सावन भादो झील

भँवराथलः– महमूद बेगड़ा (गुजरात) की सेना पर भंवरा मक्खियों ने आक्रमण कर दिया था।

18. भरतपुर का किलाः–

- सूरजमल द्वारा इसका निर्माण करवाया।
- उतरी गेट पर अष्टधातु दरवाजे लगे हैं।
- दूसरे अंग्रेज मराठा युद्ध के दौरान मराठा सेनापति जसवन्त राव होल्कर को भरतपुर राजा रणजीतसिंह ने शरण दी थी।
- अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक इस किले को जीत नहीं पाया था, इसलिए इसे 'लोहागढ़' कहा जाता है।
- चार्ल्स मेटकॉफ के अनुसार अंग्रेजों की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा भरतपुर आक्रमण के बाद समाप्त हो गयी थी।
- इस जीत की याद में रणजीतसिंह ने फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया।

इमारतेंः–

1. किशोरी महलः–
2. दादी माँ का महल
3. वजीर की कोठी,
4. लक्ष्मण मंदिर
5. गंगा मंदिर
6. मोती महल
7. जामा मस्जिद
8. लक्ष्मी मंदिर

9. राजेश्वरी माता (भरतपुर के जाट राजवंश की कुलदेवी)

- इस किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है।
- 'मोती झील' का पानी 'सुजान गंगा नहर' के माध्यम से इस खाई में डाला जाता था। (खाई–सुजानगंगा खाई)
- मोती झील – बाणगंगा नदी, रूपारेल नदी

19. बयाना का किला:–(भरतपुर)

- विजयपाल ने दमदमा पहाड़ी पर इस किले का निर्माण करवाया।
- अन्य नाम :– विजयमंदिर गढ़, बाणासूर दूर्ग, बादशाह का किला
- समुद्र गुप्त ने बयाना में 'विजय स्तम्भ' का निर्माण करवाया। – (राजस्थान का पहला विजय स्तम्भ)
- समुद्र गुप्त के सामन्त विष्णु वर्धन ने ऊषा लाट (भीम लाट) का निर्माण करवाया।
- लक्ष्मण सेन की रानी चित्रलेखा ने ऊषा मंदिर बनवाया।
- ऊषा मंदिर को मुबारक खिलजी ने 'ऊषा मस्जिद' में परिवर्तित कर दिया।
- **अन्य इमारत:–**

    1. अकबर की छतरी

    2. जहाँगीर दरवाजा

    3. लोदी मीनार

    4. दाऊद खाँ की मीनार

    5. सादुल्ला सराय

    6. जहाँगीर का महल – पुष्कर

20. बाला किला (अलवर):–

- काकिल देव के पुत्र अलघुराय ने इसका निर्माण करवाया।
- निकुम्भ क्षत्रियों (चौहानों) द्वारा इसका पुनः निर्माण करवाया गया।
- हसन खाँ मेवाती ने भी इसकी मरम्मत करवायी।
- निकुम्भ महल,जल महल
- जहाँगीर इस किले में कई दिन तक रूका था।इसलिए इसे सलीम महल/किला कहते हैं।
- बाबर ने इस किले का खजाना हूमायूं को दिया तथा किले को हिन्दाल को सौंप दिया था।
- प्रमुख इमारतें :– सलीम सागर

    करणी माता मंदिर, सीताराम मंदिर।

    अंधेरी दरवाजा

    सूरजकुंड, इत्यादि।

21. कांकनवाड़ी किलाः— (अलवर)

- मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने अपने भाई दारा शिकोह को गिरफ्तार करके इसी किले में रखा।

22. माधो राजपुरा का किलाः—(जयपुर)

- माधोसिंह प्रथम ने मराठों पर जीत के बाद इस किले का निर्माण करवाया।
- यहां का किलेदार भरतसिंह नरूका टोंक नवाब अमीर खां पिंडारी की बेगमों को बन्धक बना कर ले आया था।

23. चौमू का किलाः— (जयपुर ग्रामीण)

- निर्माण — ठाकुर कर्णसिंह ने करवाया।
- अन्य नामः— चौमुहागढ़, धारधारागढ़, रघुनाथगढ़।
- इसमें हवा मंदिर बना हुआ है।

24. माण्डलगढ़ का किलाः— (भीलवाड़ा)

- चानणा गुर्जर ने माण्डिया भील की याद में इस किले का निर्माण करवाया।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले मानसिंह इस किले में रूका था।
- यह मण्डल आकृति (सर्कल) में बना हुआ।
- यहां उंडेश्वर महादेव का मंदिर, शीतला माता का मंदिर, जलेश्वर मंदिर व सागर—सागरी जलाशय है।
- माण्डलगढ़ में राणा सांगा की छतरी है।

25. शेरगढ़ किला (बारां):—

- इसे कोशवर्धनगढ़ भी कहा जाता है।
- नाग वंशी राजाओं का अधिकार था।
- शेरशाह सूरी ने इसका नाम बदलकर शेरगढ़ किया।
- जालिम सिंह झाला ने इस किले में अमीन खान पिंडारी को शरण दी थी।
- परवन नदी के किनारे बना हुआ है।

26. शेरगढ़ किलाः—(धौलपुर)

- मालदेव नामक सामन्त ने इसका निर्माण करवाया
- शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रखा था।
- इसमें सैयद हुसैन की दरगाह बनी हुई है।

- इसमें 'हुनहुंकार तोप' रखी हुई है।
- धौलपुर के कमलबाग का बाबर अपनी आत्मकथा में वर्णन करता है।
- धौलपुर का निहाल टॉवर भारत का सबसे बड़ा घण्टाघर है।
- कुषाणकालीन किला है।

27. शाहबाद का किला (बारां):–

- मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया।
- अपने कालिंजर अभियान के लिए जाते समय शेरशाह सूरी ने इसका नाम सलिमाबाद कर दिया था।
- इसमें बादलमहल बना हुआ है।
- 'नवलबाण तोप' रखी हुई है।

28. कोटा का किला:–(कोटा)

- बूँदी के राजा जैत्रसिंह ने गुलाब महल का निर्माण करवाया था।
- यह चंबल नदी के किनारे स्थित है।
- कालान्तर में माधोसिंह ने यही पर कोटा का किला बनवाया।
- जेम्स टॉड के अनुसार, 'आगरा किले के बाद कोटा किले का परकोटा सबसे बड़ा है।'

29. भैंसरोडगढ़ का किला:–(चित्तौड़गढ़)

- चित्तौड़गढ़ जिले में चम्बल तथा बामणी नदियों के किनारे बना हुआ है।
- इसे 'राजस्थान का वैल्लोर' कहा जाता है।
- यह जैम्स टॉड का पसंदीदा किला था।

30. नागौर का किला:(नागौर)

- चौहान राजा सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने निर्माण करवाया था।
- इसमें तिहरा परकोटा बना हुआ।

31. कूचामन का किला:– (डीडवाना–कुचामन)

- इसे जागीरी किलों का सिरमौर कहा जाता है।
- इसका निर्माण जालिम सिंह (कुचामन का सामंत) ने करवाया था।

32. चुरू का किला:–

- चुरू के सामन्त कुशालसिंह ने इसका निर्माण करवाया था।
- चाँदी के गोले दागने वाला किला।
- 1814 ई. में यहां का सामन्त स्योजी सिंह (शिवजी सिंह)था, जिसने सूरतसिंह (बीकानेर) व अंग्रेजों के विरूद्ध चाँदी के गोले दागे थे।

33. फतेहपुर का किलाः–

- 1453 ई. में फतेह खां कायमखानी ने इसका निर्माण करवाया था।
- तेलिन का महल
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह
- फतेहपुर में एक सरस्वती पुस्तकालय है।
  (सरस्वती भण्डार उदयपुर में है)

34. सज्जनगढ़ का किलाः– (उदयपुर)

- सज्जनसिंह ने निर्माण करवाया था।
- इसे 'मेवाड़ का मुकुट मणि' कहा जाता है।
- सज्जनगढ़ अभ्यारण्य में है।
- इसे 'मानसून पैलेस' भी कहा जाता है।

35. तिमनगढ़ का किलाः–(करौली)

- यहां 'ननंद भोजाई का कुआँ' बना हुआ है।
- इसका निर्माण तिमनपाल द्वारा निर्माण करवाया गया था।

36. दौसा का किलाः–

- देवगिरि पहाड़ी पर बना हुआ है।
- 'छाजले की आकृति'/सूप आकृति में बना हुआ है।
- कच्छवाह शासकों की प्रारम्भिक राजधानी दौसा थी।

37. ऊँटाला का किलाः–

- वल्लभनगर ,उदयपुर में स्थित है।
- इस किले को लेकर हरावल प्रतियोगिता (जैत्रसिंह चूण्डावत व बल्लू शक्तावत के मध्य) का आयोजन किया गया था।
- महाराणा अमरसिंह ने जहाँगीर को ऊँटाला के युद्ध में हराया था।

38. मोहनगढ़ का किलाः– जैसलमेर

- भारत का अन्तिम किला
- 1945–46 में बना था। इस समय जैसलमेर का राजा जवाहरसिंह था।

छतरियाँ

1. गैटोर(जयपुर):–
- यहां जयपुर के कच्छवाह शासकों की छतरियाँ बनी हुई है।
- इन छतरियों में ईश्वरीसिंह की छतरी नहीं है।
- ईश्वरीसिंह की छतरी जयनिवास बाग (ईसरलाट के पास) में बनाई गई।

2. आहड़ (उदयपुर):–
- मेवाड़ के शासकों की छतरियाँ बनाई गई है।
- सबसे पहली छतरी अमरसिंह–प्रथम की बनाई गई।
- इस स्थान को महासतियाँ भी कहा जाता है।

3. पंचकुण्ड (मण्डौर):–
- मारवाड़/जोधपुर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई हैं।
- जसवन्त थड़ा:– जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह द्वितीय की छतरी जो उसके बेटे सरदार सिंह ने 1899 ई. में बनवाई थी। इसे 'राजस्थान का ताजमहल' कहा जाता है।
- कागा की छतरियाँ:– यहां जोधपुर के सामन्तों की छतरियाँ बनाई गई है।
- इनमें सबसे प्रमुख छतरी जसवन्तसिंह के प्रधानमंत्री राजसिंह कुम्पावत की छतरी है।

4. देवीकुण्ड (सागर):–
- यहाँ बीकानेर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई है।
- इनमें अनूपसिंह(16 खंभों) की छतरी सबसे प्रमुख है।

5. बड़ा बाग की छतरियाँ:– यहाँ जैसलमेर के राजाओं की छतरियाँ बनी हुई है।

6. क्षार बाग (छत्र विलास) छतरियाँ:– कोटा के राजाओं की छतरियाँ।

7. केसर विलास बाग की छतरियाँ:– बूँदी

8. पालीवालों की छतरी:– जैसलमेर

9. नाथों की छतरी:– जालौर
- इन पर तोता बना होता था।

10. बन्जारों की छतरी:– लालसोट (दौसा)

11. मिश्रजी की छतरी:– नेहड़ा (अलवर)
- इन पर दशावतारों (भगवान के 10 अवतार) का चित्रण मिलता है।

12. गोपालपाल की छतरी:– करौली

13. गंगा बाई की छतरी:– गंगापुर सिटी (भीलवाड़ा)
- महादजी सिंधिया की पत्नी गंगा बाई थी। (ग्वालियर)

14 चौरासी खंम्भो की छतरी:– बूँदी

राजस्थान के महल एवं हवेलियाँ

1. जैसलमेर की हवेलियाँ:–

1. पटवों की हवेली:–
    - ये 5 हवेलियाँ है।
    - गुमानचन्द बाफना ने इनका निर्माण करवाया।
2. सालिमसिंह की हवेली:–
3. नथमल की हवेली :–
    - ये 2 हवेलियाँ है।
    - हाथी व लालू नामक दो भाई इसके वास्तुकार थे।
4. सर्वोत्तम विलास पैलेस
5. जवाहर विलास पैलेस
6. कुलधरा की हवेलियाँ

2. जोधपुर की हवेलियाँ व महल:–

1. बड़े मियां की हवेली
2. राखी हवेली
3. पोकरण हवेली
4. अजीत भवन पैलेस:– राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल
5. उम्मेद भवन पैलेस (छीतर पैलेस)– छीतर पत्थर लगा है।
    - उम्मेद भवन पैलेस अकाल राहत कार्यों में इसका निर्माण किया गया।
    - विश्व का सबसे बड़ा आवासीय महल
6. राईका बाग पैलेस:–
    - जसवन्तसिंह I की हाड़ी रानी 'जसवन्तदे' ने निर्माण करवाया था।
    - जसवन्तसिंह II को दयानन्द सरस्वती ने इसी महल में उपदेश दिये थे।
    - जसवन्तसिंह II की प्रेमिका नन्ही जान ने दयानन्द सरस्वती को जहर दिया था।
7. एक खम्भा महल:– अजीतसिंह ने बनवाया था।
8. बीजोलाई के महल
9. फूल महल:– नक्काशी के लिए प्रसिद्ध।

    अभयसिंह ने बनवाया था।

    जोधपुर किले में है।

3. कोटा के महल:–

1. हवामहल:– रामसिंह II ने निर्माण करवाया।
2. जगमन्दिर:– किशोरसागर तालाब के पास बना हैं।

3. गुलाब महल
4. अभेडा महल
5. अबली मीणी का महल

4. बीकानेर के महल व हवेलियाँः–

1. लाल गढ़ पैलेस
2. गजनेर पैलेस
3. बच्छावत की हवेली
4. रामपुरिया हवेली
5. मुंदड़ा हवेली
6. मोहता हवेली
7. कोठारी हवेली
8. गोलेछा हवेली।

- बीकानेर की हवेलियों में मुगल, यूरोपीय व किशनगढ़ शैली के चित्र अधिक दिखाई देती है।
- ज्यामितीय अलंकरण व फूल पत्तियां अधिक बनाये जाते थे।

5. डूंगरपुर के महलः–

1- जूना महल
2. एक खम्बिया महल।

6. उदयपुर के महलः–

कर्णसिंह के बनवाया

1.कर्ण विलास महल
2.दिल खुश महल
3.जगमन्दिर
4.प्रीतम निवास महल– जगतसिंह II ने बनवाया
5.बागौर हवेलीः– पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय चलता है।

- पश्चिम राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन व दीव की सांस्कृतिक कलाओं को संरक्षण दिया जाता है।
- इस हवेली में विश्व की सबसे लम्बी पगड़ी रखी हुई है।

7. टोंक की हवेलियाँः–

1. सुनहरी कोठी
2. मुबारक महल

8. जयपुर के महलः–

1. प्यारे मियां की हवेली

2. सलीम मंजिल हवेली
3. जलमहल
4. हवामहल
5. सामोद पैलेसः–
6. नायला फोर्ट :– बिल क्लिंटन रूका था।

9. अलवरः–

1. विनय विलास पैलेस (सिटी पैलेस)
2. फूल बाग पैलेस
3. हवा बंगला (तिजारा)
4. केसरोली पैलेस

10. शेखावाटी की हवेलीः– शेखावाटी की हवेलियाँ अपने भित्ति चित्रों के लिए जानी जाती

1. **महनसर** (झुन्झुनू)–
   - तोलाराम जी का कमरा
   - सोने–चाँदी की दुकान (हवेली)
2. **नवलगढ़** (झुन्झुनू)– भगतों की हेवली
3. **झुन्झुनूं** –ईसरदास मोदी की हवेली
   - टीबड़ेवाले की हवेली
   - खेतड़ी महल – 'शेखावाटी का हवामहल'
4. **श्रीमाधोपुर**–पंसारी हवेली
5. **चुरू**–मंत्रियों की हवेली
   - सुराणा हवेली, मालजी का कमरा, दानचंद चोपड़ा की हवेली।
6. **चिड़ावा** –बागड़ियां व डालमिया की हवेली।
7. **बिसारु** –नाथुराम पोद्दार, सीताराम सिगतिया,हीराराम बनारसीलाल,जयदयाल केडिया।
8. **मुकुन्दगढ़** –केसर देव कानोड़िया की हवेली।
9. **डूंडलोद** – गोयनका हवेली।
10. **मंडावा** –सागरमल लडिया, रामदेव चौखाणी, मोहनलाल सर्राफ, रामनाथ गोयनका, हनुमान प्रसाद, डबल हवेली, झुन्झुनवाला हवेली मुरमुरिया हवेली इत्यादि।

11. झालावाड़ :–

1. काष्ठ प्रासाद –झालावाड़ के राजा राजेन्द्र सिंह ने निर्माण करवाया।

12. डीग – 'जलमहलों की नगरी'

1. गोपाल महल
2. सावन भादों महल

राजस्थान की चित्रकला

- राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहला वैज्ञानिक आनन्द कुमार स्वामी ने 'राजपूत पेंटिंग्स' नामक पुस्तक में 1916 ई. को प्रस्तुत किया।
- कुमार स्वामी, ओ.सी.गांगुली तथा हैवेल ने इसे **'राजपूत चित्रकला'** कहा है।
- डब्ल्यू. एच. ब्राउन ने भी अपने ग्रंथ 'इण्डियन पेंटिंग्स' में इस प्रदेश की चित्रकला को **'राजपूत कला'** नाम दिया है।
- रायकृष्णदास ने इन मतों का खण्डन कर इसे **'राजस्थानी चित्रकला'** नाम दिया।
- राजस्थान की चित्रकला की विभिन्न शैलियों पर अनेको विद्वानों ने पुस्तकें प्रकाशित कर इसके प्रारूप को स्थापित करने में सहयोग दिया है। जिनमें मेवाड़ पर सर्वश्री डॉ. मोतीचन्द, श्रीधर अंधारे, डॉ. आर. के. वशिष्ठ एवं किशनगढ़ पर श्री एरिक डिक्सन एवं डॉ. फैयाजअली, बूँदी–कोटा पर सर्वश्री प्रमोदचन्द्र, डब्ल्यू. जी. आर्चर एवं महाराजा ब्रजेन्द्रसिंह कोटा के नाम प्रमुख है।
- राजस्थान की चित्रकला को भौगोलिक व सांस्कृतिक रूप से 4 भागो में बाँटा गया।

1. **मेवाड़ शैली –**
    - चावंड शैली
    - उदयपुर शैली
    - नाथद्वारा शैली
    - देवगढ़ उपशैली
    - शाहपुरा उपशैली
    - बनेड़ा
    - बागौर
    - बेगूँ
    - केलवा आदि ठिकाणों की कला।
2. **मारवाड़ शैली –**
    - जोधपुर शैली
    - बीकानेर शैली
    - किशनगढ़ शैली
    - अजमेर शैली
    - नागौर शैली
    - सिरोही शैली
    - जैसलमेर शैली

- घाणेराव, रियाँ, भिणाय, जूनियाँ आदि ठिकाणा कला।

3. **हाड़ौती शैली** –
    - बूँदी शैली
    - कोटा शैली
    - झालावाड़ उपशैली।
4. **ढूंढाड़**–
    - आमेर शैली
    - जयपुर शैली
    - शेखावाटी शैली
    - अलवर शैली
    - उणियारा उपशैली
    - झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकाणों की कला।

➢ राजस्थान में आलनिया दर्रा (कोटा), बैराठ (जयपुर) तथा दर (भरतपुर) नामक स्थानों से शैलाश्रयों (गुफाओं) में आदिमानव द्वारा बनाये रेखांकन प्रदेश की प्रारम्भिक चित्रण परम्परा को दर्शाते है।

➢ वी.एस.वाकणकर ने राजस्थान में 1953 में कोटा में चम्बल घाटी और दर्रा, झालावाड़ के निकट कालीसिंध घाटी और अरावली में माउंट आबू तथा ईडर में चित्रित शैलाश्रयों की खोज की।

➢ राजस्थान में सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रंथ 1060 ई. में रचित **'ओघ नियुक्ति वृत्ति'** एवं **'दस वैकालिका सूत्र चूर्णि'** जिनभद्र सूरी भण्डार (जैसलमेर में) रखे गए है।

➢ राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि मेदपाट (मेवाड़) है, जो अजंता चित्रशैली से पूर्णतया प्रभावित है।

➢ राजस्थानी चित्रकला पर प्रारम्भ में जैन शैली, गुजरात शैली और अपभ्रंश शैली का प्रभाव था, किन्तु बाद में यह मुगल चित्रकला से प्रभावित हुई।

मेवाड़ चित्रकला

➢ राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भिक और मौलिक रूप मेवाड़ शैली में मिलता है। मेवाड़ शैली के अंतर्गत पोथी ग्रंथों का अधिक चित्रण हुआ है। इसने अजंता चित्रकला को आगे बढ़ाया।

➢ 1260 ई. का **'श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि'** नामक चित्रित ग्रन्थ इस शैली का प्रथम उदाहरण है जो तेजसिंह के शासनकाल में आहड़ में चित्रित किया गया। (चित्रकार–कमलचंद्र)

➢ यह शैली 1423 ई. में मोकल के शासनकाल में देलवाड़ा में लिखी गयी **'सुपार्श्वनाथ चरितम्'** पुस्तक में भी दिखायी देती है।

➢ डगलस बैरेट एवं बेसिल गे ने **'चौरपंचाशिका शैली'** का उद्गम मेवाड़ में माना है। महाराणा कुंभा का काल कलाओं के उत्थान की दृष्टि से स्वर्णिम युग माना जाता है।

➢ उदयसिंह (1535–1572ई.) के काल में बने चित्रों में भगवत पुराण का 'परिजात अवतरण' (1540 ई.) मेवाड़ के चित्रकार नानाराम की कृति है।

चावण्ड/उदयपुर शैली

- महाराणा प्रताप के समय इस शैली का स्वतन्त्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- चित्रकार निसारद्दीन ने ढोला मारू का चित्र (1592 ई.में) बनाया जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखा गया।
- ''अमरसिंह प्रथम'' के समय 1605 ई. में निसारद्दीन ने **''रागमाला''** का चित्रण किया। यह चित्र भी राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखा गया है।इसी समय **''बारहमासा''** का भी चित्रण किया गया।
- ''जगतसिंह प्रथम'' का शासन **''मेवाड़ की चित्रकला का स्वर्णकाल''** था। इस समय उदयपुर में **''चितेरो की ओवरी''** (तस्वीरां रो कारखानों) का निर्माण करवाया।
- इस समय साहिबदीन ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाने प्रारम्भ किये।साहिबदीन ने**'भागवत पुराण रागमाला'** का चित्रण भी किया था।
- मनोहर भी इस काल का मुख्य चित्रकार था। इसने रामायण का चित्र बनाया।
- जयसिंह के समय लघुचित्रों का निर्माण अधिक हुआ।
- संग्रामसिंह द्वितीय के समय कलीला दमना तथा मुल्ला दो प्याजा के लतीफे, गीत गोविन्द, बिहारी सतसई, सुन्दर श्रृंगार चित्रित किये गये।

मुख्य चित्रकार :–

- नुरूद्दीन :– जगतसिंह द्वितीय का चित्र बनाया था।
- कृपाराम
- गंगाराम

- जगन्नाथ
- नानाराम– उदयसिंह के शासनकाल में परिजात अवतरण का चित्र बनाया।

विशेषताएँः–

- मेवाड़ शैली में पुरूषाकृति गठीली मूँछों से युक्त चेहरे, विशाल नयन, खुले हुए अधर, छोटी ग्रीवा तथा छोटा कद, उदयपुरी पगड़ी व लंबा साफा तथा चित्रांकन सरलता के भाव से युक्त, मीनाकृत आँखें, सीधी लंबी नाक तथा भरी हुई दोहरी चिबुक ठिगना कद, लूंगड़ी–घाघरे और कंचुकी तथा ठेठ राजस्थानी आभूषणों से सज्जित रहा है।
- प्रकृति का संतुलित चित्रण मेवाड़ चित्रकला की प्रमुख विशेषता रही है।
- अधिकतर लाल, पीले, हरे, नीले, सफेद आदि सूचक रंगों का प्रयोग किया गया है।
- **"कदम्ब के पेड़"** का अधिक चित्रण होता था।
- शिकार के दृश्यों में 3–D प्रभाव होता था।
- बेसिल गे व डगलस गैरेट के अनुसार मेवाड़ चोरपचांशिका का उद्गम चित्र था।

नाथद्वारा

- वल्लभ सम्प्रदाय के अधिक प्रभाव के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बने।
- नाथद्वारा की पिछवाई चित्रकला प्रसिद्ध है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर में मूर्ति के पीछे कपड़े के पर्दे अथवा दीवारों पर कृष्ण लीलाओं का चित्रण किया जाता था।
- यह शैली उदयपुर तथा बृज शैली का मिश्रित रूप है।
- **विशेषताएँः–**
  - 18 वीं सदी के इन चित्रों में कृष्ण चरित्र की बहुलता के कारण यशोदा, नन्द, बाल–ग्वाल, गोपियाँ तथा वल्लभ संप्रदाय के संतों का चित्रांकन विशेष रूप से हुआ है। इसमें हरे–पीले रंगों का अधिक प्रयोग हुआ है।
  - इसकी अन्य विशेषताओं में केन्द्र में श्रीनाथजी की आकृतियाँ गायों का मनोरम दृश्य, आसमान में देवताओं का अंकन, पृष्ठभूमि में सघन वनस्पति, कदली वृक्षों की प्रधानता आदि है।

प्रमुख चित्रकारः–

- ✓ बाबा रामचन्द्र
- ✓ नारायण
- ✓ चतुर्भुज
- ✓ रामलिंग
- ✓ चम्पालाल
- ✓ घासीराम

- ✓ तुलसीराम
- ✓ महिला चित्रकारों में **कमला एवं इलायची** का नाम मिलता है।

देवगढ़

- अंतिम प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।(16वां)
- 1680 में ''द्वारिकादास चुण्डावत'' के समय प्रारम्भ हुई।
- ''श्रीधर अंधारे'' द्वारा इस चित्रकला को प्रकाश में लाया गया।
- ''मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़'' शैलियों का मिश्रण है।
- इस शैली के भित्ति–चित्र मोती महल, अजारा की ओवरी में देखने को मिलते हैं।
- **विशेषताएँ** :– प्राकृतिक परिवेश, शिकार के दृश्य, अन्तःपुर, राजसी ठाठ–बाठ, शृंगार, सवारी आदि इसके प्रमुख विषय रहे है। इसमें पीले रंग की बहुलता रही है।
- **प्रमुख चित्रकार –**
  - ✓ बगता
  - ✓ कँवला प्रथम
  - ✓ कँवला द्वितीय
  - ✓ हरचंद
  - ✓ नगा
  - ✓ चोखा
  - ✓ बैजनाथ है।

मारवाड़ चित्रकला

➢ तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने सातवीं सदी में मारू देश में चित्रकार शृंगधर का उल्लेख किया है, जिसने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली को जन्म दिया। इसके प्रारम्भिक चित्रावेश हमें प्रतिहारकालीन ओघ नियुक्ति वृत्ति में मिलते है।

➢ रामावतार अग्रवाल ने 'मारवाड़ म्यूरल' नामक पुस्तक की रचना की। जिसमें मारवाड़ चित्रकला का वर्णन है।

जोधपुर

- मालदेव के समय जोधपुर चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- इस समय 'उत्तराध्ययन सूत्र' नामक जैन ग्रन्थ तथा चोखेलाव महल (जोधपुर) में भित्ति चित्र चित्रित किये गये।
- सूरसिंह के समय ढोलामारू तथा भागवत पुराण का चित्रण किया गया।
- हास्य के चित्र तथा शान–ओ–शौकत (मुगल प्रभाव)
- जसवन्तसिंह के समय मुगल प्रभाव आ गया था।

- इस समय भगवान श्रीकृष्ण के विविध चित्र बनाये गये।
- महाराजा अजीतसिंह के शासनकाल में सामन्ती संस्कृति से सम्बन्धित सुन्दर व प्राणवान चित्र बनाये गये।
- मानसिंह का शासनकाल जोधपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था। इस समय नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित ग्रन्थों का चित्रण किया गया।जैसे :– शिव पुराण, दुर्गा पुराण, नाथ चरित्र।
- मतिराम की पुस्तक रसराज के 63 चित्र महामंदिर से प्राप्त हुए। (चित्रकार–दानाराम)
- तख्तसिंह के समय इस चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव आ गया।इस समय ए. एच. मूलर ने दुर्गादास राठौड़ का चित्र बनाया।

प्रमुख चित्रकारः–

- शिवदास
- शंकरदास
- जीतमल
- रामसिंह
- अमरदास
- छज्जू
- किशनदास
- अमरदास
- वीरजी– 1623 ई. में पाली के प्रसिद्ध वीर पुरूष विट्ठलदास चाँपावत के लिए रागमाला का चित्रण किया।
- डालचन्द–इसने महाराजा अभयसिंह का नृत्य देखते हुए चित्र बनाया। जो मेहरानगढ़ संग्रहालय जोधपुर तथा कुँवर संग्रामसिंह संग्रह जयपुर में सुरक्षित है।
- दाना भाटी– इसके चित्रों में मारवाड़ चित्रकला का चरमोत्कर्ष दिखाई देता है।

विशेषताएँः–

- मारवाड़ (जोधपुर) शैली के विषयों में प्रेमाख्यान प्रधान विषय रहा है।
- इन प्रेमाख्यानों में ढोला–मरवण, मूमल–महेन्द्र, रूपमति–बाजबहादुर, कल्याण–रागिनी प्रसिद्ध रहे हैं।
- जोधपुर शैली के पुरूष लंबे–चौड़े, गठीले बदन के तथा उनके गल–मुच्छे, ऊँची पगड़ी, राजसी वैभव के वस्त्राभूषण और स्त्रियों की वेशभूषा में ठेठ राजस्थानी लहँगा, ओढनी और लाल फुंदनों का प्रयोग प्रमुख रूप से हुआ है।
- बादाम सी आँखें और ऊँची पाग जोधपुर शैली की अपनी निजी देन है।
- मारवाड़ शैली में लाल, पीले रंग का बाहुल्य है, जो स्थानीय विशेषता है।
- हासिये में पीला रंग भरा जाता था।

➢ प्रकृति का चित्रण मारवाड़ के परिवेश के अनुकूल हुआ है। चित्रों में खंजन पक्षी को भी बखूबी दर्शाया गया है।

बीकानेर

- रायसिंह के समय बीकानेर चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ, तथा भागवत पुराण का चित्रण किया गया।
- अनूपसिंह का शासनकाल बीकानेर चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- बीकानेर में 2 प्रकार की चित्रकलाएँ प्रचलित हुई।

1. उस्ता कलाः–

- ऊँट की खाल पर की जाने वाली स्वर्ण चित्रकारी उस्ता कला कहलाती है। इसके लिए अली रजा व रूक्नुद्दीन को लाहौर से बुलाया गया था।
- महाराजा अनूपसिंह के समय में उस्ता परिवार ने हिन्दू कथाओं, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी काव्यों को आधार बनाकर सैकड़ों चित्र बनाये। इस समय यह शैली चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।
- हिसामुद्दीन उस्ता को उस्ता कला के लिए पद्मश्री मिल चुका है।
- कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर (बीकानेर) में उस्ताकला सिखाई जाती है।
- रामलाल, हसन, आसीर खान इत्यादि प्रमुख चित्रकार थे।

2. मथेरणा कलाः–

- मथेरणा परिवार पारम्परिक जैन मिश्रित राजस्थानी शैली के चित्र बनाने में सिद्धहस्त था। इन्होनें बीकानेर महाराजाओं के चित्र बनाये।
- इसमें गीले पलस्तर पर चित्रकारी होती है। बीकानेर में इसे 'आला–गीला' कहा जाता है। शेखावाटी क्षेत्र में इसे पणों कहा जाता है।

➢ Note :- इसे फ्रेस्को या अरायस भी कहा जाता है।

प्रमुख चित्रकार –चन्दूलाल, मुन्नालाल, मुकुन्द।

विशेषताएँः–

- 18वीं सदी में ठेठ राजस्थानी शैली में चित्र बने उनकी रंगत ही अलग है।
- बीकानेर शैली में मुगल स्कूल के मिश्रित प्रभाव के फलस्वरूप इकहरी तन्वंगी कोमल ललनाओं का अंकन नीले, हरे और लाल, बैंगनी, जामुनी, सलेटी रंगों का प्रयोग, शाहजहाँ और औरंगजेब शैली की पगड़ियों के साथ ऊँची मारवाडी पगडियाँ, ऊँट, हरिन बीकानेरी रहन–सहन और राजपूती संस्कृति की छाप विशिष्ट रूप से देखने को मिलती है।
- बरसते बादलों में से सारस मिथुनों की नयनाभिराम आकृतियाँ भी इसी शैली की विशेषता है। यहाँ फव्वारों, दरबार के दृश्यों आदि में दक्षिण शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

- रेत के धोरों का चित्रण, फूल–पत्तियों का चित्रण किया गया है।
- पंजाबी, मुगल, दक्कनी चित्रकला का प्रभाव दिखाई देता है।
- हिन्दु देवी–देवताओं के चित्र मुस्लिम चित्रकारों द्वारा बनाये गये।
- बीकानेर व शेखावाटी के चित्रकार, चित्रों के साथ नाम व दिनांक लिखते थे।
- ए. एच. मूलर की पुस्तक –जैतसी का कामरान पर आक्रमण ।
- पृथ्वीराज राठौड़ का महाराणा प्रताप को पत्र।
- जांगलधर बादशाह राजा कर्णसिंह।
- आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट – हरमन गोट्ज

किशनगढ़

- किशनसिंह ने सन् 1609 ई. में किशनगढ़ राज्य की नींव डाली।
- सावन्तसिंह (नागरीदास) का शासनकाल किशनगढ़ चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक होने के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बनाये गये।
- विष्णु प्रिया को राधा के रूप में चित्रित किया गया है।
- सावन्तसिंह ने अपनी प्रेमिका विष्णु प्रिया(रसिक बिहारी) को राधा के रूप में चित्रित करवाया।
- सावन्तसिंह के चित्र–
  1. मनोहर मंजरी
  2. देहदशा
  3. रसिक रत्नावली

प्रमुख चित्रकारः–

1. **मोरध्वज निहालचंद–**
   - ✓ यह सावन्त सिंह का प्रमुख चित्रकार था।
   - ✓ इसने सावन्तसिंह की पुस्तक नागर समुच्चय का चित्रण किया था।
   - ✓ इसने रसिक बिहारी का व्यक्तिगत चित्र बनाया था। जिसे **'बणी–ठणी'** कहा जाता है। इस पर 1973 ई. में डाक टिकट जारी किया गया।
   - ✓ ऐरिक डिक्सन ने बणी–ठणी को **'भारत की मोनालिसा'** कहा है।
2. **अमीरचन्द–"चाँदनी रात की गोष्ठी"** नामक चित्र बनाया।

विशेषताएँः—

- इस चित्र शैली में पुरूषाकृति में लम्बा इकहरा नील छवियुक्त शरीर, मोती जड़ित श्वेत या मूँगिया पगड़ी, उन्नत ललाट, खंजनाकृत कर्णान्त तक खिंचे विशाल अरूणाभ नयन और नारी आकृति में तन्वंगी, लम्बी, गौरवर्ण, नुकीली चिबुक, सुराहीदार गर्दन, पतली कमर, लम्बी कमल पंखुड़ी सी आँखें चित्रित की गई है।
- दूर—दूर तक फैली झील, उनमें केलि करते हंस, बतख, सारस, तैरती नौकाएं, केले के गाछ एवं रंग—बिरगें उपवन, चाँदनी रात में राधाकृष्ण की केलि—क्रीड़ाएँ, प्रातःकालीन और संध्याकालीन बादलों का सिन्दूरी चित्रण किशनगढ़ शैली की विशेषताएँ हैं।
- बणी—ठणी अर्थात राधा के रूप— सौन्दर्य का चित्रांकन इस शैली का विशेष आकर्षण रहा है। यहां के प्रमुख रंग सफेद, गुलाबी, स्लेटी और सिंदूरी है।
- सफेद व गुलाबी रंग का प्रयोग अधिक किया गया। हासिये (margin) में गुलाबी रंग भरा जाता था।
- कांगडा चित्रकला का प्रभाव। (हिमाचल प्रदेश)
- महिलाओं के चित्रों में नाक में वेसरि नामक आभूषण है।

प्रमुख चित्रकारः—

- ✓ नानकराम
- ✓ सीताराम
- ✓ सुरध्वज
- ✓ मूलराज
- ✓ मोरध्वज निहालचन्द
- ✓ बदनसिंह
- ✓ रामनाथ
- ✓ सवाईराम
- ✓ लालड़ी दास

नागौर

- बुझे हुये रंगो का प्रयोग अधिक किया गया।
- नागौर उपशैली में लकड़ी के कंवाडो एवं किले के भित्ति—चित्रण में मारवाड़ शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- 'वृद्धावस्था' के चित्रों को नागौर के चित्रकारों ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक चित्रित किया है।
- पारदर्शी कपड़े चित्रित किये जाते थे।

जैसलमेर

- जैसलमेर शैली का विकास मुख्य रूप से महारावल हरराज, अखैसिंह एवं मूलराज के संरक्षण में हुआ।
- 'मूमल' जैसलमेर शैली का प्रमुख चित्र है।
- जैसलमेर शैली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इस पर मुगल या जोधपुर शैली का प्रभाव नहीं है, यह एकदम स्थानीय शैली है।

अजमेर

- राजनीतिक उथल–पुथल तथा धार्मिक प्रभावों के कारण अजमेर शहर में जहाँ दरबारी एवं सामंती संस्कृति का अधिक प्रभाव रहा, वहीं गाँवों में लोक–संस्कृति तथा ठिकाणों में राजपूत संस्कृति का वर्चस्व बना रहा।
- भिणाय, सावर, मसूदा, जूनियाँ जैसे ठिकाणों में चित्रण की परम्परा ने अजमेर–शैली के विकास और संवर्द्धन में विशेष योगदान दिया।
- जूनियाँ का चाँद, सावर का तैय्यब, नाँद का रामसिंह भाटी, खरबा से जालजी एवं नारायण भाटी, मसूदा से माधोजी एवं राम।
- जूनियाँ के चाँद द्वारा अंकित 'राजा पाबूजी' का सन् 1628 का व्यक्ति–चित्र इस शैली सुन्दर उदाहरण है। यही एक ऐसी कलम रही जिसको हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई धर्म को समान श्रेय मिला।

प्रमुख चित्रकार :–अल्लाबक्स, उस्ना और साहिबा (स्त्री चित्रकार)

घाणेराव

- जोधपुर के दक्षिण में स्थित गोडवाड़ भूखण्ड में घाणेराव का प्रमुख ठिकाना है।
- चित्रकार नारायण, छज्जू एवं कृपाराम ने नवीन चित्र शैली का निर्माण किया, जिससे घाणेराव को मारवाड़ की एक उपशैली के रूप में महत्व दिया जा सकता है।

ढूंढाड़ चित्रकला

आमेर/जयपुर

- मानसिंह के समय आमेर चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- इस समय ''रज्मनामा'' (महाभारत का फारसी अनुवाद) के 169 चित्र (1588 ई.) आमेर के चित्रकारों द्वारा बनाये गये थे।
- इसी समय यशोधरा चरित्र (1591 ई.) नामक ग्रन्थ का चित्रण किया गया। इसी समय बैराठ के तथाकथित मुगल गार्डन और मौजमाबाद के भित्ति–चित्र भी इस शैली में निर्मित है जिन पर मुगल प्रभाव साफ दिखाई देता है।

- आमेर चित्रशैली का दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण मिर्जा राजा जयसिंह (1621–1667ई.) के राज्यकाल से प्रारम्भ होता है मिर्जा राजा जयसिंह ने 'रसिकप्रिया' और 'कृष्ण रूक्मिणी वेली' नामक ग्रन्थ अपनी रानी चन्द्रावती के लिय सन् 1639 ई. में बनवाये थे।
- इसमें कृष्ण और गोपियों का युगल स्वरूप लोक शैली में चित्रित है।
- आमेर में ही मिर्जा राजा जयसिंह ने 1639 ई. में गणेश पोल का निर्माण करवाया जो भित्तिचित्रों व अलंकरणों से सुसज्जित हैं।
- सवाई जयसिंह के समय सुरतखाना(चित्रकार –साहिबराम, मोहम्मद शाह) की स्थापना की गई। जहाँ चित्रकार चित्रों का निर्माण करते थे।
- महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के समय चित्र सृजन का केन्द्र (सूरतखाना) आमेर से हट कर जयपुर आ गया।
- ईश्वरीसिंह के समय साहिबराम ने आदमकद चित्र प्रारम्भ किया।
- सवाई माधोसिंह प्रथम के समय कलाकारों ने चित्रों में रंगों को न भरकर मोती, लाख तथा लकड़ी की मणियों को चिपकाकर रीतिकालीन अलंकारिक मणिकुट्टिम प्रवृति को बढ़ावा दिया।
- सवाई माधोसिंह प्रथम के समय गलता के मंदिरों, सिसोदिया रानी के महल, चन्द्रमहल, पुण्डरीक की हवेली में कलात्मक भित्ति चित्रण हुआ।
- सवाई प्रतापसिंह का शासनकाल जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- इस समय चित्रकला स्कूल की स्थापना की गई।
- इस समय लालचन्द नामक चित्रकार पशुओं की लडाई के दृश्य बनाता था।
- महाराजा सवाई प्रतापसिंह के समय में पचास से भी अधिक कलाकार सूरतखाने में चित्रों को बनाने के लिये नियुक्त थे, जिनमें रामसेवक, गोपाल, हुकमा, चिमना, सालिगराम, लक्ष्मण, आदि प्रमुख थे।
- इस समय राधाकृष्ण की लीलाओं, नायिका भेद, रागरागिनी, बारहमासा आदि का चित्रण प्रधानतः हुआ।
- महाराजा सवाई रामसिंह ने कला के विकास के लिये 'महाराजा स्कूल आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' की सन् 1857 ई. में स्थापना की, जो वर्तमान में 'राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स' के नाम से जाना जाता है।

विशेषताएँः–

- भित्ति चित्रण, पोथीचित्रण, आदमकद पोर्ट्रेट, लघुचित्रण में जयपुर के कलाकारों ने मुगल प्रभाव को ग्रहण करते हुए राजपूती संस्कृति की नफासत और रंगों की लोक कलात्मकता को बनाये रखा है।
- बड़े–बड़े पोट्रेट (आदमकद व्यक्ति चित्र) एवं भित्ति चित्रण की परम्परा जयपुर शैली की विशिष्ट देन है।

- जयपुर के भित्ति–चित्रों की एक विशेष पद्धति है जिसे स्थानीय भाषा में आलागीला, आराइश तथा मोराकसी कहा जाता है।
- इस पद्धति में चूने के तैयार पलस्तर को घोट कर चिकना कर लिया जाता है तथा इस पर चित्रण किया जाता है।
- राजस्थान में सर्वप्रथम आलागीला पद्धति का प्रारम्भ आमेर में हुआ जो कच्छवाहा–मुगल संबंधों के प्रभाव का परिणाम था।
- जयपुर शैली का प्रभाव ईसरदा, सिवाड, झिलाय, उणियारा, चौमू, सामौद, मालपुरा, जैसे ठिकानों पर भी रहा, जिससे वहाँ ठिकाना पेंटिंग विकसित होती रही।
- दाढी–मूंछ विहिन पुरूष के चित्र।
- लाल–पीला व केसरिया, हरा रंग अधिक प्रयोग। हासिये में गहरा लाल रंग भरा जाता था।

➢ **प्रमुख चित्रकार :–**
  - लालजी
  - कुशला
  - रामजीदास
  - हुक्मा
  - गोपाल
  - उदय।

अलवर

- अलवर के संस्थापक राव राजा प्रतापसिंह के साथ शिवकुमार तथा डालूराम नामक चित्रकार जयपुर से अलवर आये।
- बख्तावर के शासनकाल में अलवर चित्रकला की शुरूआत हुई तथा राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण करवाया गया।
- इस समय के चित्रों में बख्तावर सिंह को जंगल में नाथों, जोगियों, फकीरों के साथ धर्म चर्चा करते हुए दिखाया गया है।
- विनयसिंह का समय अलवर चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- विनयसिंह का अलवर चित्रकला में वहीं स्थान है जो मुगल चित्रकला में अकबर का था।
- बलदेव व गुलाम अली ने गुलिस्ता नामक पुस्तक का चित्रण किया।
- विनयसिंह स्वयं बलदेव से चित्रकारी सीखते थे।
- शिवदानसिंह (कोकशास्त्र) के समय कामकला के आधार पर चित्र बनाये गए।
- नफीरी वादन का चित्र इस समय का सुन्दर उदाहरण है।
- महाराजा मंगलसिंह के समय मूलचन्द तथा उदयराम ने हाथीदाँत पर चित्रकारी की।

- महाराजा जयसिंह के शासनकाल में रामगोपाल, रामप्रसाद, जगमोहन, रामसहाय नेपालिया जैसे कलाकारों ने अलवर शैली को अंतिम समय तक जीवित रखा।

विशेषताएँः–

- चिकने व उज्ज्वल रंगों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- हासिये में बेल बूटे बनाये जाते थे।
- जयपुर, मुगल, ईरानी चित्रशैली का प्रभाव था।
- वेश्या चित्रण, योगासन चित्रण, लघु चित्रण अधिक किया गया।
- इस चित्रशैली में पुरूषों के मुख की आकृति आम की शक्ल में बनाई गयी है।
- स्त्रियों के कद कुछ ठिगने, उठी हुई वेणियाँ अत्यधिक परिश्रम से बनाये गये अंग–प्रत्यंग अलवर शैली की अपनी विशेषता है।
- **प्रमुख चित्रकार –**
  - ✓ शिवकुमार
  - ✓ डालूराम
  - ✓ जमनादास
  - ✓ नंदलाल
  - ✓ बक्साराम
  - ✓ सालिगराम

उनियारा

- राव राजा सरदारसिंह ने **धीमा, भीमा, मीरबक्श, काशी, रामलखन** आदि चित्रकारों को आश्रय प्रदान किया।
- राम–सीता, लक्ष्मण व हनुमान मीरबक्श द्वारा चित्रित प्रमुख चित्र है।
- इस शैली पर बूँदी तथा जयपुर का मिश्रित प्रभाव दिखाई देता है।

शेखावाटी

- शेखावाटी की हवेलियों के भित्ति चित्रों के कारण शेखावाटी को **'ओपन आर्ट गैलेरी'** कहा जाता है।
- कत्थई, नीले व गुलाबी रंग का प्रयोग अधिक किया गया।
- यूरोपीय प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
- प्रमुख विषय – हाथी और घोड़े, मल्लयुद्ध, दधिमंथन, गौदोहन, कामकला, रागरागिनी, साधु–संतों, लोककथाओं, देवी–मिथकों, विचित्र पशु–पक्षी, राक्षसों का चित्रण।
- अब इस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर का क्षरण हो रहा है।

- फ्रांस के नदीन ला प्रिंस ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ति चित्रों के सरंक्षण के सन्दर्भ में सराहनीय कार्य कर एक मिसाल पेश की है।
- जोगीदास की छतरी के भित्ति चित्र–उदयपुरवाटी (चित्रकार –देवा)
- कृष्ण तथा आठ गोपियों का चित्रण – गोयनका की हवेली, फतेहपुर।

हाड़ौती चित्रकला

बूँदी

- सुरजन के समय बूँदी चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- शत्रुसाल के समय रंगमहल का निर्माण करवाया गया। जो भित्ति चित्रों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- भावसिंह तथा उनके पुत्र अनिरूद्धसिंह ने मुगल शासकों के निर्देशों से दक्षिण भारत के युद्धों में भाग लिया, जिससे बूँदी शैली में दक्षिण शैली का प्रभाव समाविष्ट हुआ।
- मतिराम भावसिंह का दरबारी विद्वान था। इसकी पुस्तक– रसराज ललितलाम।
- उम्मेदसिंह का समय बूँदी चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- इस समय चित्रशाला का निर्माण करवाया गया। जो भित्ति चित्रों का स्वर्ग है।
- उम्मेदसिंह को जंगली सुअर का शिकार करते हुये चित्रित किया गया (1750 ई.) है।

विशेषताएँः–

- हरा, गुलाबी, लाल, हिंगलू रंगों का प्रयोग अधिक किया गया।
- प्रकृति का चित्रण अधिक किया गया।
- मेवाड़ शैली का अधिक प्रभाव दिखाई देता है।
- बूँदी का किला अपने भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है।
- पशु–पक्षी, बादल, जलाशय, हरे–भरे वृक्ष, नाचते मोर आदि के चित्रण अधिक किया गया।
- रागरागिनी, नायिका भेद, ऋतु वर्णन, बारहमासा, कृष्णलीला, दरबार, शिकार, हाथियों की लड़ाई, उत्सव अंकन आदि शैली के चित्राधार रहे है।

➢ मुख्य चित्रकार :–**अहमद, साधुराम, रामलाल, सुरजन, किसन।**

कोटा

- रामसिंह के समय कोटा चित्रकला का विकास प्रारम्भ हुआ।
- भीमसिंह के समय वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण भगवान श्री कृष्ण के चित्र अधिक बनाये गये।
- उम्मेदसिंह का समय कोटा चित्रकला का स्वर्णकाल था।

विशेषताएँ:–

- नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया।
- शिकार के दृश्यों का चित्रण अधिक किया गया।
- मोर, शेर, चम्पा का अधिक चित्रण।
- महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया गया।
- डालू नामक चित्रकार ने रागमाला का चित्रण किया था।
- हल्के हरे, पीले तथा नीले रंगों का प्रयोग अधिक हुआ है।

प्रमुख चित्रकार:–

✓ रघुनाथ
✓ गोविन्दराम
✓ लच्छीराम
✓ नूर मोहम्मद।

- डालू ने रागमाला का चित्रण किया था।

☑ चित्रकलाओं के अनुसंधानकर्ता :–

श्रीधर अंधारे
मोतीचंद } **मेवाड़**
आर. के. वशिष्ट

एरिक डिक्सन
फेयाज अली } **किशनगढ़**

प्रमोद चंद्र
डब्ल्यू जी आर्चर } **हाड़ौती**
बृजेंद्र सिंह

राजस्थान के आधुनिक चित्रकार

1. रामगोपाल विजयवर्गीय

- इनके गुरू ''शैलेन्द्रनाथ डे'' थे।
- इन्होने ''सबसे पहले एकल चित्र प्रदर्शनी'' लगाना प्रारम्भ किया था।
- इन्होनें अभिसार निशा नामक पुस्तक लिखी।

2. गोवर्धन लाल ''बाबा'' – ''भीलों का चितेरा''

- इन्होनें भील जनजाति से संबंधित चित्र अधिक बनाए।
- प्रमुख चित्र – बारात

3. सौभाग्य मल गहलोत – इन्हे ''नीड़ का चितेरा'' कहा जाता है।

4. परमानन्द चोयल – ''भैंसो का चितेरा'' कहा जाता है।

5. जगमोहन माथोड़िया – ''श्वान का चितेरा'' कहा जाता है।

6. कुन्दन लाल मिस्त्री

- इन्होनें महाराणा प्रताप के चित्र अधिक बनाये थे।
- इनके चित्रों को देखकर ''राजा रवि वर्मा'' ने महाराणा प्रताप के चित्र बनाएं।

राजा रवि वर्मा त्रावणकोर (केरल) को ''भारतीय चित्रकला का पितामह'' कहा जाता है।

- कुन्दन लाल मिस्त्री को चित्र निपुण तथा चित्रकला भूषण की उपाधियाँ दी गई थी।
- अन्य चित्र – कुम्हारिन बाजार की ओर, क्षमादान, ग्राम्यबाला, सीता स्वयंवर।

7. भूरसिंह शेखावत –

- मुख्य चित्र – सर्दियों की सांझ में खाना बनाती हुई स्त्री और उसके बाल बच्चों का चित्र, सारंगी बजते हुए लोक कलाकार, सब्जी तोलते हुए मालन।
- इन्होनें क्रांतिकारियों तथा देशभक्त नेताओं के चित्र बनवाये।
- इनके चित्रों में राजस्थानी प्रभाव अधिक होता है।

8. देवकीनन्दन शर्मा –

- इन्होनें प्रकृति चित्रण अधिक किया।
- इन्हें 'द मास्टर ऑफ नेचर एण्ड लिविंग ऑब्जेक्ट' कहा जाता है।

9. ज्योतिस्वरूप कच्छावा –

- जंगल के चित्र ज्यादा बनाये। 'इनर जंगल' नाम से चित्र श्रृंखला बनाई थी।

10 ए. एच. मूलर –

- मुख्य चित्र – राव जोधा, दुर्गादास, पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा महाराणा प्रताप को अकबर के समक्ष समर्पण न करने व युद्ध जारी रखने के लिए ओजपूर्ण पत्र, जयजांगलधर बादशाह (करणसिंह), राव जैतसी द्वारा कामरान के शिविर में रात्रि हमला।

राजस्थान की हस्तकला (Handicraft)

थेवा कला

- ''काँच में सोने की कारीगरी'' से आभूषण बनाये जाते है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता था। इसके तहत महिलाओं के आभूषण, सजावाटी सामान तथा देवताओं की प्रतिमा बनाई जाती है।
- मुख्य केन्द्र :– प्रतापगढ़
- प्रवर्तक :– नाथू जी सोनी
- ''महेश राज सोनी'' को पदम्श्री मिल चुका है। गिरीश कुमार सोनी को इसके लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला चुका है।
- जस्टिन वकी ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय किया।

टेराकोटा

- चिकनी मिट्टी को पकाकर' उसके मूर्तियाँ और खिलौने तथा सजावटी सामान बनाया जाता है।
- मिट्टी में एक चौथाई गधे का गोबर मिलाकर, उसको जमीन पर थापा जाता है एवं उस पर विभिन्न आकृतियाँ उभारी जाती है। तत्पश्चात एक सप्ताह तक सूखने के बाद इन्हें आग में 800^0C ताप में पका कर गैरू रंग का कर दिया जाता है। इस प्रकार टेराकोटा आकृतियों का निर्माण होता है।
- मुख्य केन्द्र :–

1. मोलेला (राजसमन्द):– यहाँ के मोहनलाल कुमावत को पद्मश्री मिला है।
2. हरजी (जालौर) :– यहाँ पर देवताओं के घोड़े बनाये जाते है।
3. बू (नागौर)
4. बड़ोपल (हनुमानगढ़)– सबसे प्राचीनतम।

ब्लू पॉटरी

- इसे **'कामचीनी'** के नाम से भी जाना जाता है।
- चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंग के चित्र बनाये जाते है। यह कला मूलरूप से चीन तथा फारस की है। जो मुगल काल में भारत आई थी।
- सवाई रामसिंह के समय यह कला जयपुर में लोकप्रिय हुई। इसके लिए चूडामन व कालू नामक कारीगरों को भोला नामक कारीगर से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दिल्ली भेजा गया।

- कृपाल सिंह शेखावत को इसके लिए पद्मश्री मिल चुका है।इन्होने नीले रंग के अलावा भी 25 अन्य रंगो का प्रयोग किया। जिसे ब्लू पॉटरी की कृपाल शैली कहा जाता है।

- **अन्य मुख्य कारीगर**– नाथीबाई, त्रिलोकचन्द, भगवान सहाय, दुर्गालाल, हनुमान सहाय, गिरिराज, भैंरू खाखाड़, गोपाल सैनी आदि।

मीनाकारी

- सोने के आभूषणों में रंग चढ़ाया जाता है। मीनाकारी के लिए काले, नीले, गहरे पीले, नारंगी और गुलाबी रंग का प्रयोग किया जाता है।

➢ **मुख्य केन्द्र :– जयपुर**

- मानसिंह (आमेर के राजा) ने लाहौर से इसके कारीगरों को बुलाया था।
- कुदरत सिंह को इसके लिए पदम्श्री मिल चुका है।
- अन्य केन्द्र – नाथद्वारा, बीकानेर, रेतवाली (कोटा),।
- **अन्य प्रमुख कारीगर**– दुर्गासिंह, काशीनाथ, कैलाशचन्द्र।

रंगाई–छपाई

A. अजरख प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र :– बाड़मेर
- नीले व लाल रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।
- ज्यामिति अलंकरण अधिक बनाये जाते है। जो तुर्की शैली का प्रभाव है।

B. मलीर प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र :– बाड़मेर
- काले व कत्थई रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।

C. सांगानेरी प्रिन्ट

- काले व लाल रंग का प्रयोग अधिक किया जाता है।
- इसमें लट्ठा व मलमल पर छपाई की जाती है।
- मुन्ना लाल गोयल ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध किया।

D. बगरू प्रिन्ट

- प्राकृतिक रंगो का प्रयोग किया जाता है।
- बगरू प्रिन्ट का आँगन (पृष्ठभूमि) हरापन लिए होता है।
- बेलबूटे की छपाई की जाती है।

E. आजम प्रिन्ट

- मुख्य केन्द –आकोला (चित्तौड़गढ)

F. जाजम प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र – चित्तौड़गढ़
- गाडिया लोहार की महिलाओं के कपड़े इसी प्रिन्ट में बनाये जाते है।

G. बन्धेज प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र : जयपुर
- इसे ''Tie & Die'' कहा जाता है।

H. लहरिया

- **मुख्य केन्द्र** : जयपुर, पाली।
- लड़के के जन्म पर पीला पोमचा तथा लड़की के जन्म पर गुलाबी पोमचा ओढा जाता है।

I. चुनड़ी

- मुख्य केन्द्र – जोधपुर

J. दाबू प्रिन्ट

- मुख्य केन्द्र – आकोला (चित्तौड़गढ)
- रंगाई छपाई में जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे लूई या लुगदी से दबा देते हैं। यही लुगदी या लूई जैसा पदार्थ 'दाबू' कहलाता है, क्योंकि यह कपड़े के उस स्थान को दबा देता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता।
- सवाई माधोपुर में मोम का, बालोतरा में मिट्टी का तथा सांगानेर व बगरू में गेहूँ के बींधण का दाबू लगाया जाता है।

K. कोटा–डोरिया

- **मुख्य केन्द्र**– कैथुन (कोटा), मांगरोल (बारां)
- चौकोर डिजाइन व आकर्षक रंगों वाली साधा साड़ी होती है, जिस पर 300 वर्ग (चौकोर आकृतियाँ) छपी होती है।
- जालिमसिंह झाला इस कला में दक्ष मंसूर अहमद नामक बुनकर को हैदराबाद से लेकर आए थे एवं मंसूर अहमद ने ही इस कला की शुरूआत की थी। इसी कारण इस कला को मंसूरिया कला भी कहा जाता है।
- मुख्य कलाकार – जैनब।

बादले

- जिंक (जस्ते) के बने बर्तन जिन पर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ायी जाती है इनमें पानी ठण्डा रहता है।
- मुख्य केन्द्र :– जोधपुर

8. जस्ते की मूर्तियाँ : जोधपुर

9. काष्ठ कला : बस्सी (चित्तौड़गढ़)

- कावड़ एक मंदिरनुमा काष्ठ कलाकृति होती है जिसमें कई द्वार होते है एवं सभी द्वारों पर चित्र अंकित रहते है।
- कावड़ पूरी लाल रंग से रंगी जाती है एवं उसके ऊपर काले रंग से पौराणिक कथाओं को चित्रित किया जाता है।
- बैवाण भी एक काष्ठ मंदिर है, जो सामने से खुला और तीन ओर से बंद होता है। बैवाण पर लकड़ी की खुदाई कलात्मक है।
- कावड़ बनाना चित्तौडगढ़ जिले के बस्सी गाँव के खैरादियों का पुश्तैनी व्यवसाय है।
- प्रमुख कलाकार : मांगीलाल मिस्त्री।

10. रमकड़ा उद्योग : गलियाकोट (डूंगरपुर)

11. खेसले : लेटा (जालौर)

12. पाव रजाई : जयपुर

13. दरियाँ :– टांकला (नागौर),लवाण (दौसा),सालावास (जोधपुर)।

14. गलीचे/नमदे :– जयपुर, टोंक। (यह कला फारस से भारत आयी।)

- बीकानेर व जयपुर की जेल में कैदियों द्वारा गलीचे बनाये जाते है।

15. मिरर वर्क : जैसलमेर

मिरर वर्क के प्रकार – भौरठ, सूप, अरि, हूरम जी।

16. पेच वर्क : शेखावाटी

17. गोटा किनारी : खण्डेला (सीकर)

- गोटा किनारी के प्रकार–किरण, बाँकडी,लप्पा, लप्पी।

18. तारकशी के गहने :– नाथद्वारा (राजसमन्द)

- चाँदी के पतले तारों से आभूषण बनाये जाते है।
- मुख्य कारीगर – रामस्वरूप शर्मा (जयपुर)

19. खेल का सामान : हनुमानगढ़

20. खेती के औजार : नागौर

21. कागजी बर्तन: अलवर

22. कोफ्तगिरी : लोहे में सोने की कारीगरी

- मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर, उदयपुर।
- यह कला दमिश्क से भारत आई।

23. तहनिशा : पीतल में सोने की कारीगरी

- मुख्य केन्द्र : जयपुर, अलवर

24. नक्काशीदार फर्नीचर : बाड़मेर

25. **संगमरमर की मूर्तियाँ : जयपुर** (अर्जुन लाल प्रजापत को इसके लिए **पद्मश्री** मिला था)
काले संगमरमर की मूर्तियाँ– तलवाड़ा, बांसवाड़ा (बनाने वाली जाति – सोमपुरा)

26. **मोजड़ी : भीनमाल, बड़गाँव (जालौर)**

27. **बीड़ी उद्योग : टोंक**

28. **नसवार : ब्यावर**

29. **जड़ाई : जयपुर**

30. **तलवार : सिरोही,** मानसिंह के शासन काल में प्रसिद्ध। इसे मानशाही तलवार कहते है।

31. **लाख का काम : जयपुर, लक्ष्मणगढ़ (सीकर), सवाई माधोपुर, इन्द्रगढ़ (बूँदी)।**
    - जयपुर के अयाज अहमद लाख के काम के लिए प्रसिद्ध है।
    - लाख का कार्य करने वाले व्यक्ति **मणिहार** कहलाते हैं।
    - लाख से बनी चूडियाँ **मोखड़ी** कहलाती है।

32. **कुट्टी का काम : जयपुर**
    - सवाई रामसिंह के समय यह कला लोकप्रिय हुई।
    - मुख्य कारीगर – सांवलसिंह और जमनाप्रसाद।
    - कागज, चाक, मिट्टी, फेविकोल, गोंद, आदि को गलाकर व पीसकर लुगदी बना दी जाती है। कोई आकृति बनाने के लिए उस वस्तु के साँचे या मॉडल में तैयार लुगदी को दबा कर लगा दिया जाता है एवं सूखने पर फिनिशिंग देते हुए इच्छित रंग कर दिया जाता है। प्रायः कुट्टी से बनी पशु–पक्षी की आकृतियाँ अधिक प्रसिद्ध है।

33. **ब्लैक पॉटरी : कोटा, थ्यानोता (सवाई माधोपुर)**

34. **आरा–तारी : सिरोही**

35. **तीर–कमान : बोड़ीगामा (डूंगरपुर), चंदूजी का गढ़ा (बांसवाड़ा)**

36. **छाता : फालना (पाली)**

37. **जरी का कार्य : जयपुर**

38. **वार्तिक : कपड़े पर मोम लगाकर रंगना।**
    मुख्य केंद्र **खंण्डेला, सीकर**
    प्रमुख कलाकार – **उमेशचद्र शर्मा।**

39. **जटपट्टी : जसोल, बालोतरा।**
    बकरी के बालों से प्राप्त।
    प्रकार – जिरोही, भांकला, गद्हा।

40. **कागज उद्योग – सांगानेर जयपुर।**

41. **पारेवा पत्थर – देवल, डूंगरपुर।**

राजस्थान के हस्तशिल्पों का भौगोलिक संकेतक

	भौगोलिक संकेतक उत्पाद	स्थान
1.	कोटा डोरिया	कोटा
2.	कोटा डोरिया लोगो	कोटा
3.	ब्लू पॉटरी	दुदू , जयपुर
4.	ब्लू पॉटरी का लोगो	दुदू , जयपुर
5.	मोलेला क्ले वर्क	मोलेला (राजसमंद)
6.	मोलेला क्ले वर्क लोगो	मोलेला (राजसमंद)
7.	कठपुतली	उदयपुर
8.	कठपुतली लोगो	उदयपुर
9.	सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिन्ट	सांगानेर, जयपुर
10.	पोकरण पॉटरी	जैसलमेर
11.	थेवा कला	प्रतापगढ़
12.	मकराना मार्बल	मकराना, डीडवाना–कुचामन
13.	बगरू हैंड ब्लॉक प्रिन्ट	बगरू, जयपुर
14.	बीकानेरी भुजिया	बीकानेर
15.	फुलकारी	श्रीगंगानगर
16.	कोफ्तगिरी	उदयपुर
17.	कशीदाकारी	बीकानेर
18.	उस्ता कला	बीकानेर
19.	बन्धेज	जोधपुर
20.	मेहन्दी	सोजत (पाली)
21.	पिछवाई	नाथद्वारा

राजस्थान का साहित्य

भाषा का विकास

आर्य भाषा

(वैदिक संस्कृत)

पालि | **संस्कृत**

शौरसेनी प्राकृत | महाराष्ट्री प्राकृत | मागधी प्राकृत

गुर्जरी अपभ्रंश | शौरसेनी अपभ्रंश

राजस्थानी | गुजराती

डिंगल | पिंगल

- राजस्थानी भाषा के विकास के संबंध में तीन अपभ्रंश भाषाओं का उल्लेख किया जाता है तथा प्रत्येक विद्वान अपने मतानुसार अपभ्रंश का उल्लेख करता है जिसमें 'शौरसेनी अपभ्रंश', 'नागर अपभ्रंश' तथा 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का उल्लेख किया जाता है। इन सब में से 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का मत अधिक उचित लगता है क्योंकि 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' से ही मरूभाषा (राजस्थानी) तथा गुर्जरी से गुजराती भाषा का विकास हुआ।

डिंगल	**पिंगल**
1. पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप। 2. राजस्थानी पर गुजराती भाषा का प्रभाव पर राजस्थानी का शुद्ध रूप। 3. वीर रस का प्रयोग अधिक। 4. चारण साहित्य का अधिक सृजन। जैसे – बांकीदास की रचनाएं। 5. "वेलि क्रिसण रूकमणी री"–पृथ्वीराज राठौड़	1. पूर्वी राजस्थान का साहित्यिक रूप। 2. राजस्थानी पर ब्रज भाषा का प्रभाव। 3. श्रृंगार रस का प्रयोग अधिक। 4. भट्ट कवियों की रचनाएं अधिक लिखी गई जैसे– पृथ्वी भट्ट (चन्दबरदाई) की पृथ्वीराज रासौ।

राजस्थानी भाषा का विकास :–

- ❖ गुर्जरी अपभ्रंश – 11वीं से 13वीं शताब्दी तक ।
- ❖ प्राचीन राजस्थानी – 13वीं से 16वीं शताब्दी तक (जैन साहित्य)।
- ❖ मध्यकालीन राजस्थानी– 16वीं से 18वीं शताब्दी तक (चारण साहित्य)।
- ❖ आधुनिक राजस्थानी – 18वी शताब्दी से लेकर अब तक (विभिन्न विषयों पर)

➢ **राजस्थानी साहित्य की इतिहास परम्परा को हम निम्न रूप में भी प्रस्तुत कर सकते है–**

1. **प्राचीनकाल (वीरगाथा काल)**– 1050 ई. से 1450 ई. तक।

● इस काल में भारत पर निरन्तर पश्चिमी आक्रमण हुए जिनका सामना यहाँ के राजाओं ने किया। अतः विकट परिस्थितियों में संघर्ष की भावना बनाए रखने के लिए साहित्य में वीर नायकों का आदर्श प्रस्तुत किया गया। इस काल में जैन रचनाकारों की रचनाएं भी उल्लेखनीय रही है।

● श्रीधर व्यास की 'रणमल छन्द' इस काल की महत्त्वपूर्ण रचना है।

● रणमल ईडर का राठौड़ राजा था। इसने पाटन के जफर खान को हराया था।

2. **पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)**– 1450 ई. से 1650 ई. तक।

● राजस्थान के इतिहास में युद्धों ने धर्म व संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया, तथा साम्राज्यवादी शासकों द्वारा धर्म के प्रचार–प्रसार की प्रवृति दिखाई दी। ऐसे समय में विभिन्न संतों ने अपनी कलम के माध्यम से भेदभाव रहित सद्समाज की कल्पना को मूर्तरूप प्रदान किया। भक्तिकाल की रचनाओं में दादूपंथी, रामस्नेही, अलखिया, जसनाथी आदि निर्गुण सम्प्रदायों के साथ मीराबाई के पद, पृथ्वीराज राठौड़ की 'वेलि किसण रूकमणि री' माधोदास दधवाड़िया की 'रामरासों' ईसरदास की 'हरिरस' ओर 'देवियांण' सायांजी झूला की 'नागदमण' आदि सगुण रचनाएं है।

3. **उत्तर मध्य काल (शृंगार, रीति एवं नीति परक काल)–** 1650 ई. से 1850 ई. तक।

● अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण वातावरण में राजस्थान के शासकों ने साहित्यकारों को सरंक्षण प्रदान किया तथा इन साहित्यकारों ने साहित्य के विभिन्न आयामों का विकास किया।

● लोक में प्रचलित प्रेमाख्यानों को विभिन्न ग्रंथों के रूप में प्रस्तुत किया गया। काव्य शास्त्र से संबंधित रचनाओं में कवि मंछाराम ने 'रघुनाथ रूपक' प्रस्तुत किया तथा संबोधन परक नीति कारकों में 'राजिया रा सोरठा', 'चकरिया रा सोरठा', 'भेरिया रा सोरठा', 'मोतिया रा सोरठा' आदि रचनाएं प्रमुख है।

4. **आधुनिक काल (विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त)**– 1850 ई. से अब तक।

● 1857 ई. की क्रान्ति के बाद समाज में नई चेतना का संचार हुआ। जिसका प्रभाव साहित्य पर भी देखने को मिला।

● राजस्थानी साहित्य में चेतना का शंखनाद मारवाड़ के कवि राजा बांकिदास और बूँदी के सूर्यमल्ल मीसण ने किया।

➢ ''उद्योतन सूरि'' ने 8वीं शताब्दी में ''कुवलयमाला'' नामक पुस्तक लिखी इसमें 18 भाषाओं का वर्णन है। जिनमें मरू भाषा भी शामिल है।

➢ ''अबुल फजल'' ने अपनी पुस्तक ''आइन–ए–अकबरी'' में मारवाड़ी भाषा का उल्लेख किया है।

➢ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में (1912) राजस्थानी भाषा का वर्णन किया।

लेखक	साहित्यिक पुस्तकें
1. वज्रसेन सुरि	भरतेश्वर बाहुबली घोर (राजस्थानी की सबसे प्राचीन किताब)
2. शालिभद्र सूरि	भरतेश्वर बाहुबली रास (1184 ई.) (सन् बताने वाली सबसे प्राचीन राजस्थानी पुस्तक)
3. नयनचन्द्र सूरि ये ग्वालियर के तोमर राजा वीरम के दरबारी विद्वान थे।	हम्मीर महाकाव्य
4. सारंगधर	हम्मीर रासौ
5. जोधराज (नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबारी विद्वान थे)	हम्मीर रासौ (अहीरवाटी भाषा में लिखी गई हैं।)
6. गिरधर आसियाँ	सगत सिंघ रासौ (महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह का वर्णन है।)
7. दलपत विजय	खुमाण रासौ (बप्पा रावल से लेकर राज सिंह मेवाड़ तक का वर्णन है।)
8. दयाल	राणा रासौ (बप्पा रावल से लेकर जयसिंह मेवाड़ तक का वर्णन है।)
9. नल्ल सिंह	विजयपाल रासौ (बयाना के राजा विजयपाल का वर्णन है।)
10. डूंगरसिंह	शत्रुसाल रासौ (बूँदी के राजा शत्रुसाल का वर्णन)
11. दुरसा आढ़ा (अकबर के दरबार में थे) इन्होनें महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन के देशप्रेम की भावना का यशोगान किया है।	1. विरूद छहतरि 2. किरतार बावनी 3. राव सुरताण रा कवित्त 4. विरम देव सोलंकी रा दूहा

12. कवि कल्लोल	ढोला–मारू रा दूहा
13. कुशललाभ (जैसलमेर के राजा हरराज के दरबार में था)	1. ढोला–मारू री चौपाई 2. पिंगल शिरोमणि
14. केशवदास गाडण (गजसिंह का दरबारी विद्वान)	1. गजगुणरूपक 2. अमरसिंह जी रा दूहा 3. विवेक वार्ता (उपनिषदों पर टीका)
15. जगजीवन भट्ट	1. अजीतोदय (जोधपुर के राजा अजीतसिंह का वर्णन) 2. अभयोदय (जोधपुर के राजा अभयसिंह का वर्णन)
16. जग्गा खिड़िया	वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री (रतनसिंह राठौड़ रतलाम का राजा था। जो धरमत के युद्ध में दारा की तरफ से औरंगजेब के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।)
17. कृपाराम खिड़िया (सीकर के राजा लक्ष्मणसिंह के दरबारी)	राजिया रा दूहा
18. खेतसी सादूं	भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल अनुवाद)
19. मुरारिदास (जोधपुर राजा जसवन्तसिंह द्वितीय के दरबारी)	जसवन्त जसो भूषण (अलंकारो का अधिक प्रयोग)
20. जान कवि (न्यामत खाँ) (फतेहपुर के कायमखानी नवाब थे)	कायम रासौ
21. श्रीधर	रणमल छन्द (रणमल ईडर का राजा था। जिसने पाटन के सूबेदार जफर खाँ को हराया था।
22. जोगीदास	हरि पिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह का वर्णन)
23. जिनराज सूरी	शालिभद्र रास, गजसुकमाल रास, कवयन्ना रास
24. हरिनाभ	केसरी सिंह समर (केसरी सिंह खण्डेला का सामन्त था।)
25. बख्तावर जी (यह मेवाड़ महाराणा स्वरूप सिंह का दरबारी विद्वान था।)	केहर प्रकास
26. बादर ढाढी	वीरमायण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की

	जानकारी)
27. कवि नरोत्तम	मान चरित्र रासौ (आमेर के राजा मानसिंह की जानकारी)
28. आचार्य हरिभद्र सूरि	समराइच्छकहा (उज्जियिनी के राजा समरादित्य व अग्नि शर्मा की जानकारी)
29. आचार्य मेरूतुंग	प्रबन्ध चिन्तामणि (पृथ्वीराज चौहान की जानकारी)
30. जीवधर	अमरसार/अमररासौ (महाराणा प्रताप व अमरसिंह की जानकारी)
31. हेमचन्द्र	महावीर चरित (कुमारपाल चालुक्य की जानकारी)
32. द्वारिकादास भट्‌ट (सवाई प्रताप सिंह का दरबारी विद्वान)	रागचन्द्रिका
33. सदाशिव भट्‌ट	राजविनोद (बीकानेर के कल्याणमल की जानकारी)
34. छत्र कुवंरि (किशनगढ़ नरेश सांवतसिंह की पौत्री)	प्रेम विनोद।
35. मुंशी भूसावन लाल	अमीरनामा (टोंक के अमीर खाँ की जानकारी)
36. बख्तराम साह	बुद्धिविलास (जयपुर की स्थापना का वर्णन)
37. सुमतिगणि पल्हण	नेमिनाथ रास नेमिनाथ बारहमासा।
38. माणिक्य सुन्दर सूरि	पृथ्वीराज वाग विलास मलय सुन्दरी कथा
39. कुम्भकर्ण सांदू	रतन रासौ
40. करमसी साँखला	किसन जी री वेलि
41. शिवदास गाडण	अचलदास खींची री वचनिका
42.खुशाल चन्द्र	ढोला मारू री वात
43. मेरुतुंग	प्रबन्ध चिन्तामणी

आधुनिक राजस्थानी साहित्य

लेखक	साहित्यिक पुस्तकें
1. सूर्यमल्ल मीसण (बूंदी के राजा रामसिंह द्वितीय के दरबारी) इन्होनें राजस्थान में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार किया था।	वंश भास्कर, वीर सतसई, बलवन्त विलास, सती रासौ, छन्द मयूख, राम रंजाट
2. कन्हैयालाल सेठिया इनका जन्म 11 सितम्बर 1919 ई. को सुजानगढ़ (चुरू) में हुआ था।	पाथल और पीथल, धरती धौरा री, कूं कूं, मिंझर, निर्ग्रन्थ, मायड़ रो हैलो,
3. विजयदान देथा बिज्जी :– बिज्जी उपनाम से प्रसिद्ध देथा को 1974 ई. में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1992 ई. में भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार, 2002 ई. में बिहारी पुरस्कार, 2006 ई. में साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार, 2007 ई. में पद्मश्री एवं 2012 ई. में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया। उनकी एक लोककथा पर मणि कौल ने पहले दुविधा फिल्म बनाई, फिर इसी कथा पर अमोल पालेकर ने पहेली नामक फिल्म बनाई।	1. बातां री फुलवारी (14 भाग), दुविधा तीडो राव, मां रो बदलो, अलेखूं हिटलर, लजवन्ती, सपनप्रिया, अन्तराल, उलझन, बापू के तीन हत्यारे, चौधराईन की चतुराई, चरणदास चोर।
4. लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत	माँझल रात, कै रे चकवा बात, टाबरां री बातां, अमोलक बातां, गिर ऊँचा ऊँचा गढ़ा, गजबण
5. श्री लाल नथमल जोशी	एक बीदंणी दो बींद, परण्योड़ी कुंवारी धोरां रो धोरी (एल. पी. टैस्सीटोरी पर आधारित), आभै पटकी (विधवा विवाह की समस्या पर आधारित), सबड़का, मैंदी कनीर अर गुलाब
6. यादवेन्द्र शर्मा ''चन्द्र'' इन्होनें राजस्थान के सामन्ती अतीत का वर्णन किया है।	हूँ गोरी किण पीव री, खम्मा अन्नदाता जनानी ड्योढी, हजार घोड़ो का सवार, जमारो, ताश रो घर, मेहन्दी के फूल, चाँदा सेठाणी, समन्द अर थार, जोग संजोग, मिट्टी का कंलक।

7. नारायण सिंह भाटी	मीरा, दुर्गादास, परमवीर, ओल्यू, बरसां रा डिगोड़ा डूंगर लांघिया
8. रांघेय राघव	घरोन्दे, मुर्दो का टीला (मोहनजोदड़ो पर), कब तक पुकारू, आज की आवाज, काका
9. शिवचन्द्र भरतिया आधुनिक राजस्थानी भाषा का पहला साहित्यकार। इन्हें राजस्थानी साहित्य का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहा जाता है।	1. कनक सुन्दर (उपन्यास) 2. केसर विलास (नाटक) 3. विश्रान्त प्रवास (कहानी) 4. फाटका जंजाल 5. बुढापा की सगाई
10. चन्द्र सिंह बिरकाली	लू, बादली, साँझ–बालासाद, कह – मुकरणी
11. जहूर खाँ मेहर	राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, अर्जुन आळी आँख, धर मंजला धर कोसां।
12. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा। राजस्थान के इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 1863 ई. में रोहिड़ा (सिरोही) में हुआ था। प्राचीन लिपि का अच्छा ज्ञान होने के कारण इन्होने भारतीय प्राचीन लिपिमाला नामक ग्रन्थ की रचना की। अंग्रेजों ने इन्हें महामहोपाध्याय एवं रायबहादुर की उपाधि प्रदान की।	1. प्राचीन लिपिमाला 2. राजपूताने का इतिहास 3. जेम्स टॉड का जीवन चरित
13. चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी"	1. उसने कहा था
14 मणिमधुकर	पग फेरों, सफेद मेमने, सोजती गेट, आलीजा घरां आज्यो, पत्तों की बिरादरी।
15. रेवंतदान चारण (इन्होनें सामन्ती शोषण के खिलाफ लिखा था)	1. नेहरू ने ओलमो 2. बरखां बीनणी
16. सत्यप्रकाश जोशी	1. राधा – जहाँ आम राजस्थानी साहित्य में युद्धों का महिमा मण्डन किया गया है, वहीं 1960 ई. में रचित इस कविता में राधा भगवान कृष्ण को महाभारत का युद्ध रोकने की प्रार्थना करती है। इसलिए इसे युद्ध विरोधी कविता कहा जाता है।

	2. बोल भारमली (महिला शक्तिकरण)
17. उमरदान इन्होने पाखण्डी साधुओं की आलोचना की थी। छप्पनिया अकाल का वर्णन किया है।	1. अमल रा औगण 2. दारू रा दोस 3. भजन री महिमा 4 तंबाकू री ताड़ना
18. शंकर दान सामोर (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।)	अंग्रेजों री नीत, देस दर्पण, भागीरथी महिमा, सगती सुजस।
19. हिंगलाज दान कविया (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।)	आखेट अपजस, मेहाई महिमा, दुर्गा बहतरी
20. करणीदान बारहठ	आदमी रा सींग, मंत्रीजी री बेटी, बड़ी बहनजी।
21. मेघराज मुकुल	सैनाणी, चँवरी, कोडमदे, उमंग
22. रामनाथ कविया	द्रौपदी विनय
23. हमीदुल्ला खाँ	दरिन्दे, ख्याल भारमली
24. हरिराम मीणा	हाँ, चाँद मेरा है, धूणी तपे तीर
25. आईदान सिंह भाटी	आँख हिये रा हरियल सुपना, हँसतोड़े होठां रो साँच।
26. अन्नाराम सुदामा	महकती काया, मुलकती धरती
27. मन्नू भण्डारी	महाभोज, आपका बन्टी, खोटे सिक्के।
28. चन्द्रप्रकाश देवल	पागी, कावड़, मारग
29. गुलाबचन्द नागौरी	सगाई जंजाल, मारवाड़ी मौसर
30. मुरारिदान	वंश समुच्चय, डिंगल कोष
31. सीताराम लालस	राजस्थानी शब्द कोष
32. लता शर्मा	सही नाप के जूते।
33. हरिश भादाणी	बोलै सरणाटौ, बाथां में भूगोल
34. तेजसिंह जोधा	कठैइ कीं व्हेगौ है
35. पारस अरोडा	जुडाव
36. गोवर्धन सिंह शेखावत	गाँव
37. अर्जुनदेव चारण	रिन्दरोही
38. मालचन्द तिवाड़ी	कीं उतर्यों है आभौ।
39.सत्यनारायण जोशी	धान कथांवा

राजस्थानी साहित्य के प्रकार

1. ख्यात :– संस्कृत के ख्याति शब्द से बना है जिसका अर्थ ''प्रसिद्धि या लोकप्रियता'' होता है। देशी राज्यों के राजाओं ने अपने सम्मान, सफलताओं और विशेष कार्यों आदि के विवरण के रूप में अपना इतिहास लिखवा कर संचित किया है। यह इतिहास 'ख्यात' कहलाता है।

- अकबर ने अबुल फजल द्वारा रचित अकबरनामा के समय विभिन्न राजाओं को अपने रियासतों का इतिहास भेजने के लिए कहा अतः उस समय राजस्थान में ख्यात निर्माण प्रारम्भ हुआ।
- ख्यात दो प्रकार की होती है–

a. सलंग्न ख्यात – इसमें राजाओं का क्रमानुसार वर्णन होता है। जैसे – दयालदास द्वारा रचित बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात।

b. बात संग्रह – इसमें इतिहास की छोटी–बड़ी अलग अलग घटनाओं का संग्रह होता है। जैसे– नैणसी री ख्यात व बांकीदास री ख्यात।

- ''मुंडियार री ख्यात'' नागौर के मुंडियार गाँव के चारण लेखकों द्वारा लिखी गई थी, तथा इसमें मारवाड़ के राठौड़ राजाओं का वर्णन है।

2. वात :– वात का अर्थ ''कहानी'' होता है। किसी ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्र की कहानियों को वात कहा जाता है जिसमें उस पात्र की उपलब्धियों का वर्णन होता है। कहानी की तरह वात कहने और सुनने की विशेष विधा है। कथा कहने वाला कहता चलता है और सुनने वाला 'हुँकार' (बीच–बीच में हाँ जैसे शब्दों का प्रयोग, जिससे कथाकार को लगे कि श्रोता रूचि ले रहा है) देता रहता है। इन वातों में जीवन के हर पक्ष, युद्ध, दर्शन, मनोरंजन पर प्रकाश डाला गया है। गद्यमय, पद्यमय, तथ गद्य पद्यमय तीनों रूपों में वातें मिलती है। 'राव अमरसिंहजी री वात', 'खीचियां री वात', 'पाबूजी री वात', 'कान्हड़दे री वात', 'अचलदास खींची री वात' वीरम देव सोनगरा री वात (पद्मनाभ), ढोलामारू री वात (कुशालचन्द) आदि प्रमुख वातें है।

3. वचनिका :– इन ग्रन्थों में किसी महापुरूष या किसी राजवंश की उपलब्धियों का वर्णन होता है। इन ग्रन्थों में अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी लिखी जाती है। संस्कृत के 'वचन' शब्द से बना 'वचनिका' शब्द का एक काव्य विधा के रूप में साहित्य में प्रचलित हुआ। 'वचनिका' एक ऐसी तुकान्त गद्य–पद्य रचना है जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है, यद्यपि इसके अपवाद भी मिलते है।

उदाहरण :– अचलदास खींची री वचनिका, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री।

4. दवावैत :– राजस्थानी के वे ग्रन्थ जिनमें उर्दू एवं फारसी शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, दवावैत कहलाते है। इसमें किसी महापुरूष की दोहों के रूप में प्रशंसा की जाती

है। दवावैत कलात्मक गद्य का एक अन्य रूप है, जो वचनिका काव्य रूप की तरह ही है। वचनिका राजस्थानी में लिखी होती, किन्तु दवावैत उर्दू और फारसी के शब्दों से युक्त होती है। इनमें कथा के नायक का गुणगान, राज्य – वैभव, युद्ध, आखेट, नखशिख आदि का वर्णन तुकान्त और प्रवाहयुक्त होता है। 'अखमाल देवड़ा री दवावैत', 'राजा जयसिंह री दवावैत' आदि प्रमुख दवावैत ग्रन्थ है।

5. **विगत** :– राजस्थानी भाषा में लिखे गये इतिहास के ग्रन्थ जिनमें आर्थिक, सामाजिक स्थिति का भी वर्णन होता है, विगत कहलाते है। विगत से किसी विषय का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इसमें इतिहास की दृष्टि से शासक, उसके परिवार, राज्य के क्षेत्र प्रमुख व्यक्ति अथवा उनके राजनीतिक, सामाजिक व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है। विगत में उपलब्ध आँकड़े आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी रहे है। मुहणोत नैणसी की 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' में प्रत्येक परगने की आबादी, रेख, भूमि किस्म, फसलो का हाल, सिंचाई के साधन आदि की जानकारियाँ प्राप्त होती है।

6. **परची** :– संत महात्माओं का जीवन परिचय राजस्थानी भाषा में जिस पद्यबद्ध में मिलता है उसे परची कहा गया है। संत नामदेव री परची, 'कबीर री परची', 'संत रैदास री परची', 'संत पीपा री परची', 'संत दादू री परची', 'मीराबाई री परची' आदि प्रमुख परची रचनायें है।

7. **प्रकास** :– किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियों को प्रकास कहा गया है। किशोरदास का 'राजप्रकास', 'आशिया मानसिंह का' 'महायश प्रकास', कविया करणीदान का 'सूरज प्रकास' आदि प्रमुख ग्रन्थ है।

8. **मरस्या** :– राजा या किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद शोक व्यक्ति करने के लिए 'मरस्या' काव्यों की रचना की गई। इसमें उस व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अतिरिक्त अन्य महान कार्यो का वर्णन भी किया जाता था। 'राणे जगपत रा मरस्या' मेवाड़ महाराणा जगतसिंह की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए लिखा गया था।

9. **रासौ** :– मोतीलाल मेनरिया के अनुसार ''जिस काव्य ग्रन्थ में किसी राजा की कीर्ति', विजय, युद्ध, वीरता आदि का विस्तृत वर्णन हो, उसे रासों कहते है।'' रासो ग्रन्थों में चन्दबरदाई का 'पृथ्वीराज रासौ', नरपति नाल्ह का 'बीसलदेव रासौ', कुम्भकर्ण का रतन रासों, काशी छंगाणी का छत्रपति रासौ (मतीरे री राड़ युद्ध का वर्णन), सीताराम रतनू का जवान रासौ प्रमुख है।

10. **रूपक** :– किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों के स्वरूप को दर्शाने वाली काव्य कृति रूपक कहलाती हैं 'गजगुणरूपक', 'रूपक गोगादेजी रो', 'राजरूपक' आदि प्रमुख रूपक काव्य है।

11. **साखी** :– साखी साक्षी शब्द से बना है। साखी परक रचनाओं में संत कवियों ने अपने द्वारा अनुभव किये गये ज्ञान का वर्णन किया है। साखियों में सोरठा छन्द का प्रयोग हुआ है। कबीर की साखियां प्रसिद्ध है।

12. सिलोका :– सिलोका साधारण पढ़े–लिखे लोगों द्वारा लिखे गये हैं, इसलिए ये जनसाधारण की भावनाओं को आमजन तक पहुँचते है। 'राव अमरसिंह रा सिलोका', 'अजमालजी रो सिलोको', 'राठौड़ कुसलसिंह रो सिलोको', आदि प्रमुख सिलोके है।

राजस्थान की बोलियाँ

- 1912 ई. में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'लिंग्वेस्टिंग सर्वे ऑफ इण्डिया' नामक पुस्तक लिखी जिसमें राजस्थानी भाषा का वर्णन मिलता है। ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को पाँच भागों में बांटा था।

I. पश्चिमी राजस्थानी, मारवाड़ी व उसकी उपबोलियाँ

II. दक्षिणी राजस्थानी, निमाड़ी व बागड़ी (भीली)

III. उत्तरी–पूर्वी राजस्थानी, अहीरवाटी तथा मेवाती

IV. महल पूर्वी राजस्थानी,ढूंढाड़ी तथा उसकी उपबोलियाँ

V. दक्षिण–पूर्वी राजस्थानी, मालवी, रांगड़ी, सोंधवाड़ी उपबोलियाँ

सामान्य वर्गीकरण

मारवाडी
- मेवाड़ी
- खैराड़ी
- गौड़वाडी
- बागड़ी
- देवड़ावाटी
- शेखावाटी
- धाटी/धाटकी
- थली

ढूंढाड़ी
- हाड़ौती
- चौरासी
- नागरचोल
- काठेड़ी
- राजावाटी
- तोरावाटी

मालवी
- नीमाड़ी
- रांगड़ी

वागड़ी

मेवाती

अहीरवाटी

जगरौती

धावड़ी

सोंधवाड़ी

1. **मारवाड़ी–** मारवाड़ क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान विशेषकृत–जोधपुर, नागौर, पाली, बीकानेर, बाड़मेर–जालौर।

उदाहरण– मीरां बाई की पुस्तकें
ढोला मारू रा दूहा
राजिया रा दूहा
वेलि किसण रूक्मणि री।
जैन साहित्य–मरूभाषा
चारण साहित्य

प्रमुख उपबोलियाँ–

(i) **मेवाड़ी :–**

- मारवाड़ी की उपबोली।
- मेवाड़ क्षेत्र में (उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, व भीलवाड़ा क्षेत्र) बोली जाती है।

- साहित्य – कुंभा के नाटक।
  - कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति
  - लक्ष्मी कुमारी चुंडावत की पुस्तकें
  - चतुरसिंह की पुस्तकें

(ii) **शेखावाटी**–

- राव शेखा के क्षेत्र में बोली जाने वाली।
- मारवाड़ी की उपबोली।
- क्षेत्र–चुरू, सीकर, झुंझुनूं, नीम का थाना।
- ढूंढाड़ी का प्रभाव।

(iii) **बागड़ी –** क्षेत्र –बागड़ प्रदेश (हनुमानगढ़, अनूपगढ़ श्रीगंगानगर, चुरू क्षेत्र)
यह भी मारवाड़ी की उपबोली है।

(iv) **थली** :– क्षेत्र– जैसलमेर, बीकानेर, चुरू

(v) **गोड़वाड़ी** :– क्षेत्र– बाली (पाली)– आहोर (जालौर)
साहित्य – बीसलदेव रासौ (नरपति नाल्ह रचित)

(vi) **खैराड़ी** – क्षेत्र– शाहपुरा, भीलवाड़ा, बूँदी के कुछ भाग
(मेवाड़ी+हाड़ौती+ढूंढाड़ी का मिश्रण)

(vii) **देवड़ावाटी**–सिरोही

(viii) **धाटी/धाटकी–**मारवाड़ी की उपबोली
क्षेत्र–बाड़मेर (पाकिस्तान के सीमा वाला क्षेत्र)

2. ढूंढाड़ी :–

- क्षेत्र – जयपुर, दुदू ,टोंक,केकड़ी दौसा, किशनगढ़ व लावा ठिकाना में।
- साहित्य–दादू सम्प्रदाय की पुस्तकें ।
- गुमानीराम कायस्थ ने आइन–ए–अकबरी का ढूंढाड़ी में अनुवाद किया।
- ईसाई मिशनरियों ने बाइबिल का ढूंढाडी में अनुवाद किया।

- **प्रमुख उपबोलियाँ**– तोरावाटी, राजावाटी, नागरचोल

(i) **हाड़ौती** –ढूंढाड़ी की उपबोली।
क्षेत्र–कोटा, बूँदी झालावाड़, बाराँ।
साहित्य – सूर्यमल मीसण (बूँदी) की रचनाएँ।

(ii) **तोरावाटी** – क्षेत्र –झुंझुनूं, नीम का थाना, सीकर, उत्तरी जयपुर क्षेत्रों में।

(iii) **नागरचोल**– क्षेत्र– सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी तथा टोंक क्षेत्र में।

(iv) **काठेड़ी**– ढूंढाड़ी की उपबोली।
जयपुर के दक्षिणी क्षेत्र में बोली जाती है।

(v) **चौरासी**– शाहपुरा (जयपुर) एवं टोंक।

(vi) **राजावाटी**– पूर्वी जयपुर के कुछ क्षेत्रों में बोली जाने वाली।

3. **मालवी –** क्षेत्र– प्रतापगढ़, कोटा, झालावाड़ व मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र।

- मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की भाषा जो मूल रूप से मारवाड़ी व मेवाड़ी का मिश्रण है।
- **उपबोलियाँ –**

(i) **नीमाड़ी** – इसे मालवी की उपबोली भी कहा जाता है।

- मध्यप्रदेश का निमाड़ क्षेत्र जैसे–धार, बुरहानपुर व खरगौन में बोली जाती है।
- दक्षिणी राजस्थानी भी कहा जाता है।

(ii) **रांगड़ी** – मालवा क्षेत्र के राजपूतों द्वारा बोली जाती है।

4. **वागड़ी –** डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा क्षेत्र में।

- गुजराती प्रभाव दिखाई देता है।
- जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे भीली कहा था।
- साहित्य – संत मावजी की रचनाएँ।

5. **मेवाती –** क्षेत्र– अलवर, भरतपुर, डीग।
   ब्रजभाषा का प्रभाव।
   साहित्य – चरणदासी व लालदासी सम्प्रदाय की रचनाएँ।

6. **अहीरवाटी**

- **क्षेत्र–** कोटपुतली–बहरोड़
- इस इलाके को राठ भी कहते हैं। इसलिए भाषा को अहीरवाटी कहा जाता है।
- अलीबख्शी ख्याल इसी भाषा में किया जाता है।
- साहित्य– जोधराज की हम्मीर रासो,
  शंकर राव की भीम विलास

7. **जगरौती**– क्षेत्र – करौली

8. **धावड़ी**– क्षेत्र– उदयपुर

9. **सोंधवाड़ी**– क्षेत्र–झालावाड़

राजस्थान के लोक वाद्य यंत्र

- लोक वाद्य यंत्र लोकसंगीत के महत्वपूर्ण अंग होते है एवं बिना वाद्य यंत्र के संगीत सूना है।
- इनके प्रयोग से गीतों व नृत्यों की माधुर्य वृद्धि के साथ ही वातावरण निर्माण एवं किसी कलाकार की भावाभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने का कार्य होता है।
- अतः राजस्थान के लोकसंगीत में यहाँ के परिवेश, स्थिति व भावों के अनुरूप लोक वाद्य यंत्रों का प्रचुर विकास हुआ है, जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से हैं–
    - ✓ **तत्**
    - ✓ **अवनद्ध**
    - ✓ **घन**
    - ✓ **सुषिर**

1.तत् वाद्य यंत्र– जिन वाद्य यंत्रों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति होती है वे तत् वाद्य यंत्र कहलाते है। राजस्थान के लोकसंगीत में प्रयोग लिए जाने वाले तत् वाद्य यंत्रों की सूची इस प्रकार है

❖ **सारंगी**– सर्वश्रेष्ठ तत् वाद्य यंत्र

- यह वाद्य यंत्र तून, सागवान, कैर या रोहिड़े की लकड़ी से बनाया जाता है। इसमें कुल 27 तार होते है एवं ऊपर की तारें बकरे की आंतों से बनी होती है।
- इसका वादन गज से किया जाता है जो घोड़े की पूंछ के बालों से निर्मित होता है। गज को बिरोजा पर घिसकर बजाने पर तारों से ध्वनि उत्पन्न होती है।
- राजस्थान में दो तरह की सारंगियाँ प्रचलित है– सिन्धी सारंगी व गुजरातण सारंगी । गुजरातण सारंगी की तुलना में सिन्धी सारंगी आकार में बड़ी एवं उन्नत व विकसित होती है। गुजरातण सारंगी में तारों की संख्या केवल 7 होती है।
- मारवाड़ के जोगियों द्वारा गोपीचन्द, भृर्तहरि, निहालदे आदि के ख्याल गाते समय एवं बाड़मेर व जैसलमेर क्षेत्र की लंगा जाति द्वारा सारंगी का प्रयोग किया जाता है।
- जड़ी सारंगी – मांगणियार
- मुख्य कलाकार– रामनारायण, सुल्तान खां, यासीन खां।

❖ **जन्तर**–

- यह वीणा के सादृश्य होता है। इसे वीणा का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है क्योंकि वीणा के समान इसमें भी दोनों ओर दो तुम्बे होते है जो कि गूँज के साथ ध्वनि उत्पन्न करते है।
- यह वाद्य यंत्र अंदर से खोखला होता है। इस यंत्र की खोखली संरचना, जिसे डाँड कहा जाता है, बाँस की बनी होता है। जन्तर वाद्य यंत्र पर मगर की खाल के 22 पर्दे

मोम से चिपकाये जाते है एवं इन पर्दों के ऊपर पाँच या छः तार लगे होते है, जिन्हें हाथ की अँगुली या अँगूठे से बजाया जाता है।

- इस वाद्य यंत्र का वादन खड़े होकर गले में लटकाकर किया जाता है।
- इसका प्रयोग मुख्यतः भोपों द्वारा देवनारायण जी की फड़ व भजन गाते समय किया जाता है। जन्तर वाद्य यंत्र के वादन बगैर इस फड़ का बाँचना अधूरा माना जाता है।

❖ **रावणहत्था**

- यह राजस्थान का बहुत प्राचीन व बहुप्रचलित लोक वाद्य यंत्र है एवं इसे वायलिन का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है।
- इसे बनाने के लिए बड़े नरियल की अर्द्ध कटोरी पर बकरी की खाल मढ़ी जाती है जो 80–90 से.मी. लंबे बाँस के साथ लगी होती है।
- बाँस में जगह–जगह छिद्र कर खूंटियाँ लगा दी जाती है, जिनमें 9 तार बंधे होते है।
- इस वाद्य यंत्र का गज घोड़े के पूँछ के बालों से निर्मित होता है एवं गज के अंतिम छोर पर घुंघुरू बंधे होते है जो उसके संचालन के साथ ध्वनि उत्पन्न कर ताल कार्य ही करते है।
- इस वाद्य यंत्र का प्रयोग मुख्यतः भोपों व भीलों द्वारा पाबूजी की फड़ व अन्य देवी–देवताओं के भजन व गीत गाते समय किया जाता है।
- डूंगजी व जवाहरजी के भोपे भी रावणहत्था का प्रयोग करते है।

❖ **रवाज**

- यह सारंगी की तरह का वाद्य यंत्र है, जिसे गज के स्थान पर नखे (नाखून) से आघात करके बजाया जाता है। इसमें तारों की संख्या 12 होती है।
- इस वाद्य यंत्र को ढफ भी कहा जाता है एवं यह वाद्य यंत्र मेवाड़ के राव व भाट जाति के लोग अधिक बजाते है।

❖ **तंदुरा/चौतारा/निशान/तम्बूरा/वेणों–**

- इन चारों नामों से एक ही प्रकार का वाद्य यंत्र राजस्थान में प्रचलित है, इस वाद्य यंत्र की आकृति तानपूरे से मिलती है।
- यह चार तारों वाला वाद्य यंत्र है जिसका निर्माण लकड़ी से होता है।
- वादक इसे बायें हाथ में पकड़कर दाहिने हाथ की पहली उंगली में मिजराब पहनकर बजाता है।
- इसे मुख्यतः रामदेवजी के भजन गाते समय कामड़ जाति के लोग व निर्गुण भजन करने वाले नाथपंथी बजाते है।

❖ **रवाब** – भाट्टों द्वारा प्रयोग।

❖ **एकतारा**–आदि वाद्य यंत्र (नारद जी)

- एकतारा का अर्थ है एक तार। यह वाद्य यंत्र गोल तुम्बे में बाँस की डंडी फँसाकर बनाया जाता है। तुम्बे का एक हिस्सा काटकर इसे बकरे के चमड़े से मढ़ दिया जाता है। बाँस पर दो खूँटियाँ लगी होती है जिन पर ऊपर–नीचे दो तार बंधे होते है।
- यह एक ही हाथ में पकड़कर बजाया जाता है और दूसरे हाथ में करताल बजायी जाती है।
- इसको मुख्यतः कालबेलिया एवं नाथ–संप्रदाय के साधु–सन्न्यासी बजाते है।

❖ **भपंग**

- इसका आकार डमरूनुमा होता है। यह खोखले तम्बू के गोले से बना दो मुंहा वाद्य यंत्र है जिसको एक ओर से बकरे के चमड़े से मढ़ते है तथा दूसरी ओर से खुला छोड़ दिया जाता है।
- चमड़े के बीच में से छेद कर एक तार निकाला जाता है जिसे एक खूँटी से बाँध दिया जाता है। खूँटी को तानते व ढीला करते हुए विभिन्न ध्वनियाँ निकली जाती है। इस यंत्र को काँख में दबाकर बजाते है।
- वर्तमान में इसे प्लास्टिक के तन्तु से बनाते है। इस वाद्य यंत्र का प्रयोग आमतौर पर मेवात के जोगी समुदाय द्वारा प्रधानता से किया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त **जहुर खाँ (भपंग के जादूगर)** उमर फारूख मेवाती इस वाद्य यंत्र के प्रसिद्ध कलाकार है।

❖ **कमायचा**

- यह वाद्य यंत्र ईरान से भारत में आया।
- यह सारंगी के समान होता है किन्तु इसकी तबली सारंगी की तबली की अपेक्षा चौड़ी व गोल तथा चमड़े से मढ़ी हुई होती है।
- कमायचा की चमड़े से मढ़ी हुई तबली पर खूँटी प्रणाली एवं घुड़च उपस्थित रहते है।
- कमायचा की तबली के चौड़ी एवं गोलाकार होने के कारण इसकी ध्वनि में भारीपन व गूँज होती है।
- इसे बनाने का गज भी सारंगी की गज से लगभग टेढ़ा होता है एवं घोड़े की पूंछ के बालों से बना होता है।
- इसमें 17 तार होते है जिसमें से 3 तार घुड़च के ठीक ऊपर से निकलते है।
- इसका सर्वाधिक प्रयोग मुस्लिम शेख, जिन्हें मांगणियार भी कहते है, लोकगीत व मांड गायन के दौरान करते है।
- साकर खाँ इस वाद्य यंत्र के प्रसिद्ध कलाकार है जिन्हें अपनी इस अनूठी कला के लिए पद्मश्री मिल चुका है।

❖ **गुजरी**

- यह रावणहत्था से थोड़ा छोटा उसी प्रकार का वाद्य यंत्र है एवं इसमें 5 तार होते है। इसका गज अर्द्धचंद्राकार होता है।

- **सुरिंदा(लोकधुन)**
- रोहिड़े की लकड़ी से बने इस वाद्य यंत्र के गज पर घुंघुरू बंधे होते है एवं इसे गायन के साथ नहीं बजाया जाता है।

❖ चिकारा

- कैर की लकड़ी का बना इस वाद्य यंत्र का एक सिरा प्याले के आकार का होता है जिसमें 3 तार बंधे होते है। इसे छोटी गज की सहायता से बजाया आता है।

❖ दुकाको

- इसे घुटनों के बीच रखकर बजाया जाता है। आमतौर पर भील जाति के लोगों द्वारा दीपावली के अवसर पर इस वाद्य यंत्र को बजाया जाता है।

2.सुषिर वाद्य यंत्र – वे वाद्य यंत्र जिन्हें फूँक कर बजाया जाता है। जैसे–

❖ बाँसुरी

- यह एक अति प्राचीन लोक वाद्य यंत्र है जो समय के साथ परिष्कृत होकर विभिन्न संगीत कलाओं का अभिन्न अंग बन चुका है।
- इसे पारंपरिक रूप से बाँस की पोली नली से बनाया जाता है। पोली नली में स्वरों के लिए छः या सात छेद बनाया जाते है जिनकी दूरियाँ स्वरों की शुद्धता के लिए निश्चित रखी जाती है।
- बांसुरी के एक छोर पर एक छेद होता है जो वादक द्वारा फूँक देकर संगीत उत्पन्न करने हेतु होता है। आमतौर पर बांसुरी का यह छोर क्षैतिज रूप से नीचे की ओर तिरछा होता है।

❖ अलगोजा

- अलगोजा राजस्थान का राज्य वाद्य यंत्र है। यह बांसुरी की तरह का होता है। इसमें दो बांसुरियों का जोड़ा होता है जो एक साथ बजाया जाता है।
- इसमें समान्यतः एक बांसुरी का आकार दूसरी से बड़ा होता है एवं इन बांसुरियों में कुछ में 3 तथा कुछ में 5 छेद होते है जो स्वरों की शुद्धता के लिए निश्चित दूरी पर होते है।
- वादक दो अलगोजे मुँह में रखकर एक साथ बजाता है जिसमें एक अलगोजे पर 'सा' ध्वनि बजती रहती है तथा दूसरे पर भिन्न–भिन्न स्वर निकाले जाते है। वादक बिना रुके तेजी से इसमें फूँकता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है एवं दोनों तरफ अपनी अंगुलियों का प्रयोग कर स्वरों में भिन्नता लाता है।
- यह वाद्य यंत्र जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, एवं टोंक आदि क्षेत्रों में मुख्य रूप से बजाया जाता है।
- अलगोजा को वीर तेजाजी की जीवन गाथा, डिग्गीपुरी का राजा, ढोला–मारू नृत्य और चक्का भवाई नृत्य में भी बजाया जाता है।

- इसका प्रयोग भील व कालबेलिया जनजातियाँ प्रधानता से करती है एवं जयपुर के पदमपुरा गाँव के प्रसिद्ध कलाकार रामनाथ चौधरी नाक से अलगोजा बजाते है।

❖ पुंगी

- इस वाद्य यंत्र में सर्प को मोहित करने की अद्भुत क्षमता होती है इसलिए मुख्यतः सपेरों द्वारा प्रयोग में लिया जाता है।
- यह वाद्य यंत्र घीया तुम्बे का बना होता है जिसका ऊपरी हिस्सा लंबा एवं नीचे का हिस्सा गोल होता है। गोल हिस्से में दो छिद्रित नालियाँ लगाई जाती है जिसमें हवा फूँकने पर एक नली में से "सा" स्वर बजता रहता है जबकि दूसरी नली से भिन्न–भिन्न स्वर उत्पन्न किए जाते है।
- यह कालबेलियों व आदिवासियों का प्रसिद्ध वाद्य यंत्र है।

❖ मुरला/मुरली

- यह पुंगी का परिष्कृत रूप है। इसे नलीदार तुम्बे के नीचे चौड़े भाग में दो बाँस की नालियाँ फँसाकर बनाया जाता है एवं इन नालियों से ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

❖ शंख

- समुद्र से प्राप्त इस वाद्य यंत्र का प्रयोग देवी–देवताओं की आराधना के दौरान मंदिरों में किया जाता है। इसका प्रयोग युद्ध के प्रारम्भ के पूर्व भी किया जाता है।

❖ शहनाई (सुंदरी)

- यह सुषिर वाद्य यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ व सुरीला वाद्य यंत्र है। इसकी ध्वनि शुभ मानी जाती है अतः प्राचीन राजा–महाराजाओं के यहाँ ये सदैव बजती थी एवं विवाह उत्सवों में मुख्यतः इसे बजाया जाता है।
- इसे शीशम, सागवान या टाली लकड़ी से बनाया जाता है। इसका आकार चिलम के समान होता है। इसमें आठ छेद होते है एवं इसका पत्ता ताड़ के पत्ते का बना होता है। सामन्यतः इसे नगाड़े की संगत में बजाया जाता है।
- मेवाड़ की माँगीबाई इस वाद्य यंत्र की प्रसिद्ध लोकप्रिय कलाकार है।
- प्रमुख कलाकार – उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ।

❖ सतारा

- यह अलगोजा, बांसुरी व शहनाई का समन्वित वाद्य यंत्र है।
- अलगोजे की भाँति इसमें दो लम्बी बांसुरियाँ होती है जिनमें से एक आधार सात छेद स्वर देती है तथा दूसरी बांसुरी के चार छेदों को बजाकर भिन्न–भिन्न स्वर उत्पन्न किए जाते है।
- इस वाद्य यंत्र की बड़ी विशेषता यह है कि किसी भी इच्छित छेद को बंद करके आवश्यकतानुसार सप्तक में परिवर्तित किया जा सकता है। इस सुविधा ने इस वाद्य यंत्र को अत्यंत उन्नत बना दिया है।

- इस वाद्य यंत्र को मुख्यत जैसलमेर व बाड़मेर की जन–जातियों द्वारा प्रयोग में लिया जाता है।
- अन्य जातियाँ – गड़रियां, मेघवाल, मुस्लिम।

❖ **मोरचंग (यहूदियो)**

- इसे ज्यूज हार्प भी कहा जाता है।
- लंगा गायको द्वारा इस वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है।
- यह लोहे का बना छोटा सा वाद्य यंत्र है, जिसे ओठों के बीच रखकर बजाया जाता है।
- इसमें एक धातु के बने गोलाकार हैंडिल से दो छोटी व लंबी धातु की छड़े निकली होती है। इन दो छड़ों के बीच में लोहे की एक पतली लंबी रीड रहती है जिसके मुँह पर थोड़ा सा घुमाव दे दिया जाता है।
- इस वाद्य यंत्र को ओठों से दबाने के बाद श्वास–प्रश्वास से रीड में कंपन्न होता है और इस तरंगित रीड के मुड़े हुए हिस्से पर अँगुली से आघात करके स्वर व लयपूर्ण ध्वनि निकाली जाती है।

❖ **बाँकिया**

- यह पीतल से निर्मित बिगुल की आकृति समान वाद्य यंत्र है जिसके एक ओर के छोटे मुँह में फूँक मारकर बजाया जाता है।
- यह सरगड़ों का खानदानी वाद्य यंत्र है जिसे ढ़ोल व थाली की संगत में बजाया जाता है।

❖ **सिंघी – जोगी जाति द्वारा।**

❖ **तारपी– कथौड़ी जनजाति द्वारा।**

❖ **मशक–**

- मशक को बकरी के चमड़े की सिलाई कर बनाया जाता है। इसमें एक ओर से मुँह से हवा भरी जाती है एवं दूसरी ओर लगी हुई नली के छेदों से स्वर निकाले जाते है।
- इसकी ध्वनि पूँगी की तरह है एवं इसका प्रयोग भेंरूजी के भोपें अधिक करते है।

❖ **भूंगल**

- यह मेवाड़ की भवाई जाति का प्रमुख वाद्य यंत्र है जो गाँव में खेल शुरू होने से पहले जनता को एकत्रित करने के लिए बजाया जाता है।
- पीतल की लंबी नली से बना यह वाद्य यंत्र बिगुल की भाँति युद्ध शुरू करने के पूर्व भी बजाया जाता है।

❖ **नागफणी**

- यह वाद्य यंत्र पीतल की सर्पाकार नली का होता है जिसके पिछले हिस्से में एक छेद होता है।

❖ **करणा**

- यह पीतल का 7–8 फीट लंबा नोकदार वाद्य यंत्र है । इस वाद्य यंत्र के सकड़े मुँह पर एक छेद होता है जिसमें सुरनाई जैसी नली लगी होती है।

❖ **तुरही**

- यह पीतल की दो मुँहा नली से बना वाद्य यंत्र है जिसकी आकृति नोकदार होती है। इसका एक मुँह छोटा एवं दूसरा मुँह चौड़ा होता है।

❖ **सुरनाई**

- इसकी आकृति शहनाई से मिलती है एवं इसके मुँह पर खजूर, ताड़ व कगौर के वृक्ष का सरकण्डा लगा होता है। इस वाद्य यंत्र को गीला करके बजाया जाता है।
- ढोली, लंगा, मांगणियार, ढाढ़ी जाति के लोगो द्वारा इसे विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है।
- अन्य सुषिर वाद्य यंत्र – सींगी, टोटो, बरगू, हरनाई, नड़ आदि।

❖ **नड़– करणा भील इसका प्रसिद्ध कलाकार है।**

3.अवनद्ध वाद्य यंत्र– इस श्रेणी में चमड़े से मढ़े वे वाद्य यंत्र आते है जिनके चमड़े वाले भाग पर आघात कर ताल उत्पन्न की जाती है।

❖ **मृदंग**

- ताल वाद्य यंत्रों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वाद्य यंत्र है। इसे बीजा, सुपारी, वट आदि वृक्षों की लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है। इस का एक मुँह सकड़ा एवं दूसरा मुँह चौड़ा होता है, दोनों मुँहों को बकरे की खाल से मढ़ा जाता है।
- दोनों मुँहों पर मढ़ी हुई बकरे की खाल को, मृदंग के परिधि पर चमड़े की बनी रस्सियों से परस्पर जोड़ा जाता है।
- धार्मिक उत्सवों पर इसका प्रयोग किया जाता है एवं राजस्थान में रावल (मांदल) और राविया जाति के लोग नृत्य के साथ भी इसका प्रयोग करते है।

❖ **पखावज**

- दो मुँहा खोखली लकड़ी के दोनों छोरों पर चमड़े को मढ़ कर इस वाद्य यंत्र को बनाया जाता है एवं इस वाद्य यंत्र की आकृति प्राचीन मृदंग की आकृति के समान होती है।
- पखवाज के प्रसिद्ध वादक पण्डित पुरषोत्तम दास को अपनी अनूठी कलाकारी के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

❖ **ढोलक**

- यह नीमच तथा अलीगढ़ की प्रसिद्ध है।
- यह लकड़ी को खोखला करके बनाया गया वाद्य यंत्र है जिसके दोनों छोर लगभग समान व्यास के होते है।
- इसका मध्य भाग कुछ चौड़ा होता है एवं इस पर लगी रस्सियाँ, जो दोनों छोरों को जोड़ने का कार्य करती है, पर कड़ियाँ लगी रहती है।

- राजस्थान में नगारची, सांसी, कंजर, ढाढ़ी, मीरासी, कव्वाल, भवाई व विभिन्न संप्रदायों के साधु–संत आदि इसे बजाते है। भवाई नृत्य के दौरान प्रयोग ली जाने वाली ढोलक आकार में सबसे बड़ी होती है।

❖ **ढोल**

- यह एक दो मुँहे बैरल की आकृति का होता है इसे विभिन्न संगीत कलाओं में सहायक वाद्य यंत्र के रूप में बजाया जाता है।
- यह वाद्य यंत्र पहले लकड़ी का बनाया जाता था, किन्तु अकबर के समय से लोहे का बनने लगा। इस लोहे के खोल को दोनों ओर से चमड़े से मढ़ा जाता है।
- इसे एक मांगलिक वाद्य यंत्र माना जाता है एवं राजस्थान में इसे बजाने के 12 प्रकार है जैसे– गैर का ढोल, नाच का ढोल, आरती का ढोल आदि।
- लोक नृत्यों में भी इसका प्रचुर प्रचलन है जैसे– जालौर का ढोल नृत्य, भीलों का गैर नृत्य एवं शेखवाटी का कच्छी घोड़ी नृत्य में इत्यादि।
- इसे हाथों एवं डंडों दोनों से बजाया जाता है एवं राजस्थान में ढोली, सरगड़े, भील, भांभी आदि इसे कुशलता से बजाते है।

❖ **नगाड़ा**

- यह वाद्य यंत्र युगल रूप में होता है जिसमें से एक को नर नगाड़ा व दूसरे को मादा नगाड़ा कहा जाता है।
- यह सुपारी की आकृति जैसा होता है जिसका व्यास 1–2 फीट तक होता है। इस वाद्य यंत्र को भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है।
- ढोल, राणा, मीरासी जातियों के लोग इसे लोकनृत्यों में प्रधानता से बजाते है। लोकनृत्यों में नगाड़े के साथ शहनाई की संगत की जाती है।

❖ **नौबत**

- यह मंदिरों में प्रयुक्त होने वाला ताल वाद्य यंत्र है एवं इसे बबूल या शीशम के डंकों का आघात करके बजाया जाता है।

❖ **मादल**

- प्राचीन लोक वाद्य यंत्र , मादल की आकृति मृदंग के समान होती है एवं यह मिट्टी से बना होता है।
- मादल के दोनों मुँह, जिसमें एक मुँह छोटा व दूसरा बड़ा होता है, को हिरण या बकरे की खाल से मढ़ा जाता है।
- भील लोक गवरी नृत्य के साथ तथा शादियों में व ग्राम्य देवी–देवालयों में इसे बजाते है एवं इसे साथ थाली वाद्य यंत्र भी बजाया जाता है।

❖ **चंग**

- यह राजस्थान का लोकप्रिय वाद्य यंत्र है जिसे होली के अवसर पर मुख्यतः शेखवाटी क्षेत्र में बजाया जाता है।

- यह लकड़ी के गोल घेरे के रूप में होता है जिसे एक ओर से बकरे या भेड़ की खाल से मढ़ा जाता है तथा दूसरी ओर को खुला छोड़ दिया जाता है।
- इसे बायें हाथ की हथेली पर टिकाकर दाहिने हाथ से गीत गाते समय बजाया जाता है।
- कालबेलिया जाति के लोग इसे प्रधानता से बजाते है एवं इस पर प्रमुखतः कहरवा ताल बजायी जाती है।

❖ **खंजरी**

- आम की लकड़ी से बने इस वाद्य यंत्र को, एक ओर से खाल से मढ़ा जाता है एवं इसे दाहिने हाथ से पकड़कर बायें हाथ से बजाया जाता है।
- कामड़ बालई, भील, नाथ, कालबेलिया आदि लोग इसे मुख्य रूप से बजाते है।

❖ **डूगडूगी–** यह डमरू का छोटा रूप है।

❖ **डमरू**

- यह दो मुँहा छोटे बैरल की आकृति का होता है जिसके दोनों मुँहों पर चमड़ा मढ़ा जाता है। इसके बीच के पतले हिस्से में चमड़े की दो डोरियाँ बँधी होती है जिनके सिरों पर घूघरू या मोती लगे होते है। इसे बजाने के लिए बीच से पकड़कर हिलना पड़ता है।

❖ **डैंरू**

- यह डमरू का बड़ा रूप है एवं आम की लकड़ी का बना होता है। इसे बायें हाथ से पकड़कर,दाहिने हाथ द्वारा लकड़ी की डंडी से आघात कर बजाया जाता है।
- आमतौर पर इसके संगत में थाली व काँसे का कटोरा भी बजाया जाता है।

❖ **ढाक**

- यह वाद्य यंत्र डैरूनुमा, किन्तु उससे आकार में बड़ा होता है। इस वाद्य यंत्र को विभिन्न अवसरों व त्यौहारों पर गुर्जर जाति के लोगों द्वारा दोनों पैरों पर रखकर बजाया जाता है।

❖ **डफ**

- यह लोहे के बने गोल घेरे पर खाल मढ़कर बना वाद्य यंत्र है जिसे एक हाथ द्वारा डंडे की सहायता से आघात कर बजाया जाता है। इसी वाद्य यंत्र का छोटा रूप डफली होता है।

❖ **पाबू जी के माटे**

- मिट्टी के बड़े बर्तनों के मुख पर खाल मढ़कर एवं रस्सी से बाँधकर यह वाद्य यंत्र बना जाता है। थोरी या नायक जाति के लोगों द्वारा पाबूजी के पवाड़े गाते समय इसे बजाया जाता है।

❖ **धौंसा**

- इसे आम व फंरास की लकड़ी से बने घेरे पर भैंसे की खाल मढ़कर बनाया जाता है एवं लकड़ी के मोटे डंडों की सहायता से बजाया जाता है।

❖ **ताशा**

- यह लोहे या मिट्टी के छापते कटोरों पर बकरे की खाल मढ़कर बनाया जाता है एवं गले में लटकाकर दो पतली डंडियों से बजाया जाता है। यह वाद्य यंत्र मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलित है।
- बयाना युद्ध के बाद में बाबर की सेना से सांगा की सेना ने छीन लिया था।

❖ **दमामा(टामक)**

- यह कढ़ाई के आकार का लोहे का बहुत बड़ा नगाड़ा है जो भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है। इसे दो बड़े व भारी डंडों से बजाया जाता है। इसे मुख्य रूप से युद्ध के वाद्य यंत्रों के साथ बजाया जाता था।

❖ **घेरा**

- अष्ट भुजाकार आकृति वाले इस वाद्य यंत्र के एक ओर चमड़ा मढ़ा जाता है। लकड़ी के डंडे के ऊपरी भाग पर कपड़ा लपेटकर इसे बजाया जाता है।

4.घन वाद्य यंत्र– धातु से निर्मित वाद्य यंत्र। जैसे–

❖ **मंजीरा**

- यह पीतल व काँसे की मिश्रित धातु का छोटा गोलाकार वाद्य यंत्र होता है।
- इसमें दो मंजीरों को आपस में घर्षित कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।
- होली व निर्गुण भक्ति के भजन गाते समय इनके साथ तंदुरे व एकतारे का प्रयोग भी किया जाता है। कामड़ जाति की महिलाएँ तेरहताली नृत्य के दौरान अपने शरीर पर 13 मंजीरे धारण कर मधुर ध्वनि उत्पन्न करती है। रामदेवजी के भोपें भी भजन गायन के दौरान इनका परयोग करते है।

❖ **झांझ**

- यह मंजीरे का बड़ा रूप है। यह शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य यंत्र है एवं इसे कच्छी घोड़ी नृत्य में ताशे की संगत में प्रयोग लिया जाता है।
- यह ढोल के ताशें के साथ बजायी जाती है।

❖ **थाली**

- इसे काँसे की थाली के एक किनारे पर छेद कर एवं उसमें रस्सी बाँधकर अँगूठे से लटकाकर लकड़ी के डंडे के आघात द्वारा बजाया जाता है।
- भील, कालबेलिया आदि जातियाँ इसे विशेष रूप से बजाती है।

❖ **करताल**

❖ **खड़ताल**

- खड़ताल शब्द करताल (हाथों से उत्पन्न ध्वनि) से बना है।

- इस वाद्य यंत्र में दो लकड़ी की टुकड़ों में बीच में पीतक की छोटी–छोटी तश्तरियाँ लगी रहती है जो की लकड़ी के टुकड़ों के परस्पर टकराने से मधुर स्वर व ध्वनि उत्पन्न करती है।
- खड़ताल का प्रयोग विशेषतः भक्तजनों व साधु–संतों द्वारा भजन व धार्मिक गीत गाते समय किया जाता है एवं इसे इकतारे की संगत में बजाया जाता है।
- बाड़मेर क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकार गाजी खान, सद्दीक खाँ खड़ताल बजाने में दक्ष है एवं इन्हें **'खड़ताल का जादूगर'** कहा जाता है।

❖ **चिमटा**

- यह लोहे की दो पतली पट्टिकाओं से मिलकर बना होता है एवं इन पट्टिकाओं के बीच लोहे की गोल–गोल छोटी पत्तियाँ लगी होती है।
- इसे बायें हाथ में पकड़कर, दायें हाथ की अंगुलियों से भजन–कीर्तन के समय बजाया जाता है।

❖ **घण्टा/घड़ियाल**

- यह पीतल या अन्य धातु का गोलाकार वाद्य यंत्र है जिसे डोरी से लटकाकर हथोड़े व इसके अंदर लटके हुए डंडे से आघात कर बजाया जाता है।
- इसका प्रयोग मुख्यतः मंदिरों में किया जाता है एवं इसी का छोटा रूप घण्टी कहलाता है।

❖ **भरनी**

- यह वाद्य यंत्र , मिट्टी के मटके के सकड़े मुँह पर काँसे की प्लेट ढँककर बनाया जाता है जिसे दो डंडियों की सहायता से बजाया जाता है।
- यह मुख्यतः भरतपुर–अलवर क्षेत्र में लोकदेवताओं के यहाँ सर्प के काटे हुए व्यक्ति का इलाज करते समय बजाया जाता है।

❖ **रमझोल**

- इसमें चमड़े की पट्टी पर बहुत सारे छोटे–छोटे घुंघुरू सिले होते है। जिन्हें नृत्य करते समय दोनों पैरों पर बाँधा जाता है एवं इसमें लगे घुंघुरू शरीर के संचालन के साथ मधुर ध्वनि उत्पन्न करते है।
- होली पर गैर नृत्य करने वाले एवं भील लोग विभिन्न चक्राकार नृत्यों में इसका प्रयोग करते है।

❖ **घुरालियो**

- यह वाद्य यंत्र बाँस की खपच्चियों से बनाया जाता है। इस खपच्ची को एक ओर से छीलकर उस पर धागा बाँध दिया जाता है।
- इसे दाँतों के बीच दबाकर धागे को ढील व तनाव देकर बजाया जाता है।
- इस वाद्य यंत्र का प्रयोग कालबेलियां तथा गरासियां जनजातियों द्वारा किया जाता है।

अन्य घन वाद्य यंत्रः–

- झालर
- घूंघरू
- घड़ा
- टंकोरा
- लेजिम

Springboard ACADEMY

राजस्थान के आभूषण

राजस्थान विभिन्न रियासतों की भूमि रही है अतः यहां के स्त्रियों व पुरुषों का आभूषणों के प्रति लगाव स्वाभाविक है। यहाँ विभिन्न पर्वों व अवसरों के अनुरूप आभूषणों का निर्माण किया गया, इन आभूषणों ने इन्हें पहनने वालों के सौंदर्य को और अधिक बढ़ाने का कार्य किया। समय के अनुरूप आभूषणों की इस निर्मिति शैली में काफी बदलाव आये है।

महिलाओं के आभूषण

1. **सिर /मस्तक पर पहने जाने वाले आभूषणः–** सिर पर बांधे जाने वाले आभूषणों को चूड़ा रत्न भी कहा जाता है।
   - ✪ **शीशफूल**– इसे मस्तक के पीछे बालों पर दोनों ओर सोने की बारीक साकल बाँध कर ललाट पर लटकाई जाती है।
   - ✪ **बोर/बोरला–** यह मोटे बोर (खाने का बोर) के आकार (गोलाकार) में बना सोने या चाँदी से बना होता है। इसके आगे के भाग में छोटे–छोटे दाने उभरे होते है तथा उसके पीछे के भाग में छोटा हुक होता है। हुक में धागा बांधकर महिलाएँ सिर के बालों के मध्य ललाट पर लटकते हुए बांधती है।
   - ✪ **रखड़ी**– यह बोर के समान गोलाकार आकृति में होती है। इसमें कीमती पत्थर के नगों की जड़ाई की जाती है। रखड़ी को सिर पर मांग के ऊपर बांधा जाता है।
   - ✪ **बिंदी/टीकी**– यह सुहागिन स्त्री को शोभा बढ़ाने वाला आभूषण हैं जिसे महिलाएँ ललाट के मध्य में लगाती है।
   - ✪ **मैमंद**– यह स्त्रियों के माथे पर पहनने का आभूषण है। इस आभूषण पर लोकगीत भी गाये जाते है।
   - ✪ **टिड्डी भलकों**– यह महिला के मांग भरने के नीचे ललाट पर पहने जाने वाला आभूषण है।
   - ✪ **गोफण**– यह महिलाओं के बालों की वेणी (बालों की छोटी लटें) में गुथा जाने वाला आभूषण है।
2. **कान के आभूषण :–**
   - ✪ **कर्ण फूल**– यह कान के नीचले भाग का पुष्पाकार आभूषण होता है इस आभूषण के मध्य नगीने जड़े होते है।
   - ✪ **झूमका**– यह कर्णफूल जैसा होता है, लेकिन इसके बीच में सोने के गोल बुंदे बने होते है और इसके चेन भी लगायी जाती है, जो कानों के चारों ओर लपेटी जाती है।
   - ✪ **फूलझूमका**–यह दो प्रकार का होता है, एक घंटी के आकार का एवं दूसरा पुष्प के आकार का।

- ✪ **बजटी**– यह आभूषण झूमके के साथ लगा होता है।
- ✪ **पीपल पत्र–** यह सोने व चाँदी का गोलाकार आभूषण होता है जिसे कान के ऊपरी हिस्से में छेद करके पहना जाता है।
- ✪ **ओगन्या**– यह पान के पत्ते के समान सोने व चाँदी का आभूषण है जो कान के ऊपरी हिस्से में पहना जाता है।
- ✪ **गुदड़ा–** सोने के तार के आगे मुद्रा के आकार का मोती पीरा कर कान में पहना जाने वाला आभूषण है।
- ✪ **टोटी/तोटी–** यह आभूषण तोते के आकार का होता है तथा कान के नीचले हिस्से में पहना जाता है।
- ✪ **लटकन**– इसका आकार अंगूर के गुच्छे के समान होता है।
- ✪ **भादरायण**– यह कान के ऊपरी सिरे पर पहनने का आभूषण है, जिसकी संख्या 4 से 11 तक होती है।
- ✪ **अन्य आभूषण** – झेला, जमेला, एवं अगोट्या

3. नाक के आभूषण :–

- ✪ **नथ**– इस आभूषण को चेन द्वारा मेमंद से जोड़कर नाक में पहना जाता है।
- ✪ **लौंग**– यह सोने या चाँदी से निर्मित मसाले की लौंग की आकृति का आभूषण है जिसके ऊपर घूंडीदार नगीना लगा होता है।
- ✪ **काँटा**– यह सोने या चाँदी के तार से बना आभूषण है जिसके ऊपर सोने या चाँदी से बनी छोटी घूंडी लगी होती है।
- ✪ **भंवरा/भंवरियो/भँवरकड़ी**– यह एक बड़े आकार की लौंग होती है जिसे आमतौर पर विश्नोई समाज की महिलाएँ पहनती है।
- ✪ **बेसरि**– यह सोने के तार का बना होता है जिस पर नाचता हुआ मोर चित्रित होता है। इसे महिलाएँ एक डोरा बाँधकर सिर के बालों में फँसाती है।
- ✪ **भोगली**–यह कांटे की जगह पहनी जाती है। यह थोथी होती है एवं इसका ऊपर का सिरा स्तम्भ के समान होता है।
- ✪ **अन्य आभूषण** – चोप, चूनी

4. दाँतों के आभूषण :–

- ✪ **चूंप**– दाँतों के बीच में एक छोटा सा छेद बनाकर, उसमें सोने की कील जड़वाई जाती है।
- ✪ **रखन–** यह आभूषण सोने या चाँदी की प्लेट, जिसे दाँतों में लगाया जाता है, का बना होता है।

5. गले के आभूषण :–

- ✪ **हार**– यह सोने का बना आभूषण है जिसमें कई रत्न जड़े होते है।
- ✪ **चन्द्रहार**– यह चाँद की आकृति जैसा हार का एक प्रकार है जो की शहरी महिलाओं में ज्यादा प्रचलित है।
- ✪ **झालरा**– यह सोने एवं चाँदी की लड़ियों से बना हार होता है जिसमें घूघरियां लगी होती है
- ✪ **कांठला**– यह सोने या चाँदी की छोटी–छोटी गोल, चौकोर एवं तिकोनी पत्तियों से बना आभूषण है एवं इसे छोटे बच्चों के गले में पहनाया जाता है।
- ✪ **कंठी/चेन**– यह सोने की लड़ से बनी बारीक सांकल होती है जिसमें कोई लॉकेट लगा होता है। यह आभूषण मारवाड़ क्षेत्र में अधिक प्रचलित है।
- ✪ **मुक्तमाला/सुमरगी**– यह मोतियों की माला होती है। प्राचीनकाल में अमीर परिवार की महिलाओं में इसका अधिक प्रचलन था।
- ✪ **हँसली**– यह सोने या चाँदी के मोटे तार को जोड़कर बना गोलकार आभूषण होता है एवं ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों की हँसली खिसकने से बचाने के लिए पहनाया जाता है।
- ✪ **ठुस्सी/टुस्सी**– यह वर्तमान में प्रचलित नेकलेस से थोड़ा बड़ा व भारी होता है। इसे "गलपटियो" के नाम से भी जाना जाता है।
- ✪ **तिमणियाँ/धमण्या/आड़/टेड्यों**– सोने की तीन लड़ों से बना आभूषण जो चीलों से बनी हुई लड़ियों के बीच चार अंगुल लंबी मोगरे वाली सोने की डंडी लगाकर बनाया जाता है। आमतौर पर यह वर्गाकार आकृति का होता है।
- ✪ **हमेल**– यह सोने से बनाया जाने वाला हारनुमा आभूषण है जो शेखावटी क्षेत्र में सर्वाधिक प्रसिद्ध है।
- ✪ **खूँगाली/हाँसली**– यह सोने या चाँदी का बना गोलाकार आभूषण होता है। यह आभूषण बीच में से चौकोर एवं किनारों पर से पतला होता है एवं इसमें लगे हुक व कुंडी को आपस में फँसाकर इसे गले में पहना जाता है।
- ✪ **बजंट्टी**– यह आभूषण कपड़े की छोटी पट्टी पर सोने के खोखले दानों को पिरोकर बनाया जाता है।
- ✪ **तांती**– किसी देवी–देवता के नाम पर कलाई या गले में चाँदी का तार या धागा बाँधा जाता है उसे तांती कहा जाता है।
- ✪ **आड़**– यह आभूषण वर पक्ष द्वारा शादी में दुल्हन को दिया जाता है। यह सोने का बना चौकोर आभूषण होता है जिस पर सोने के तार लगे होते है। इन तारों के माध्यम से इसे गर्दन में बाँधा जाता है।
- ✪ **तुलसी**– यह छोटे–छोटे मोतियों की माला है जिसे तिमणियाँ और ठुस्सी के साथ पहना जाता है।

- ✪ **मांदलिया**– यह ताबीज की तरह या ढोलक के आकार का छोटा आभूषण होता है जिसे काले डोरे में पिरोकर पहना जाता है।
- ✪ **रामनामी**– यह सोने का बना लंबा गहना होता है जिसके दोनों ओर मांदलिया लगे होते है।
- ✪ **मंगलसूत्र**– यह पत्नी का पति के प्रति प्रेम का प्रतीक है। यह काले मोतियों की माला से बना हारनुमा आभूषण है।
- ✪ **चंपाकली**– यह गले में पहने जाने वाला आभूषण है।
- ✪ **अन्य आभूषण–** मूँठया, पोत, कंठमाला, हंसहार, सरी, कंठी व हांकर ।

6. हाथ के आभूषण :–

- ✪ **चूड़ियाँ–** सोने, चाँदी या धातु का बना गोलाकार छोटा आभूषण है। लाख से निर्मित चूड़ी को मोकड़ी व काँच से निर्मित चूड़ी को कार्तया कहते है।
- ✪ **बंगड़ी**– यह चूड़ी के आकार का आभूषण होता है जिस पर सोने की परत चढ़ी होती है।
- ✪ **नोगरी**– यह मोतियों की लड़ियों के समूह से बना आभूषण है जसे हाथ में चूड़ियों के बीच पहना जाता है।
- ✪ **कड़ा**– यह धातु से बना टड्डानुमा आभूषण है जो चूड़ी से मोटा व चौड़ा होता है।
- ✪ **गजरा**– यह छोटे मोतियों से बना आभूषण है जो चूड़ी की तरह ढीला न होकर हाथ पर चिपका रहता है।
- ✪ **कंकण**– यह सोने व चाँदी का बना आभूषण है।
- ✪ **गोखरू–** यह सोने व चाँदी से बना, तिकोने दानेनुमा गोलाकार आभूषण है।
- ✪ **पुणच/पूंच**– यह कलाई यानी पुणच पर पहने जाने वाला आभूषण है।
- ✪ **हथफूल/सोवनपान**– सोने सी चाँदी की घूघरियों से बना यह आभूषण हाथ की हथेली के पीछे पहना जाता है। यह सोने की सांकल के माध्यम से हाथ की चारों अंगुलियाँ, अँगूठे से लेकर पूरी बाहरी हथेली को घेरता है।
- ✪ **बल्लया–**यह एक हाथ का आभूषण है।

7. हाथ की अंगुलियों के आभूषण :–

- ✪ **बीठी/अँगूठी/मूंदड़ी**– यह धातु से बना हाथ की अंगुलियों में पहना जाने वाला गोलाकार छल्लों जैसा आभूषण है।
- ✪ **मुद्रिका**– नगीना व अन्य बहुमूल्य रत्न जड़ित अँगूठी, मुद्रिका कहलाती है।
- ✪ **दामणा/दामणी**– यह दो अंगुलियों में एक साथ पहने जाने वाला अँगूठीनुमा आभूषण है।

- ✪ **अरसी**–अँगूठे की अँगूठी को अरसी कहा जाता है।
- ✪ **हथफल/हथपान/खड़दावणा**– हथेली के पृष्ठ भाग में पहने जाने वाला सोने या चाँदी की घूघरियों वाला फूल जो सांकलों के माध्यम से उँगलियों तक पहुंचता है।

8. हाथ की भूजा के आभूषण :–

- ✪ **टड्डा/अणत**– यह तांबे की छड़ से बना चूड़ेनुमा आभूषण है जिस पर सोने या चाँदी की परत चढ़ी होती है। भीनमाल क्षेत्र में इस आभूषण को अड़काणियों कहा जाता है।
- ✪ **बाजूबंध/उतरणों**– यह सोने के बेल्ट जैसा आभूषण है जिसे विवाह के अवसर पर पहनने का रिवाज है। छोटा आकार का बाजूबंध/भूजबंध कहलाता है।

9. कमर के आभूषण :–

- ✪ **कणकती/कंदोरा**– यह सोने या चाँदी की झूलती शृंखलाओं से युक्त पट्टिनुमा आभूषण है।
- ✪ **सटका**– यह सोने या चाँदी के छल्लों से निर्मित आभूषण है जिस पर चाबियाँ लटकी रहती है। इस आभूषण को लहंगे के नेफे में अटकाकर लटकाया जाता है।
- ✪ **तकड़ी**– यह सोने या चाँदी से बना आभूषण है।
- ✪ **चौथ**– चाँदी से बनी चौकोर जालियों की जंजीर को चौथ कहा जाता है।

10. पैर के आभूषण :–

- ✪ **कड़ा**– यह चाँदी से बना ठोस गोलाकार आभूषण है।
- ✪ **लंगर**– यह आभूषण चांदी या सोने के मोटे तारों को जोड़कर बनाया जाता है तथा कड़े के नीचे पहना जाता है।
- ✪ **आँवला**– यह सोने या चाँदी का बना आँवलानुमा कड़ा होता है। इसके साथ सेवटा भी पहना जाता है। आंवला व सेवटा दोनों पर छिलाई का काम होता है।
- ✪ **नेवरी**– यह पायल की तरह का आभूषण है जो आँवला के साथ पहना जाता है।
- ✪ **पायल/रमझोल/पायजेब**– यह छोटी जंजीरनुमा गोलाकार आभूषण है जिसके नीचे छोटे–छोटे घुंघुरू लगे होते है।
- ✪ **टणका**– यह चाँदी से बना गोलाकार आभूषण है जिसे पैरों में पहनने पर टणक–टणक की आवाज आती है।
- ✪ **झांझर**– यह पायलनुमा आभूषण है जिससे रून–बून की मधुर आवाज आती है।
- ✪ **तोड़ा/तोड़ो**– यह आभूषण चाँदी के मोटे तारों को जोड़कर बनाया जाता है। यह ऊपर से सकड़ा व नीचे से चौड़ा होता है एवं इसे कड़े के नीचे पहना जाता है।

✪ **हीरानामी**– यह चाँदी से बना कड़ेनुमा आभूषण है। यह ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं में अधिक प्रचलित है।

11. पैर की अंगुलियों के आभूषण :–

✪ **बिछिया/बिछुड़ी**– यह आभूषण सुहाग का प्रतीक है एवं पैर के अँगूठे के पास वाली अंगुली में पहना जाता है।

✪ **गोलमा**– यह चाँदी की चौड़ी एवं सादी अंगूठियाँ होती है जो पैरों की अंगुलियों में पहनी जाती है।

✪ **अंगूठा**– यह अँगूठीनुमा आभूषण है जो पाँव के अँगूठे में पहना जाता है।

✪ **पगपान**– यह हथफूल की तरह का आभूषण है। इसे पैर के अँगूठे व अंगुलियों के छल्लों को चौन से जोड़कर पायल की तरह पैर के ऊपर हुक से जोड़कर पहना जाता है।

12. पुरुषों के आभूषण :–

✪ अंगुलियों के आभूषण – अँगूठी, मुंदड़ियां

✪ कलाई के आभूषण – कड़ा

✪ कान के आभूषण – लौंग, मुरकियाँ, झाले, छैलकड़ी

✪ गले के आभूषण – चेन, पैंडल, मांदलिया, रामनामी

✪ हाथ की भूजा के आभूषण– भूजबंध, कड़ा, नरमुख

13. बच्चों के आभूषण :–

✪ **हँसुली**– बच्चों के गले का आभूषण

✪ **कडूल्या**– हाथ और पाँव में पहनने वाला कड़ा

✪ **नजर्या**– सोने का खेरा, मूँग का आखा और रतनचनण बांधकर तैयार किया गया बच्चों के गले का आभूषण जिससे बुरी नजर टलती है।

✪ **झाँझरिया/पैंजणी**– पाँवों में पहनाई जाने वाली पतली सांकली जिसमें घूँघरियाँ लगा दी जाती है।

✪ **कुड़क**– सोने या जस्ते का आभूषण जो की कान छिदवा के पहना जाता है।

राजस्थानी महिला के आभूषण

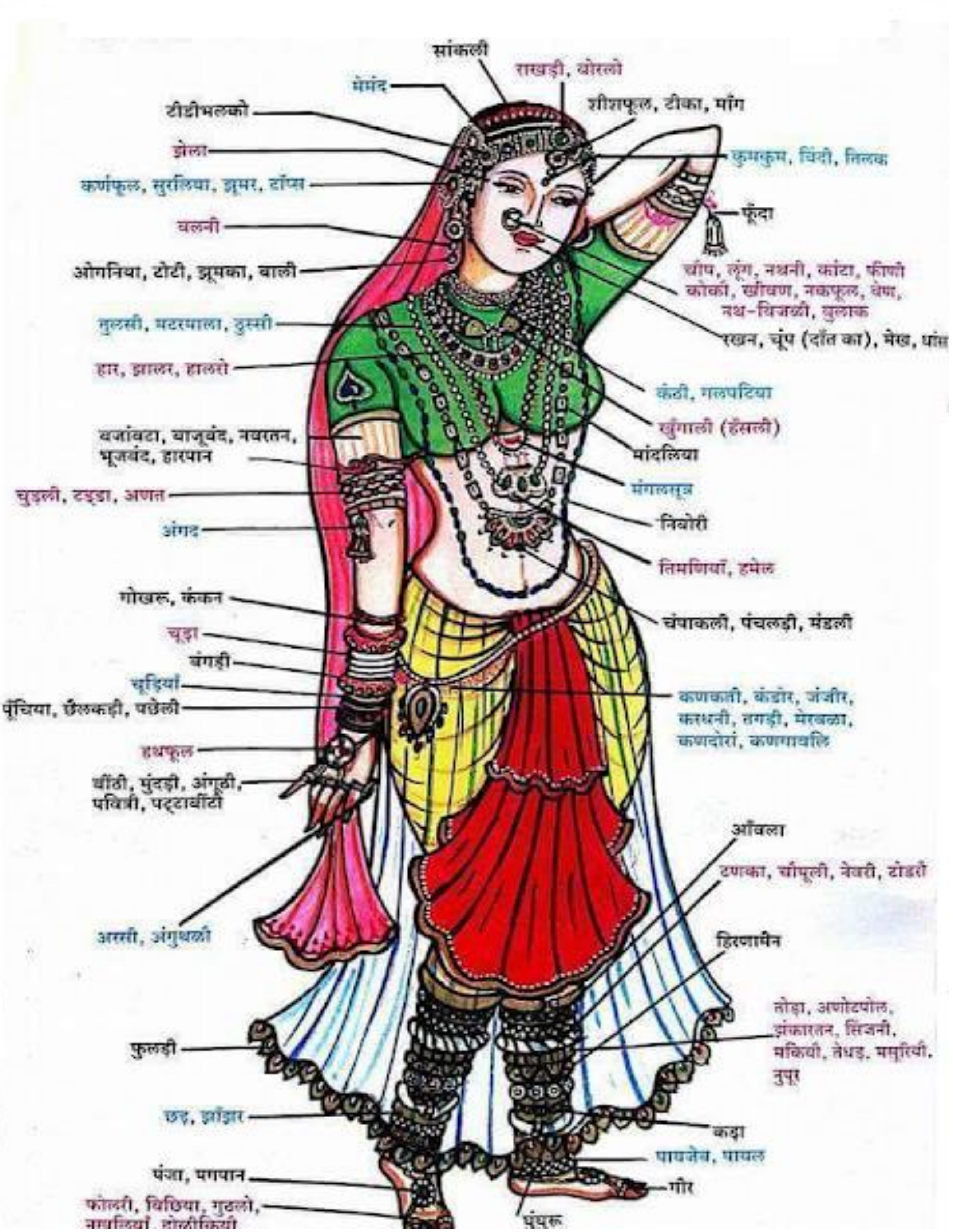

राजस्थानी वेशभूषा एवं पहनावा

कालीबंगा एवं आहड़ स्भ्यता के काल से ही राजस्थान में सूती वस्त्रों का प्रचलन था। इन स्थानों से उत्खनन में प्राप्त रुई काटने के चक्र और टाकली इस बात को सिद्ध करती है कि उस काल के लोग रुई के वस्त्रों का उपयोग करते थे।

☑ पुरुषों के वस्त्र :–

1. पगड़ी

- मेवाड़ महाराणा की पगड़ी बांधने वालों को छाबदार कहा जाता है।
- यह पुरुषों द्वारा सिर पर धारण की जाती है एवं इसे साफा, पोतिया, पाग, बागा और पेंचा भी कहा जाता है।
- पगड़ी आन–बान और शान की प्रतीक मानी जाती है। पगड़ी को सजाने के लिए तुर्रे, सरपेंच, बालाबन्दी, धुगधुगी, पछेवड़ी, लटकन, फतेपेच आदि का इस्तेमाल किया जाता है।
- जोधपुर की खिड़कियाँ पाग बहुत लोकप्रिय है। यहाँ मौसम एवं उत्सवों के अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार की पगड़ी पहनी जाती है जैसे श्रावण में लहरिया पगड़ी, विवाहोत्सव पर मोठड़े की पगड़ी, दशहरे पर भदील पगड़ी एवं होली पर फूल–पत्ती की छपाई वाली पगड़ी का प्रयोग होता है।
- सुनार आंटे वाली पगड़ी तथा बंजारे मोटी पट्टेदार पगड़ी का प्रयोग करते थे।
- राजस्थान में कई किस्म एवं शैलियों की पगड़ियाँ प्रचलित है जैसे– अटपटी, अमरशाही, उदयशाही, खंजरशाही, शिवशाही, विजयशाही एवं शाहजहाँनी ।

2. अंगरखी

- पुरुषों द्वारा शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाता है।
- बुगतरी, तनसुख, दुतई, गाबा, गदर, मिरजाई आदि नामों से भी जाना जाता है।

3. अचकन

- पुरुषों द्वारा शरीर के ऊपरी भाग में पहने जाने वाला परिधान होता है जो घुटनो तक लंबा होता है। इसका मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलन है।

4. चोगा

- यह एक लंबी आस्तीन वाला घेरदार परिधान है जो पुरुषों द्वारा अंगरखी के ऊपर पहना जाता है।

5. धोती

- यह पुरुषों की पारंपरिक वेशभूषा है जिसे कमर के नीचे पहना जाता है।

6. बिरजस/ब्रीचेस –

- यह एक चूड़ीदार पायजामेनुमा वस्त्र होता है जो पैरों से घुटनों तक तंग तथा घुटनों से कमर तक घेरदार चौड़ा होता है।
- इसे आमतौर पर घुड़सवारी एवं उत्सवों के दौरान पहना जाता है।

7. कमरबंद/पटका

- यह कमर पर बाँधे जाने वाला पट्टीनुमा वस्त्र है जिसमें तलवार आदि रखी जाती है।

8. पछेवड़ा

- यह मोटी कंबल की तरह का वस्त्र है जो सर्दी के दिनों में ओढ़ने के लिए प्रयोग लिया जाता है।

9. घूघी

- ऊन से बनी घूघी अरशा एवं सर्दी से बचाव हेतु ओढ़ी जाती है।

10. आतमसुख

- यह प्रायः तेज सर्दी में ओढ़ा जाता है एवं इसकी तुलना कश्मीरी फिरन से की जा सकती है।

11. मलयगिरी– भूरा सुगन्धित वस्त्र।

☑ महिलाओं की वेशभूषा :–

1. ओढ़नी (दामणी)

- स्त्रियाँ सिर, चेहरा एवं ऊपरी शरीर को ढकने के लिए ओढ़नी का प्रयोग करती है।
- पोमचा, लहरिया, मोठड़ा एवं लूगड़ा आदि ओढ़नियों के विभिन्न प्रकार है।
- पोमचा एक प्रकार की ओढ़नी है जिसका अर्थ है कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़नी, जो नवजात शिशु की माँ के लिए उसके मातृपक्ष की ओर से आता है। पुत्र जन्म पर पीला पोमचा एवं पुत्री जन्म पर गुलाबी पोमचा देने की प्रथा है।
- लहरिया श्रावण मास में तीज पर विशेष रूप से पहना जाता है एवं लूगड़ा विवाहित स्त्रियों द्वारा पहना जाता है।
- होली के अवसर पर फागणियाँ लहरिया पहना जाता है एवं लाल रंग की ओढ़नी जिस पर धागों से कसीदाकारी होती है, दामणी कहलाती है।
- पाँच संख्या को शुभ माना जाने के कारण मांगलिक अवसरों पर पचरंगा लहरिया पहना जाता है। लहरिये के प्रकार निम्न है
  - 'प्रतापसाही' लहरिया का उल्लेख साहित्य में मिलता है।
  - राजशाही लहरिया– जयपुर के रंगरेज यह लहरिया रंगते थे जिसमें चमकदार गुलाबी रंग की आड़ी रेखाएं बनती थी।

- समुद्र लहरिया– इसमें चौड़ी–चौड़ी धारियां बनती है, यह दो, तीन पाँच व सात रंगों में बनता है।

2. कुर्ती और काँचली

✍ काँचली आस्तीन वाला एक आंतरिक वस्त्र होता है जो महिला के शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाता है।

✍ कुर्ती बिना बाँह के ब्लाउज की तरह का एक वस्त्र होता है जो काँचली के ऊपर पहना जाता है। यह महिलाओं के शरीर को गर्दन से कमर तक ढकता है।

3. तिलका

✍ यह मुस्लिम स्त्रियों का पहनावा है।

4. दामड़ी

✍ मारवाड़ की स्त्रियाँ लाल रंग की ओढ़नी, जिस पर धागों की कशीदाकारी होती है, पहनती है, इसे दामड़ी कहा जाता है।

5. **झिम्मी**– मामा द्वारा भेजा जाने वाला वस्त्र।

☑ आदिवासियों के प्रमुख वस्त्र

1. अंगरखा

इसे पुरुषों द्वारा कमर के ऊपर पहना जाता है एवं इस पर सफेद धागे से कढ़ाई की जाती है। इसे सुंदर बनाने के लिए इस पर फूल, सितारे एवं ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई जाती है।

2. अंगोछा

✍ इसे सिर पर पहना जाता है एवं इसके किनारों पर कंगूरे छपे होता है।

3. कटकी

✍ इसे अविवाहित आदिवासी लड़कियों द्वारा सिर पर ओढ़ा जाता है।

4. नांदणा या नानड़ा

✍ यह आदिवासी महिलाओं में प्रचलित सबसे प्राचीनतम पोशाक है।

✍ यह नीले रंग की छींट होती है जिस पर तितली भांत (प्रकार) के चतुष्कोण बने होते है।

5. रेनसाई

✍ यह महिलाओं द्वारा पहने जाने वाली एक प्रकार की साड़ी है।

6. जामसाई साड़ी

✍ यह विवाह के अवसर पर आदिवासी महिलाओं द्वारा पहने जाने वाली साड़ी है।

7. कछाबू

✍ आदिवासी महिलाओं के घुटनों तक के घाघरे को कछाबू कहा जाता है।

8. फूदड़ी

- यह आदिवासी महिलाओं का वस्त्र है जिस पर षट्कोणीय आकृति में बने तारें बने होते है।

9. केरी भांत की ओढ़नी

- केरी छोटा कच्चा आम होता है। इस ओढ़नी के किनारों एवं पल्लू पर केरी छपी होती है एवं मुख्य भाग पर छोटी–छोटी बिंदियाँ बनी होती है।

10. **ज्वार भांत की ओढ़नी–**

- इस ओढ़नी के दोनों ओर लाल रंग की छोटी–छोटी बिंदियाँ एवं लाल रंग के बेल–बूटे छपे होते है।

11. तारा भांत की ओढ़नी

- यह लाल रंग की ओढ़नी है जिसकी जमीन (पृष्ठभूमि) भूरे रंग की होती है। इसके किनारों पर छोर तारों जैसा षट्कोणीय आकृति में दिखाई देता है।

12. लहर भांत की ओढ़नी

- यह ज्वार भांत की बिन्दियों से निर्मित लहरियाँ होता है।
- ''राजस्थान में साड़ियों के विविध नाम प्रचलित थे– चोल, निचोल, पट, दुकूल, अंसुक, वसन, चीर–पटोरी, चोरसो, धोरावाली आदि।
- '' स्त्रियॉ के परिधानों के लिए कई प्रकार के कपड़े प्रचलित थे जिन्हें जामादानी, किमखाब, टसर, छींट, मलमल, मखमल, पर्चा, मसरू, चिक, इलायची, महमूदी चिक, मीर–ए–बादला, नौरंगशाही, बहादुरशाही, फर्रूखशाही, बाफ्ता, मोमजामा, गंगाजली आदि।

☑भीलों की वेशभुषा :–

- **ढेपाड़ा–** तंग धोती।
- **खोयतु –** सामान्य धोती।
- **पिरियों –** दुल्हन की पीली पोशाक।
- **सिंदुरी –** लाल साड़ी।
- **परिजनी –** महिलाओं के पीतल के कड़े।

राजस्थान की प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज

1. नाता प्रथा

- ✪ यह भीलों व अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित प्रथा है जिसमें पत्नी अपने पूर्व पति को छोड़कर अपनी पसंद के किसी अन्य पुरुष के साथ जीवन व्यतीत करती है।

2. केसरिया

- ✪ राजपूत योद्धाओं द्वारा पराजय की स्थिति में या शत्रु के समक्ष आत्मसमर्पण करने के बजाय केसरिया वस्त्र धारण कर शत्रु पर टूट पड़ना एवं मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद हो जाना, केसरिया कहलाता था।
- ✪ केसरिया का उद्देश्य शत्रु के समक्ष आत्मसमर्पण के बजाय युद्ध में लड़कर वीरगति को प्राप्त करना होता था।

3. **जौहर**

- ✪ जब राजपूत योद्धाओं द्वारा केसरिया किया जाता था तब राजपूत वीरांगनाओं द्वारा शत्रु से अपने सतीत्व व आत्मसम्मान की रक्षार्थ किया जाने वाला सामूहिक अग्नि–स्नान, जौहर कहलाता है।

4. सती प्रथा

- ✪ इस प्रथा के अंतर्गत पत्नी स्वेच्छा से अपने पति के शव के साथ चिता में जीवित जलकर मृत्यु को वरण करती थी।
- ✪ प्राचीनकाल में इस प्रथा को अद्वितीय एवं सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक माना जाता था, किन्तु मध्यकाल में इसे स्त्री की इच्छा के विपरीत परिवार की मर्यादा एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए किया जाने लगा अतः इस काल में इस प्रथा ने भयावह रूप धारण कर लिया था। इस प्रथा को सहगमन भी कहा जाता है।
- ✪ राजस्थान में सर्वप्रथम बूँदी रियासत ने 1822 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था।
- ✪ राजा राम मोहन राय के प्रयासों से 1829 ई. में गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक ने एक अधिनियम पारित कर इस प्रथा को अवैध घोषित कर दिया था।
- ✪ अलवर प्रथम राजपूत राज्य था जिसने 1829 ई. के कानून के बाद सबसे पहले 1830 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था।
- ✪ निम्नलिखित रियासतों ने इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाए थे

  - ✓ जयपुर – 1844 ई. में
  - ✓ जोधपुर – 1848 ई. में
  - ✓ उदयपुर – 1861 ई. में
  - ✓ कोटा – 1862 ई. में

5. **मानव व्यापार/दासों का क्रय–विक्रय**

- ✪ राजस्थान में प्राचीन काल से ही मनुष्यों का व्यापार दासों की खरीद–फरोख्त के रूप में होता था। आम तौर में युद्ध के कैदियों को दास के रूप में बाजार में बेचा व खरीदा जाता था।
- ✪ राजस्थान में मानव व्यापार पर प्रतिबंध सर्वप्रथम 1847 ई. में जयपुर रिजेन्सी कौंसिल के अध्यक्ष जॉन लुडलो के प्रयासों से लगाया गया था।
- ✪ उदयपुर में 1863 ई. में एवं कोटा में 1867 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया गया था।

6. **समाधि प्रथा**

- ✪ इस प्रथा के अंतर्गत व्यक्ति मृत्यु को वरण करने के उद्देश्य से स्वयं को जल में डूबोकर एवं भूमि में दफनाकार अपने प्राण त्याग देता है। आमतौर पर साधू–महात्माओं एवं धार्मिक गुरुओं द्वारा इस प्रथा का पालन किया जाता था।
- ✪ राजस्थान में सर्वप्रथम जयपुर रियासत द्वारा 1844 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया गया था। यह कार्य जयपुर रिजेन्सी कौंसिल के अध्यक्ष जॉन लुडलो के द्वारा किया गया था।

7. **कन्यावध**

- ✪ मध्यकाल में राजस्थान में विशेषतः राजपूतों में प्रचलित इस प्रथा में कन्या के जन्म लेते ही उसे मार दिया जाता था।
- ✪ राजस्थान में ब्रिटिश शासन के अधिक प्रभावी होते ही अंग्रेज सरकार ने रियासतों को कन्यावध पर रोक लगाने के आदेश दिये।
- ✪ कैप्टन हॉल ने केंद्रशासित क्षेत्र मेरवाड़ा की मेर–पंचायत में इस प्रथा पर प्रतिबंध लगवाया था।
- ✪ राजस्थान में सर्वप्रथम हाड़ौती के पॉलिटिकल एजेंट विलकिंसन के प्रयासों से कोटा रियासत ने 1834 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था एवं उस काल में महाराव उम्मेदसिंह कोटा के शासक थे।

8. **डाकन प्रथा**

- ✪ इस प्रथा में स्त्रियों को डाकन होने के संदेह में शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ व निर्मम अत्याचार किए जाते थे। कई मामलों में डाकन होने के संदेह के स्थिति में स्त्रियों को मार भी डाला जाता था।
- ✪ राजस्थान में कई जातियों विशेषकर मीणा एवं भील जातियों में यह प्रथा अधिक प्रचलित थी।
- ✪ राजस्थान में सर्वप्रथम महाराणा स्वरूप सिंह ने ब्रिटिश सरकार की सलाह पर 1853 ई. में उदयपुर में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था। डाकन प्रथा पर यह

प्रतिबंध भीलों द्वारा अपनी प्रथाओं व मान्यताओं पर अंग्रेजी हस्तक्षेप के रूप में माना गया। अतः यह आगामी जनजातीय आंदोलनों का प्रमुख कारण बना।

9. **त्याग प्रथा**

- ✪ राजपूत परिवारों में कन्या के विवाह के समय कन्या के पिता द्वारा चारण, ढोली, भाट व अन्य जाति के लोगो को स्वेच्छा से दान–दक्षिणा दी जाती थी, जिसे त्याग कहा जाता था।
- ✪ कालांतर में चारण, भाट आदि द्वारा हठपूर्वक मुँह–माँगी दान–दक्षिणा की माँग की जाने लगी जिसके फलस्वरूप यह वधू पक्ष के लिए अतिरिक्त बोझ बन गया। सर्वप्रथम जोधपुर राज्य द्वारा इस प्रथा को सीमित करने का प्रयास किया गया।

10. **बाल–विवाह**

- ✪ इस प्रथा के अंतर्गत बच्चों का विवाह बिना ज्ञान व सहमति के कर दिया जाता है। राजस्थान में आज भी आखा तीज के दिन बड़े पैमाने पर बाल–विवाह होते है।
- ✪ समाज सेवी हरविलास शारदा के प्रयासों से 1929 ई. में शारदा एक्ट पारित हुआ, जिसके अनुसार लड़कों एवं लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः 18 वर्ष व 15 वर्ष निर्धारित की गयी।
- ✪ इस अधिनियम से पूर्व जोधपुर के प्रधानमंत्री सरप्रताप द्वारा 1885 ई. में इस प्रथा के विरोध में प्रतिबंधक कानून बनाया गया था।

11. **विधवा विवाह**

- ✪ वर्तमान समय में भी विधवा का जीवन अत्यंत कष्टपूर्ण होता है। अतः हम कल्पना कर सकते है कि मध्यकाल में विधवा महिला का जीवन अत्यंत नरकीय एवं असहनीय रहा होगा।
- ✪ समाज सेवी ईश्वरचंद विद्यासागर के अथक प्रयासों के फलस्वरूप लॉर्ड डलहोजी ने विधवाओं को इस दुर्दशा से मुक्त करने हेतु 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बनाया था।
- ✪ आर्य समाज के कार्यकर्ता चाँदकरण शारदा ने विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए "विधवा–विवाह" नामक पुस्तक लिखी।

12. **सागड़ी प्रथा/बँधुआ मजदूर प्रथा**

- ✪ इस प्रथा के अंतर्गत किसी व्यक्ति को स्थानीय जमींदारों, साहूकारों आदि के द्वारा उधार दी गयी राशि के बदले उम्र भर नौकर के रूप मे कार्य करने के लिए विवश किया जाता था एवं कार्य के बदले में उसे कोई वेतन नहीं दिया जाता था।
- ✪ 1961 ई. में राजस्थान सरकार ने सागड़ी निवारण अधिनियम पारित करके बंधुआ मजदूरों को पूँजीपति जमीदारों व महाजनों के चुंगल से मुक्ति दिलवाने का प्रयास किया था।

13. हेलमो

- ✪ यह सामूहिक सहयोग की एक अद्वितीय परंपरा है, जिसमें सभी लोग मिलकर निःस्वार्थ रूप से एक दूसरे के कार्यों जैसे घर बनाना, खेत जोतना आदि में सहयोग करते है।

14. झगड़ा

- ✪ यह एक प्रतिपूर्ति राशि होती है जिसे उस व्यक्ति द्वारा माँगी जाती है जिसकी पत्नी उसे छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चली जाती है।
- ✪ इस राशि का निर्धारण पंचायत द्वारा किया जाता है एवं दूसरे व्यक्ति को पूर्व पति को यह राशि देना अनिवार्य होता है।

15. दापा

- ✪ यह प्रथा कई आदिवासी जनजातियों में प्रचलित है जिसमें वर पक्ष को शादी के लिए वधू के पिता को कुछ राशि का भुगतान करना होता है। इस राशि को ही दापा कहा जाता है।

16. मौताणा

- ✪ यदि किसी आदिवासी की किसी दुर्घटना या अन्य कारण से मृत्यु हो जाती है तो आरोपी व्यक्ति को मृतक के परिवार को एक निश्चित राशि का भुगतान करना होता है। यह निश्चित राशि ही मौताणा कहलाती है।
- ✪ इस राशि का निर्धारण पंचायत द्वारा किया जाता है। आरोपी को इसे मृतक के परिवार को देना अनिवार्य होता है एवं मौताणा मिलने पर ही मृतक का परिवार शव को घटना स्थल से उठाता है।

17. **छेड़ा फाड़ना**

- ✪ यह प्रथा आदिवासियों द्वारा तलाक लेने का एक तरीका है जिसमें आदिवासी व्यक्ति पंचायत के सामने अपनी पत्नी की साड़ी एक हिस्सा फाड़ता है एवं ऐसा करना करना पति द्वारा अपनी पत्नी का त्याग करना समझा जाता है।

18. **नातरा/आणा**

- ✪ आदिवासियों में विधवा स्त्री का पुनर्विवाह करना, नातरा/आणा प्रथा कहलाती है।

19. **कूकड़ी रस्म**

- ✪ यह साँसी जनजाति की एक रस्म है जिसमें नवविवाहिता को विवाह उपरांत अपनी चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती थी।

20. **टीका**

- ✪ विवाह निश्चित होने जाने पर लड़की के पिता या कन्या–पक्ष की ओर से लड़के के लिए दिये जाने वाले उपहार, टीका कहलाते है।

21. **रीत**

- ✪ विवाह निश्चित होने पर लड़के वालों की तरफ से लड़की को भेजे जाने वाले उपहार, रीत कहलाते है।

22. **सामेला**

- ✪ विवाह के दौरान जब वर वधू के यहां पहुँचता है तो वधू के पिता द्वारा अपने सगे–संबंधियों के साथ वर पक्ष का स्वागत किया जाता है इस प्रथा को सामेला कहा जाता है।

23. पीठी

- ✪ 'वर' व 'वधू' का सौंदर्य निखारने हेतु स्त्रियों द्वारा उनके शरीर पर लगाया जाने वाला हल्दी व आटे का उबटन, पीठी कहलाता है।

24. फेरा

- ✪ वर वधू परिणय सूत्र में अग्नि के समक्ष सात फेरे लगाकर एक दूसरे को साथ रहने का वचन देते है।

25. सीख

- ✪ विवाह बाद वर–वधू एवं बारातियों को उपहार देकर विदा किया जाता है इन उपहारों को सीख कहा जाता है।

26. **औलन्दी**

- ✪ नववधू के साथ भेजी जाने वाली लड़की अथवा स्त्री को औलन्दी कहा जाता है।

27. **जांनोटण**

- ✪ विवाह के दौरान वर–पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज जांनोटण कहलाता है।

28. **मौसर**

- ✪ मृत्यु भोज की प्रथा को मौसर कहा जाता है।
- ✪ कुछ व्यक्ति जीवित अवस्था में ही मौसर करते है, जिसे जौसर कहते है।

29. **मुगधणा**

- ✪ विनायक स्थापना के पश्चात भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली लकड़ियाँ, मुगधणा कहलाती है।

30. **बढ़ार का भोज**

- ✪ विवाह के मौके पर दिये जाने वाला सामूहिक प्रतिभोज, बढ़ार का भोज कहलाता है।

राजस्थान के प्रसिद्ध मंदिर, मस्जिद, मेलें, उर्स, हवेलियाँ

14. प्रमुख मंदिर
15. प्रमुख मस्जिदें
16. मेलें
17. उर्स
18. हवेलियाँ

प्रमुख मंदिर

1. **किराडू के मंदिर** –हाथमा गाँव (बाड़मेर)
   - राजस्थान का खजुराहो
   - किराडू को 'जूना बाड़मेर' कहते है।
   - 'किरात कूप' इसका प्राचीन नाम था।
   - यह परमारों की राजधानी थी।
   - नागर शैली/महामारू शैली
   - 'किरात' – शिव शिकारी के रूप में
2. **ओसियां के मंदिर**– ओसियां (जोधपुर ग्रामीण)
   - नागर शैली/महामारू शैली के उदाहरण है।
   - यहाँ शैव, वैष्णव, जैन, शाक्त व सूर्य मंदिर भी है।
   - 8-10वीं शताब्दी में निर्मित।
3. **सूर्य मंदिर** – झालरापाटन (झालावाड़)
   - इसे 'सात सहेलियों' का मंदिर भी कहते है।
   - जेम्स टॉड ने इसे 'चारभुजा मंदिर' भी कहा है।
   - 10वीं शताब्दी का बना हुआ है।
   - इसे 'पद्मनाथ मंदिर' भी कहते है।
4. **अर्थुना का मंदिर–** बांसवाड़ा
   - परमारों की राजधानी थी।
   - 11वीं व 12वीं शताब्दी में बना है।
   - प्रमुख मंदिर–हनुमान जी का मंदिर
   - 'वागड़ का खजुराहो' भी कहा जाता है।

5. **रणकपुर के मंदिर**– पाली
   - धरणकशाह के द्वारा निर्मित मंदिर
   - शिल्पी –देपाक
   - 1444 स्तम्भ है, जिनमें से एक स्तम्भ आज भी अधूरा है।
   - इसके पास में एक वेश्याओं का मंदिर भी है। (नेमीनाथ मंदिर)
   - यहाँ सूर्य मंदिर भी है।
6. **देलवाड़ा के जैन मंदिर**–आबू

   विमलशाही मंदिर–
   - चालुक्य शासक के सेनापति भीमशाह ने 1301 ई. में इसका निर्माण करवाया।
   - वर्ष 1213 ई. में **नेमीनाथ मंदिर** का निर्माण वास्तुपाल व तेजपाल ने करवाया, जो चालुक्य राजा धवल के मंत्री थे।
   - वास्तुपाल व तेजपाल की पत्नियों ने जिद्द करके एक मंदिर बनवाया, जिसे **देवरानी– जैठानी का मंदिर** भी कहते है।
   - जैन तीर्थंकर आदिनाथ की 108 मन की पीतल प्रतिमा स्थापित करके भीमाशाह ने मंदिर का निर्माण करवाया।
7. 7. **पुष्कर मंदिर/ब्रह्मा मंदिर** – पुष्कर (अजमेर)
   - गोकुल चंद पारीक ने इस मंदिर को बनवाया था।
   - पास में ही सावित्री माता का एक मंदिर है, जो भारत में एक ही है।
   - कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।
   - नोट :– ब्रह्माजी का दूसरा मंदिर आसोतरा (बालोतरा) में है। (सावित्री माता का मंदिर भी साथ में निर्मित है।) खेताराम जी महाराज ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।
   - पुष्कर को 'कोंकण तीर्थ' भी कहते है।
   - यहाँ रंगनाथ जी का मंदिर द्रविड़ शैली में बना हुआ है जिसकी शैव सम्प्रदाय पूजा करता है जो यहाँ की अनोखी परम्परा को दर्शाता है।
   - छींछ (बांसवाड़ा) में भी **किरड़** नदी के किनारे ब्रह्माजी का मंदिर है, जिसे जगमाल ने बनवाया था।
8. **एकलिंग–नाथ जी का मंदिर**– कैलाशपुरी (उदयपुर)
   - बप्पा रावल ने इसका निर्माण करवाया।
   - 8वीं शताब्दी में निर्मित।
   - मेवाड़ राजपरिवार के ईष्टदेव।
   - इसके समीप ही सहस्रबाहु (सास–बहू) का मंदिर भी अवस्थित है।

9. **नौ ग्रहों का मंदिर** – किशनगढ़ (अजमेर)
10. **सांवरिया जी का मंदिर** – मंडपिया (चित्तौड़गढ़)
11. हर्षद माता मंदिर – आभानेरी (दौसा)
12. नीलकण्ठ महादेव मंदिर – अलवर यहां गणेश जी की नृत्य अवस्था में प्रतिमा है।
13. कपिलमुनि का मंदिर– कोलायत (बीकानेर)
14. अंबिका माता का मंदिर – उदयपुर (राजस्थान का 'मिनी खजुराहो')
15. हर्षनाथ का मंदिर – सीकर
16. कणसुआ का मंदिर – कोटा
17. महामंदिर – जोधपुर
18. सिरे मंदिर – जालौर (यहाँ जालन्धर नाथ की तपोस्थली भी स्थित।)
19. शीतलेश्वर महादेव मंदिर– झालावाड़ (689 ई.पू. का मंदिर)
20. भाड़ाशाह जैन मंदिर – बीकानेर
21. सतवीस देवरी मंदिर – चित्तौड़गढ़ में 11वीं शताब्दी में निर्मित जैन मंदिर ।
22. कुम्भ स्वामी मंदिर – चित्तौड़गढ़
23. सारणेश्वर मंदिर – सिरोही
24. बाजना गणेश मंदिर – सिरोही
25. मुछाला महावीर का मंदिर– घाणेराव, (पाली)
26. खड़े गणेश जी का मंदिर– कोटा
27. भंडदेवरा मंदिर – अटरू (बांरा) ('हाड़ौती का खजुराहो')
28. फूलदेवरा (मामा–भांजा) – बांरा
29. सुंधा माता मंदिर – जालौर
30. तैंतीस करोड़ देवी–देवताओं की साल– मंडोर (जोधपुर शहर)
31. सोनीजी की नसियां – अजमेर (इसे 'लाल मंदिर' भी कहते हैं)

प्रमुख मस्जिदें

1. ईदगाह – जयपुर
2. मीठेशाह की दरगाह – गागरौण (झालावाड़)
3. मीरशाह अली की दरगाह – अजमेर
4. मल्लिक शाह की दरगाह – जालौर
5. गुलाब खां का मकबरा – जोधपुर
6. गुलाम कलन्दर – जोधपुर
7. गमता गाजी – जोधपुर
8. इकमिनार – जोधपुर
9. भूरे खां की मजार – मेहरानगढ़ (जोधपुर शहर)
10. काकाजी पीर की दरगाह – प्रतापगढ़
11. सैयद बादशाह – शिवगंज (सिरोही)
12. जामा मस्जिद – शाहबाद (बारां)
13. ऊषा मस्जिद – भरतपुर
14. मस्तान बाबा – सोजत (पाली), उदयपुर
15. ख्वाजा बादशाह खुदाबख्श– सादड़ी (पाली)
16. बीबी जरीना का मकबरा – धौलपुर
17. सदरूद्दीन की दरगाह – रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर)
18. नेहर खां की मीनार – कोटा
19. रजिया सुल्तान का मकबरा – टोंक
20. जामा मस्जिद – मालपुरा (टोंक)
21. अलाउद्दीन खिलजी मस्जिद– जालौर
22. गूलर कालूदान की मीनार– जोधपुर
23. नालीसर मस्जिद – सांभर (जयपुर ग्रामीण)
24. सैयद फखरूद्दीन की दरगाह गलियाकोट (डूंगरपुर)
25. कबीर शाह की दरगाह – करौली
26. ख्वाजा नजमुद्दीन शाह दरगाह– फतेहपुर (सीकर)
27. कमरूद्दीन शाह की दरगाह– झुंझुनूं
28. हमीमुद्दीन नागौरी – नागौर
29. दुल्लेशाह की दरगाह – पाली
30. तारकिन का उर्स – नागौर (कादरी सम्प्रदाय)
31. हजरत शक्कर बाबा (इन्हे विष्णु का अवतार माना जाता है) –झुंझुंनू
32. पंजाब शाह की दरगाह (एक मुसलमान फकीर की दरगाह) – अजमेर
33. मीरान साहब की दरगाह – अजमेर (घोड़े की मजार)

मेलें

➤ पशु मेलें :–

1. मल्लिनाथ पशु मेला – तिलवाड़ा (बालोतरा), चैत्र महीने में आयोजित।
2. तेजाजी पशु मेला – परबतसर (डीडवाना–कुचामन)
3. बलदेव पशु मेला – मेड़ता (नागौर)
4. बाबा रामदेव पशु मेला – मानासर (नागौर)
5. जसवन्त पशु मेला – भरतपुर
6. गोमती सागर पशु मेला – झालरापाटन (झालावाड़)
7. चन्द्रभागा पशु मेला – झालरापाटन (झालावाड़)
8. गोगामेड़ी पशु मेला – गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
9. पुष्कर मेला – पुष्कर (अजमेर)
10. महाशिवरात्रि पशु मेला – करौली
11. लुणियावास का पशु मेला– जयपुर ग्रामीण
12. सेवड़िया पशु मेला – रानीवाड़ा (सांचौर)
13. बसन्ती पशु मेला – रूपवास (भरतपुर)
14. बाली पशु मेला – बाली (पाली)
15. बजरंग पशु मेला – सिणधरी (बालोतरा)

➤ आदिवासियों के मेलें :–

1. **बेणेश्वर मेला**– नवाटापरा (डूंगरपुर)
    - आदिवासियों का कुंभ।
    - सोम–माही–जाखम के त्रिवेणी संगम पर।
    - माघ की शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक। (गाय के खुर की पूजा की जाती है।)
2. **घोटिया अम्बा**–बांसवाड़ा
    - चैत्र की अमावस्या से शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक।
    - भीलों का सबसे बड़ा मेला।
    - यहां अर्जुन के धनुष की पूजा होती है।
3. **सीताबाड़ी**–(बारां)
    - सहरिया जनजाति का मेला
    - ज्येष्ठ माह की अमावस्या
    - लव–कुश का जन्मस्थल।

4. **अन्जारी**–सिरोही
   - गरासियों का मेला।
   - वैशाख पूर्णिमा/भाद्रपद शुक्ल की एकादशी तक।
   - यहां मार्कण्डेश्वर (शिव) भगवान का मंदिर अवस्थित है।

➢अन्य मंदिर एवं मेलें :–

1. **गणेश मेला**– रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)
   - त्रिनेत्र गणेश जी (रणत भँवर)
   - गणेश चतुर्थी के दिन मेला लगता है।
2. **ऋषभदेव का मंदिर** – धुलेव (उदयपुर)
   - 'आदिनाथ जी' भी कहते है।
   - काले संगमरमर की मूर्ति से 'कालाजी' कहते है।
   - वैष्णव, श्वेताम्बर व दिगम्बर परम्परा से पूजा की जाती है।
   - धुलेव भील ने इस मंदिर की स्थापना की।
   - मंदिर के गुम्बद में घंटिया बजने की आवाज आती है।

3. दशहरा का मेला – कोटा
4. भर्तृहरि का मेला – अलवर
5. कल्याण जी का मेला – डिग्गी (टोंक)
6. कुंडालिनी माता का मेला – राशमी गाँव (चित्तौड़गढ़)
7. शिवाड़ घुश्मेश्वर मेला – शिवाड़ (सवाई माधोपुर)
8. मांगलियावास का मेला – मांगलियावास (ब्यावर)
9. मचकुण्ड का मेला(तीर्थों का भांजा)–मचकुण्ड (धौलपुर)
10. पाण्डुपोल मेला – अलवर
11. मेंहदीपुर बालाजी – दौसा
12. परशुराम महादेव – कुंभलगढ़–पाली (कार्स्ट टॉपोग्राफी के लिए प्रसिद्ध)
13. चनणी चेरी मेला – बीकानेर (देशनोक)
14. धनोप माता का मेला – शाहपुरा
15. विक्रमादित्य मेला – उदयपुर
16. राम रावण मेला – बड़ी सादड़ी (चित्तौड़)
17. सेवड़िया पशु मेला – रानीवाड़ा (सांचौर)
18. फूलडोल का मेला – शाहपुरा

19.मातृकुण्डिया मेला – हर्षनाथपुरा (चित्तौड़गढ़)
20.गौरी मेला – सिरोही
21.गंगा दशहरा मेला – कामां (डीग)
22.कजली तीज – बूँदी
23.बाबा रामदेव मेला – मसूरिया पहाड़ी (जोधपुर)
24.भोजन थाली मेला – कामां (डीग)
25.तीर्थराज मेला – धौलपुर
26.शहीद वृक्ष मेला – खेजड़ली (जोधपुर ग्रामीण)
27.अन्नकूट मेला – नाथद्वारा (राजसमंद)
28.मीरा महोत्सव – चित्तौडगढ़
29.विरात्रा माता का मेला – चौहटन (बाड़मेर)
30.सुंईया कपालेश्वर मेला – चौहटन (बाड़मेर)
31.गौतमेश्वर का मेला – अरणौद (प्रतापगढ़)
32.डोलची महोत्सव – दौसा
33.तीर्थों की नानी (देवयानी)– सांभर (जयपुर ग्रामीण)
34.लैला मजनूं का मेला – गंगानगर
35.गौतम जी का मेला – सिरोही
36.बसंत पंचमी का मेला – दौसा
37.जगदीश मेला – गोनेर (जयपुर)
38.सावित्री मेला – पुष्कर
39.विभीषण मेला – कैथून (कोटा) (यहां होली के दिन रावण का पुतला जलाया जाता है।)
40.तुरताई माता (त्रिपुर सुंदरी)– बांसवाड़ा
41.नाचना गणेश – अलवर
42.हेरम्ब गणपति – बीकानेर

- जूनागढ़ किले में स्थित।
- यहां शेर पर सवार गणेश जी की प्रतिमा है।

43.अर्बुदा देवी – आबू
44.लक्ष्मण मंदिर – भरतपुर
45.रावण का मंदिर – मंडोर (जोधपुर शहर)
46.ऊषा मंदिर – बयाना (भरतपुर)
47.भद्रकाली मंदिर – पल्लू (हनुमानगढ़)
48.कल्की महाराज – बड़ी चौपड़ (जयपुर)

49.मालेश्वर मेला – महारकलां गाँव (जयपुर)
50.पावापुरी जैन मंदिर – सिरोही
51.72 जिनालय – भीनमाल (जालौर)
52.खोड़ा गणेश – अजमेर
53.रोकड़िया गणेश – जैसलमेर
54.बुढ़ातीर्थ का सूर्य मंदिर – कोटा
55.शीतला माता मेला – शील डूंगरी ,चाकसू (जयपुर ग्रामीण)
56.श्री महावीर जी मेला – करौली (श्री महावीर जी)
57.बाण गंगा मेला – विराट नगर (कोटपुतली–बहरोड़)
58.चारभुजा नाथ (मीराबाई)मेला –मेड़ता सिटी (नागौर)
59.वीरपूरी मेला – मंडोर (जोधपुर)
60.चुंघी तीर्थ मेला – जैसलमेर
61.सवाई भोज मेला – आसींद (भीलवाड़ा)
62.कपिल धारा का मेला – सहरिया क्षेत्र (बारां)
63.चौथ माता का मेला – चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)
64. खाटूश्यामजी मेला – सीकर
65.महोदरी माता मेला – मोदरान (जालौर)
66.मनसा माता का मेला – सीकर
67.इंद्रगढ़/बीजासन माता मेला इंद्रगढ़ (बूँदी)
68.सैपऊ मेला – धौलपुर

➢ पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित मेलें :–

1. पतंग महोत्सव – जयपुर
2. ऊँट महोत्सव – बीकानेर
3. मरू महोत्सव – जैसलमेर
4. हाथी महोत्सव – जयपुर
5. एडवेंचर स्पोर्ट्स – कोटा, बूँदी
6. मत्स्य उत्सव – अलवर
7. मेवाड़ महोत्सव – उदयपुर
8. दशहरा महोत्सव – कोटा
9. वागड़ मेला – डूंगरपुर
10. शरद महोत्सव – आबू
11. बूँदी महोत्सव – बूँदी

12. कुंभलगढ़ शास्त्रीय उत्सव – कुंभलगढ़
13. आभानेरी उत्सव – दौसा
14. बेणेश्वर मेला – डूंगरपुर
15. महावीर मेला – करौली
16. चन्द्रभागा मेला – झालरापाटन (झालावाड़)
17. बैलून महोत्सव – बाड़मेर
18. थार महोत्सव – बाड़मेर
19. हिण्डोला महोत्सव – पुष्कर
20. शेखावाटी महोत्सव – सीकर, चुरू, झुंझुनु, नीम का थाना।

उर्स

1. ख्वाजा साहब का उर्सः– अजमेर
   - अवधि – रज्जब महीने में पहली से छठी रज्जब के बीच
   - भीलवाड़ा का गौरी परिवार ध्वजा/झण्डा लेकर जाता है।
2. गलियाकोट उर्सः– डूंगरपुर
   - दाऊदी बोहरा मुसलमानों का पर्व
   - फखरूद्दीन की दरगाह पर यह उर्स लगता है।
3. तारकिन का उर्स :– नागौर
   - शेख हमीदुद्दीन नागौरी की स्मृति में
   - तारकिन का दरवाजा यहीं पर स्थित है।
4. नरहड़ के पीरः–झुंझुनूं
   - हजरत शक्कर बाबा, जो **'बांगड़ के धनी'** नाम से प्रसिद्ध है।
   - कृष्ण जन्माष्टमी के दिन उर्स लगता है।
5. चोटीला पीर दुलेशाह – पाली
   - बांडी नदी के पास
6. मलिक शाह का उर्स :– – जालौर
7. मीठेशाह की दरगाह – सांभर (जयपुर ग्रामीण)
8. फखरूद्दीन चिश्ती – सरवाड़ (केकड़ी)
9. हिसामुद्दीन की दरगाह – सांभर (जयपुर ग्रामीण)
10. हजरत गट्टे वाले बाबा – जयपुर
11. सदरूद्दीन की दरगाह – रणथम्भौर

हवेलियाँ

➢ जैसलमेर (पाँच जैन भाइयों ने मिलकर 19वीं सदी में बनाई थी।)

1. पटवों की हवेली – जैसलमेरी पत्थर पर नक्काशी के लिए प्रसिद्ध।
2. नथमल की हवेली – 19वीं सदी में निर्मित
3. सालिम सिंह की हवेली – 38 झरोखें, 19वीं सदी में निर्मित
4. पोद्दारों की हवेली – मेहनसर (शराब के लिए प्रसिद्ध) सोने–चाँदी की नक्काशी के कारण सोने की दुकान कहते है।
5. गोयनका हवेली(सेठों की कोठी) – रामगढ़ (सीकर)
6. पौद्दारों की हवेली – नवलगढ़ (कांच पर सोने की मीनाकारी)
7. सुनहरी कोठी – टोंक (इब्राहीम अली खां द्वारा निर्मित)
8. राज महल – टोंक
9. मुबारक महल – टोंक, जयपुर।
10. उम्मेद भवन पैलेस – जोधपुर
11. एकथम्बा महल – जोधपुर
12. राईकाबाग पैलेस – जोधपुर
13. सूरसागर पैलेस – जोधपुर
14. अजीत भवन पैलेस – जोधपुर
15. सर्वोत्तम विलास(शीश महल) – जैसलमेर
16. बच्छावतों की हवेली – बीकानेर
17. रामपुरिया की हवेली – बीकानेर
18. कोठारी की हवेली – बीकानेर
19. सुराणों की हवेली – चुरू
20. रामविलास गोयनका – चुरू
21. सुख महल – बूँदी
22. रंग विलास – बूँदी
23. गुलाब महल – कोटा
24. अबली मीणी का महल – कोटा
25. अभेड़ा महल – कोटा
26. झाला हवेली – कोटा
27. जगत निवास – उदयपुर
28. जग मंदिर – उदयपुर
29. मोती महल – उदयपुर
30. सिटी पैलेस – उदयपुर

31. बागौर हवेली	–	उदयपुर (दुनिया की सबसे बड़ी पगड़ी)
32. जोगी महल	–	रणथम्भौर
33. डीग महल	–	डीग
34. सावनभादो महल	–	डीग
35. गोपाल महल	–	डीग
36. जूना महल	–	डूंगरपुर
37. बादल महल	–	डूंगरपुर
38. एक थंबिया महल	–	डूंगरपुर (गैब सागर के पास)
39. हवा बंगला	–	तिजारा (अलवर)

———————————————————————————